सरोजिनी नायडू

पद्मिनी सेनगुप्त

MT
923.254
N 143 S

भारतीय
साहित्यक

MT
923.254
N 143 S

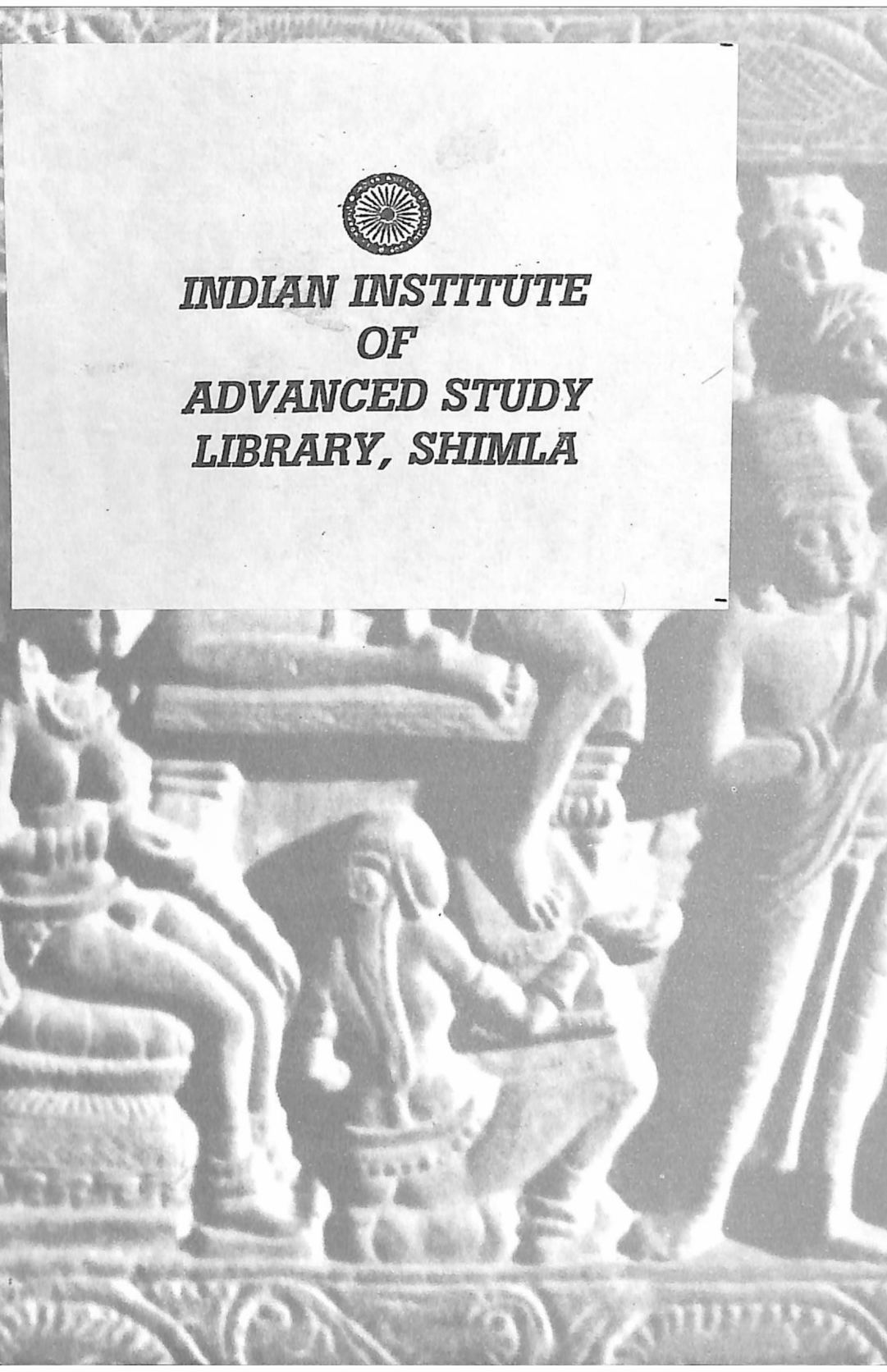

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

सरोजिनी नायडू

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूप मे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओहि दृश्यकेँ देल गेल अछि जाहि मे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक मायरानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचा मे एक गोट देवान जी बैसल छथि जे ओहि व्याख्या कें लिपिवद्ध कय रहल छथि। भारत मे लेखनकलाक ई प्राय: सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

सरोजिनी नायडू

लेखक
पद्मिनी सेनगुप्त

अनुवादक
मदनेश्वर मिश्र

साहित्य अकादेमी

Sarojini Naidu : Maithili translation by Madaneshwar Mishra of Padmini Sengupta's monograph in English. Sahitya Akademi, New De
SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

Library IIAS, Shimla
MT 923.254 N 143 S
00117145

© साहित्य अकादेमी

MT
923.254
N143

प्रथम संस्करण : 1988

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110001

क्षेत्रीय कार्यालय
ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता 700029
29, एलडाम्स रोड, तेनामपेट, मद्रास 600018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400014

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

Indian Institute of Advance
117145
9.12.04
SHIMLA

मुद्रक
रूपाभ प्रिंटर्स
दिल्ली 110032

क्रम

1.	मायावी वन	7
2.	कन्यावस्था	12
3.	अंग्रेजी परिप्रेक्ष्य	18
4.	गृह-प्रत्यावर्त्तन	21
5.	शब्द	24
6.	दि गोल्डन थ्रैशोल्ड	29
7.	भारत-कोकिला	34
8.	गोपालकृष्ण गोखले आ सरोजिनी नायडू	38
9.	महात्मा गाँधी सँ पहिल भेंट आ हुनक संग प्रारम्भिक कार्य	41
10.	दि ब्रोकन विंग	46
11.	स्वाधीनता संग्रामक जन्म	52
12.	पत्र आ मित्र	56
13.	संघर्षक वर्ष	63
14.	हास्य, रंग आ स्वातंत्र्य	67
15.	अन्तिम दिन	71
16.	इंडो-एंग्लियन कविता	74
17.	काव्य आ दर्शन	81
	सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची	97

S

F

1
मायावी-वन

स्वप्नक संसार सरोजिनी कें पूर्णरूपेण उत्तराधिकार मे भेटल छलनि जाहि मे विद्यमान छलथिन हुनक पिता, आ किछु सीमा धरि हुनक माय सेहो। 'हजारो वर्ष धरि हमर पूर्वज जंगल आ पहाड़ी खोहक प्रेमी, महान स्वप्नद्रष्टा, महान विद्वान आ महान तपस्वी रहलाह अछि। हमर पिता स्वयं स्वप्नद्रष्टा छथि, महान स्वप्न-द्रष्टा, महान व्यक्ति, जनिक जीवन भव्य असफलताक रहल अछि।'[1] आ सपनाक प्रकारहि सँ, ई मानैत जे हम 'एहन पदार्थ छी जेहन कि स्वप्न होइत अछि,' सरोजिनीनायडूक साहित्यिक उत्पादनक अध्ययन कें आँकल जा सकैत अछि। सरोजिनीनायडू कें एक गंभीर कवि, विचारक, दार्शनिक वनयबाक चेष्टा मे सम्भवतः वहुत अधिक मोसि वेरबाद कऽ देल गेल अछि, यद्यपि हुनक गीत सभमे ई सभ एतेक दूर धरिक रहस्यवाद सेहो दृष्टिगोचर अछि। किन्तु सरोजिनी क्षणजीवी छथि आ हुनक गीत ओतवे हल्लुक छनि जतवा कि सवारी लऽ जायवला कहारक भार (एही नामक हुनक कविता मे), ओतवे चपल सुन्दर जतबा कि 'एक फूल', 'एक पक्षी', 'एक हंसी', 'एक तारा', 'ज्वारक भहुँ पर एक किरण', 'एक अश्रु'।

कल्पनाक ई क्षेत्र आ रूपकमय आदर्श ओतवे सुन्दर अछि जतबा कि 'मिड-समर नाइट्स ड्रीम'क परी-जीव, काव वेब मॉथ आ मास्टर्ड सीड—हवाइ छोट, कोमल, रमणीय आ निस्सार। आओर सरोजिनीनायडू आनन्दक, संगहि दुःख आ उदासीक, एहि स्वप्न-जगत मे प्रायः फराक आ एकसरि ठाढ़ि छथि, किएक तँ, बहुत पहिने 1902 मे लिखल गेल एक गद्य-कविता आन कविता सभ कें छोड़ि कऽ अपन ई परी-संसार ओ राजनीति आ कांग्रेसक पूरा क्षेत्र मे जा कऽ वास्तव मे ककरहु सँ वाँटि नहि सकलीह। कल्पना आ सपनाक हुनक दोसर व्यक्तित्व हुनका स्वतंत्रता-संग्रामक सेनानी सभ मे एक भिन्न आकृतिक रूप मे उभारि कऽ रखने छलनि, यद्यपि ओ हुनके एक अभिन्न अंग छलनि, कारण जे सतत हुनका लोकनिक गंभीर श्वेतवस्त्र आ संयत गांधीवादी दर्शनक संग सरोजिनी उन्मुक्त, हँसी सँ परि-पूर्ण आ रंगीन छवि मे दमकैत रहैत छलीह। आ एहि कारणें हुनक प्रारम्भिक

1. दि गोल्डेन थ्रेशोल्ड, पृ० 14

कविता सभमे सँ एक छल 'सपनाक गीत' (दि सौंग ऑफ ए ड्रीम)—

एक बेर हम ठाढ़ि छलहुँ निशास्वप्न मे
असकरि मायावी वनक प्रकाश मे,
आत्मा धरि डूबल ताल फूल-सन स्वप्न मे,
गावऽवला पक्षी सभ छल सत्यक दूत,
चमकैत तारागण छल प्रेमक दूत,
बहैत झरना छल शान्तिक दूत,
ओहि मायावी वन मे, निद्राक ओहि देश मे।
निरन्त ओहि मायावी वनक ज्योत्स्ना मे
चीन्हल हम प्रेमक दूतक तरेगन कें
चकभाउर दैत आ चमकैत हमर
मृदुल यौवनक चारू दिस,
आ सत्यक दूतक गीत हम सुनलहुँ,
झुकलहुँ हम मिझाब' अपन कामना कें
शान्तिदूतक झहरैत झरना पर
ओहि मायावी वन मे निद्राक ओहि देश मे।

ई कविता तहिया लिखल गेल छल जखन सरोजिनी 17 वर्षक किशोरीक रूप मे गिर्टन कॉलेज, कैंब्रिज मे पढ़ि रहलि छलीह आ सभ सँ पहिने 1901 मे 'दि इंडियन लेडीज मैगजीन' मे प्रकाशित भेल छल।

सरोजिनी द्वारा चित्रित सभसँ अधिक सुन्दर स्वप्नचित्र मे सँ एक, आश्चर्य अछि, कविता मे नहि छल, किन्तु ओ छल 1902 मे लिखित 'नीलांवुना' नामक एक गद्य कल्पना चित्र (फंतासी)। एहि गद्य-कविता मे (लगभग हुनक सव कविता मे चित्रित) रूमानियत आ आदर्शवादहिक तरीकाक आ जाहिमे सरोजिनी अपन कन्यावस्थाक एतबा दिन, एतबा धरि जे अपन विवाहित अस्तित्वक प्रारम्भिक दिन सेहो बितौने छलीह, ओहि वातावरणक अनुसरण कयल गेल अछि। कतेक नीक होइत यदि सरोजिनी गद्य-कविता लिखबा मे अधिक लागल रहितथि, कारण हुनक शब्द, जे हुनक कविता मे तुक आ तालक धारा सभमे बहैत छल, एतऽ हुनक द्विपदीय रम-टम सँ मुक्त अछि जे कखनहुँ-कखनहुँ एकदम उवा देबऽवला होइत अछि। 'नीलांबुजा' मे सरोजिनी अपन समय आ तरीका कऽ अंग्रेजी-काव्य-लेखनक नियम आ विनियम सभक वन्धन सँ मुक्त छलीह।

'नीलांबुजा' 1902 मे 'दि इंडियन लेडीज मैगजीन' मे प्रकाशित भेल छल, आ बहुत कम लोक ओकर विषय मे सुनने छथि, यद्यपि ओ नटेशन द्वारा प्रकाशित संकलित भाषण सभक पुस्तक मे छपल अछि।[1] एतय प्रकट अछि हुनक एकाकी

1. स्पीचेज एण्ड राइटिंग्ज आफ सरोजिनी नायडू, पृ० 1.

आत्मा जे एक किशोरीक रूप मे एकसर भ्रमण करैत अछि 'एक झीलक कछेर मे जे बालुकामय पहाड़ी सभक औंठी मे चकमक पाथरक समान चमकैत अछि। एतय ओ घूमैत छथि स्वप्निल लय मे, जलक ताल मे ताल मिलबैत।

ई आकृति अद्‌भुत मोहक अछि आ एहि मे एक किशोरीक हृदय मे नुकायल रंग आ सौंदर्य केँ ओकर आदर्शक संग बुनि देल गेल अछि। ओ तारागण केँ एकटक देखैत छथि 'एतबा दूर धरि जे ओ ओकर अप्राप्य तेज सँ प्राप्त कऽ लैत छथि अपन बहुरूपी उत्साहक उठैत शिक्षा आ (मानवताक हेतु, ज्ञानक हेतु, जीवनक हेतु आ सर्वाधिक विश्वक अनन्त सौंदर्यक हेतु) सहस्र हृदय कामना'। ई छलीह स्वयं सरोजिनीनायडू, 23 वर्षक तरुणी, 4 वर्ष पूर्व विवाहिता, गर्वपूर्णा माए, सुखी पत्नी, इंगलैंड आ इटलीक जीवनक विदेशी सुरभि सँ सम्पन्न, गान आ सेवा कर-बाक हेतु घूमिकऽ अपन घर आयलि। एतय छल एक कली—फूल बनिकऽ प्रस्फुटित होइत, ओकर दल स्वर्णिम सूर्यक उष्ण प्रकाशक लेल अपन सुकोमल सौंदर्य केँ अनावृत करैत।

'एकर उपरान्त ओ चिर-रहस्यक छाया मे विचरण कयलनि; तीव्र बौद्धिक क्षुधा आ कहियो नहि तृप्त होबऽबला आत्मिक प्यास सँ पीड़ित भऽ सतत सौंदर्यक उन्माद केँ तकैत हवा आ पानिक स्वर मे, पहाड़क ऊपर प्रभातक आकाशीय आभा मे, सभ जाति आ समयक शिक्षक, स्वप्नद्रष्टा, कवि आ पैगम्बर लोकनिक व्यक्त आत्मा मे।'

'नीलांबुजा' सरोजिनीक ओहि समयक कल्पना-चित्र थिक जाहि समय मे ओ एहि संसार मे पयर राखि रहलि छलीह। हैदराबादक हुनक जीवनक पृष्ठभूमि, हुनक समाजक रजतीय, स्वर्णिम आ इन्द्रधनुषी रंग जे महल आ आरामदायक घरैया देवाल सभक भीतर रहैत अछि, बाहर मे चमकैत सूर्य, पक्षीसभक गीत, प्रस्फुटित पुष्पोद्यानक बैगनी, गुलाबी आ नारंगी रंग, महत्त्वाकांक्षाक आलोक एवं सक्रिय रचनात्मक कार्यक्रम एहि कल्पना-चित्र मे उद्वेलित अछि। सरोजिनीक गद्य-कविता मे एक बालिका एकसर एहि संसार मे भ्रमण करैत अछि। ओ सुन्दर अछि, ओकर भावनामय गोल मुँह मे ओकर सुन्दर आँखि चमकि रहल छैक, भीतरक 'गीतमयी आत्मा' केँ प्रकट करैत। बैगनी आ स्वर्णिम वस्त्र पहिरने औंठिया कारी केश मे कामनाक फूल लगौने, नीलांबुजा झीलक कछेर छोड़ि दैत अछि आ सतत हरियर जंगल झाड़ आ अनारक वृक्ष सभक' एक बगीचाक रस्ता पर चलि दैत अछि। कक्ष धूमिल दृष्टिगोचर होइत अछि, 'चाननक तेल सँ भरल तामक दीपक बाती सन प्रकाशमान। बालिका ठाढ़ि होइत अछि आ ओकर मुँहक 'आच्छादित अत्मिकता' सँ प्रसन्नताक एक मुस्कान प्रस्फुटित होइत अछि। ओ कन्याक एक दलकेँ उछलकूद करैत देखैत अछि, जे 'स्वर्णिम, बैगनी आ हरियर वस्त्र' पहिरने छल, किछु स्नेहिल कुहेसक वस्त्र पर काढ़ि रहल छल, अपन दाँत सँ मसाला चिब-

वैत, आ प्रेमक कोनो गीत गावि रहलि छलि।

प्राचीन राजा-महाराजक भारत मे सर्वसामान्य स्त्रीगणव परिचित संसारक एक विशिष्ट चित्र एतय खीचल गेल अछि। आगन्तुकक स्वागत कयल जाइत अछि, किन्तु एक क्षण पड़वा सभक खेलवाक हेतु अटकि कऽ ओ एक गली सँ ऊपर अपन कोठली मे जाइत अछि। वैगनी आ स्वर्णिम पर्दा सँ आच्छादित खिड़की कें ओ खोलैत अछि आ अन्हार मे देखैत एकाकी ठाढ़ि रहैत अछि। ओकर नेनपनक स्मृति ओकर अनुसरण करैत छैक आ अपन भावना कें व्यक्त करवाक हेतु ओ कानऽ लगैत अछि। शिक्षक, स्वप्नद्रष्टा, कवि आ पैगम्बर लोकनिक आत्मा ओकरा उद्वेलित कऽ दैत छैक। स्वाभाविक संसार मे रहितहुँ, ओहि बालिका मे एहि दीप्त अपरिवर्तनीय संसारक तीव्रगामी क्षण आ मानवीय भाग्यक अत्यन्त सामान्य घटनासभक अन्तमार्ग मे नुकायल शाश्वतक भेदनक एक असहिष्णु इच्छा सतत बनल रहैत छैक।

हुनक बाल्यावस्था, यद्यपि उत्साहमयी छलनि, आब अदृश्य भऽ गेल अछि आ आब एतय एक गीतमयी स्त्री ठाढ़ि अछि प्रेम आ जीवनक अभिलाषा करैत अगम्य स्वप्न आ सूक्ष्म एव अनिर्वचनीय विचारक संग पूर्ण सहानुभूतिक हेतु कविक आत्माक अविलम्ब आ अंतिम आवश्यकता सँ सम्मिश्र।

नीलांबुजा नीचा मे सुनैत अछि हँसी—संगीत आ क्रीड़ा। ओ ठाढ़ि रहैत अछि आ मुस्किआइत अछि, एक मुस्कान जे अपन भीतर अदृश्य नीरक गम्भीर उदासी कें नुकौने अछि। ओ व्यतीत होइत वर्ष सभक गणना बिसरि गेलि अछि आ सौंदर्यक हेतु अपन आत्माक उन्मादक एकांत मे अदृश्य भऽ गेलि अछि आ स्वप्न देखऽबाली, अमरताक हेतु एतेक अतृप्त, जे कोमल इच्छा सँ पूर्ण एक स्त्री छलि, अपन आनन्दक अपूरित उत्तराधिकारक हेतु ही फोड़िकऽ कानलि।

तँ एतऽ ठाढ़ि छलीह तरुणी कवयित्री राजनीतिज्ञ, की तकैत? आ की हुनका भेटलनि अपन अपूरित उत्तराधिकार, ओहि जीवन मे जे आब हुनका बितयबाक छलनि? आश्चर्य अछि, कारण सरोजिनीक भीतर सदिखन नुकायल रहैत छलनि आनन्द, रंग, गीतक प्रचुरता आ अपूर्ण स्वप्नक भाषण सभक बीच एक दु ख काटल आ नष्ट कयल गेल मायावी बनक, स्वतंत्रताक आह्वान करऽबला भारतक आ स्वयं हुनक आत्माक —

दुर्बल छल हमर हाथ, मुदा
सेवा छल हमर सुकोमल,
अन्हार मे हम देखलहुँ सपना
तोहर छटाक प्रभातक,
चुपचाप हम चेष्टा कऽ रहल छलहुँ,
कल्हुका उल्लासक हेतु,

आ पटौने छलहुँ तोहर बीया केँ
अपन दु:खक कूप सँ,
हम श्रम कलहुँ, समृद्ध वनयवाक हेतु
तोहर जगबाक प्रफुल्ल क्षण केँ
समाप्त भेल हमर रतिजगा,
देखू, उदित होइत अछि दिनक प्रकाश

आ, सदा हम पाछाँ देखैत छी अमरत्व केँ अतृप्तरूप सँ ताकऽवाली ओहि एकाकी बालिका केँ जे जे प्राप्त कऽ लेलक ओकरा संभवत: अनजानहि मे अपन गीत आ सेवाक दिन मे, कारण ई ओएह समय छलैक जखन ओ अपन जीवनक स्वर्णिम देहरि पर ठाढ़ि भेलि छलीह।

2

कन्यावस्था

सरोजिनीक जन्म 13 फरवरी, 1879 कें भेलनि। आठ सन्तति मे ओ सभ सँ जेठ छलीह।

सरोजिनीक दोसर प्रकाशित पद्य-पुस्तक 'वर्ड ऑफ टाइम'क प्रस्तावना मे एड मंड गॉस कहैत छथि, 'ओ अपन जीवन दुःखक निकट संगति मे बितौलनि—आ ई हुनक प्रसिद्ध जीवनक दोसर पक्ष थिकनि—ओ सुख कें जनैत छलीह आ सांत्वनाक निराशा कें सेहो। अत्यधिक दुःख देखलाक कारणहि संभवतः हुनक चमेलीक माला विरल भऽ गेल छलनि आ हुनक आकाशक नीलाभ धूमिल भऽ गेल छलनि।' हुनक दुःखक प्रारम्भ हुनक माइक मृत्युक संग भेलनि। बाद मे हुनका अनेक त्रासदीक अनुभूति भेलनि आ आश्चर्य अछि जे एहि घटना सभक कारणें सरोजिनी आर अधिक दबंग कविता किएक नहि लिखलनि। उदाहरणार्थ, गोखलेक मृत्यु पर एतेक महान व्यक्ति आ अपन एतेक पक्का दोस्तक मृत्यु पर ओ लिखलनि मात्र एक अत्यधिक उद्धृत आ प्रशंसित मुदा हल्लुकसन कविता। प्रायः ओ अपन सन्तान पर, अपन बहिन पर, अपन मित्र पर लिखैत रहैत छलीह, किन्तु ई रचना सभ एक गीतात्मक निरर्थकताक पर्दा मे आच्छादित अछि, प्रायः ओहि नाम कें बुझबैत अथवा हुनका लोकनिक जीवनक रोमांसीकरण करैत।

सरोजिनी पूर्वी बंगालक एक गाम ब्रह्मनगर सँ आयल अघोरनाथ चट्टोपाध्याय अथवा चटर्जी, जेना कि ओ पहिने अपना कें कहैत छलाह, आ वरदा सुन्दरीक प्रिय बेटी छलीह। अघोरनाथ अपन पूर्वजक विद्वत्ता कें तँ प्रदर्शित करतहि छलाह, ओ प्रकृतप्रेमी आ अरण्यमुनि सेहो छलाह। यद्यपि सरोजिनी कहैत छथि जे हुनक पिताक जीवन एक भव्य असफलता छलनि, तथापि हुनक जीवनक उपलब्धि छोटछिन नहि छलनि। संस्कृत पर हुनका अधिकार छलनि एवं पूर्व आ पश्चिमक साहित्यक ओ विस्तृत अध्ययन कयने छलाह। ओ अंग्रेजी आ हिब्रू, फ्रेंच, जर्मन आ रूसी सेहो जनैत छलाह। हुनक जीवनोद्देश्य प्रतिदिन किछु नव सिखब छलनि। कलकत्ता मे ओ केशवसेनक संपर्क मे अयलाह आ ब्रह्म-समाजक नवविधान सम्प्रदाय मे सम्मिलित भऽ गेलाह। हुनक पत्नी केशवचन्द्र सेन द्वारा स्थापित भारत-आश्रमक प्रथम आश्रमक प्रथम आश्रमवासी मे एक छलीह।

अघोरनाथक प्रिय विषय रसायनशास्त्र छलनि, जाहि कारणेँ ओ वाद मे एक एहन उत्साही रसायनशास्त्री बनि गेलाह जे अपन मित्रगणक सँग हैदराबादक एक पुरान व्यायामशाला मे अधिक राति धरि कड़ाहक ऊपर झुकल क्षुद्र धातु सभ केँ स्वर्ण मे परिवर्तित करबाक सूत्र तकवा मे लागल रहैत छलाह। सरोजिनी लिखैत छथि, 'आह प्रिय, राति-दिन प्रयोग चलि रहल अछि आ प्रत्येक नव सूत्र केँ आवऽ-बलाक भाइक समान स्वागत कयल जाइत अछि। किन्तु ई रसायन (जे कि अहाँ-जनैत छी) एक कविक सौन्दर्य, अनन्त सौन्दर्यक प्रति इच्छाक केवल भौतिक प्रति-पक्ष अछि। स्वर्ण-निर्माता आ पद्य-निर्माता एहन युगल निर्माता छथि जे रहस्यक प्रति संसारक नुकायल उत्कंठा केँ झुलवैत छथि—आ हमर पिता मे जे जिज्ञासाक प्रतिभा छनि सैह हमरा मे सौन्दर्यक इच्छा अछि।'[1]

हैदरावादमे स्थायीरूपसँ रहबाक पहिने अघोरनाथ रसायनशास्त्र पढ़बाक हेतु छात्रवृत्ति प्राप्त कऽ विदेश गेल छलाह। ओ 1877 मे एडिनवरा विश्व-विद्यालय सँ डॉक्टर ऑफ साइन्सक उपाधि प्राप्त कयलनि। जखन ओ भारत घूरि कऽ अयलाह, तखन 1878 मे हैदरावाद (दक्षिण) मे हुनका आमन्त्रित कयल गेलनि जतऽ ओ अंग्रेजी माध्यमक एक पाठशाला स्थापित कयलनि। एकर उपरांत अघोराथ हैदरावाद कॉलेजक स्थापना कयलनि, जकर ओ प्राचार्य नियुक्त कयल गेलाह। ई वादमे निजाम कॉलेज बनल। शीघ्रे अपन पत्नीक सहायता सँ अघोरनाथ स्त्री-शिक्षा मे रुचि लेवऽ लगलाह। अन्य महाविद्यालयक सहयोग सँ उस्मानिया विश्वविद्यालयक एक भागक रूप मे कन्या महाविद्यालयक उद्घाटन कयल गेल। अघोरनाथ जाति-प्रथा आ बाल-विवाहक विरोधी छलाह। हुनक सेवाक हैदराबाद मे अनेक वर्ष धरि प्रशंसा भेल, किन्तु ओ राजनीति मे पड़ि गेलाह आ सेवा सँ निलम्बित कऽ देल गेलाह आ थोड़ेक समयक लेल हैदराबाद सँ बाहर पठा देल गेलाह। किछु वर्षक बाद ओ निजाम कॉलेजक प्राचार्यक रूप मे पुनः बजाओल गेलाह। ओ हैदरावाद मे 'ब्रिटिश भारत विशेष विवाह कानून'क जारी कयल जयबाक हेतु उत्तरदायी छलाह। 1885 सँ ओ भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस मे ओकर प्रारम्भहि सँ सक्रिय भाग लेलनि।

हैदराबाद मे सरोजिनीक बाल्यावस्थाक घर केँ हुनक कवि भाइ एहि शब्द मे वर्णन करैत छथि, "ज्ञान आ संस्कृतिक संग्रहालय, सम्मिश्र उद्भूत लोक सभ सँ भरल चिड़ियाघर जाहिमे किछु रहस्यवाद दिस सेहो झुकल छलाह किएक तँ हमर घर सभक हेतु एक समान खुजल रहैत छल।[2]

हुनक घर मे प्रचुर अतिथि-सत्कार होइत छलैक। सभक लेल सदैव प्रस्तुत

1. दि गोल्डेन प्रेस होल्ड, पृ० 15.
2. लाइफ एण्ड माइसेल्फ, ले० हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, पृ० 15.

एहि उदार स्वागतक एक झलक हमरा 'दि गोल्डेन थ्रेशहोल्ड'क प्रस्तावना मे आर्थर साइमन्स कें सरोजिनी द्वारा लिखल गेल पत्र मे देखाइ पड़ैत अछि। सरोजिनी अपन प्रतिभू कें अपन घर मे निमंत्रित करैत छथि, "आउ आ हमर संग अनुभव करू हमर ई मनोरम वसन्त प्रभात, स्वर्णिम आ नील आकाशक ई विपुल आभा, रौदक प्रति आसक्त ई लाल कुसुमावलि अपन उद्धत मधुरता सँ सुस्त पवन कें धक्का देवऽ वला नीम, चम्पक आ शिरोषक ई उन्मादक परिमल, खोंता वनयवाक काल जीवनक मुखर मस्ती सँ मदमातल स्वर्णिम, नील आ सजातीय छातीवला हजारक हजार छोट पक्षी। सब किछु ऊष्म, रोमांचक आ कामनामय अछि, जीवन आ प्रेमक लेल उल्लसित याचनापूर्ण अपन इच्छा मे उत्साही आ लज्जा-हीन। आ की तों जनैत छह जे ई लाल-लाल कुसुमावलीक कली-कली हमर हृदयक रक्त सँ निर्मित अछि, ई छोट-छोट फुदकैत पक्षी संगीतक रूप मे अवतरित हमर आत्मा थिक, ई वोझिल परिमल वायवीय अर्क मे मिलल हमर भावना थिक। ई जाज्वल्यमान नील आ स्वर्णिम गगन 'स्वयं हम'ही छी, हमर ओ भाग जे निरन्तर हठपूर्वक, आ हँऽ, बहुत-किछु जानि-वुझि कऽ ओहि दोसर भाग पर सतत विजयी होइत अछि जे नाड़ी आ तन्तु सभक एक पदार्थ थिक जे दुःख सहैत अछि आ चीत्कार करैत अछि आ जे सम्भवतः काल्हि मरि जाय अथवा वीस वर्षक वाद।[1] हुनक पत्र आ कविता मे पीड़ाक ई आक्रोश सदैव विद्यमान रहैत अछि आ हमरा लोकनि मे सँ जे हुनका व्यक्तिगत रूपें जनैत छलथिन ओ लोकनि हुनक ओहि निरन्तर अस्वस्थता सँ सेहो परिचित छलाह जाहि पर ओ 70 वर्षक वयस तक दबाव आ तनाव भरल उत्साहमय जीवन जीवाक हेतु वीरतापूर्वक विजय प्राप्त कऽ लेने छलीह। किन्तु एतय तैयो हुनक पत्रक उत्कृष्ट गद्य बहुत कम देखल जाइत अछि। कतेक सुन्दर होइत यदि सरोजिनी गद्य मे आओरो अधिक लिखने रहितथि।

आर्थर साइमन्स कें लिखल गेल ई पत्र हुनक विवाहित घर 'स्वर्णिम देहरि' सँ छल जाहि पर हुनक पद्यक पहिल पोथीक नाम राखल गेल छल। हुनक वाल्याव-स्थाक घर ओतवे रूमानी, रंगीन आ गीत सभ सँ भरल छल। हुनक माता वरद-सुन्दरी क भनसाघर सदैव भोजन सँ परिपूर्ण रहैत छलनि आ पाहुन कें परसल जाइत छल देशी विदेशी हिन्दू, मुस्लिम आ पश्चिम व्यंजन एवं सुमधुर मिठाइ सेहो। कोनो आश्चर्य नहि जे सरोजिनी कें स्वयं सेहो भोजन वायव पसिन्न होइन आ बादक वर्ष मे तँ ओ भोजन-प्रिय भऽगेलि छलीह।

सरोजिनीक माता-पिता परस्पर बंगला बजैत रहथि, किन्तु बच्चा सभ सँ हिन्दुस्तानी मे आ नोकर सभ सँ तेलगु मे गप्प करैत रहथि। कहल जाइत अछि जे

1. दि गोल्डेन थ्रेशोल्ड, पृ० 16-18.

वरदासुन्दरी कें अपेक भाषाक ज्ञान छलिन। सरोजिनी कें अंग्रेजी सिखबाक तावत-धरि हुनक पिता जोर नहि देलथिन। ओ वास्तव मे एक सम्पूर्ण दिन सरोजिनी कें एक कोठली मे वन्द राखि कऽ दण्ड देलथिन, किएक तँ सरोजिनी अंग्रेजी मे वाजव अस्वीकार कऽ देने रहथिन। एहन वूझि पड़ैत अछि जे सरोजिनी एहि दण्डक स्वागते कयलनि, किएकतँ ओहि दिन सँ ओ पिताक आज्ञा मानवाक निश्चय कऽ लेलेनि आ मात्र अंग्रेजी वजवाक नहि अपितु एहि भाषा मे वस्तुतः निपुण वनवाक सेहो निश्चय कयलनि। ओ अपन एहि निश्चयक एतवा हठपूर्वक पालन कयलनि जे अंग्रेजीक अतिरिक्त अन्य कोनो भाषा मे नहि लिखलनि, यद्धपि उर्दू सेहो ओ धाराप्रवाह लिखि सकैत छलीह। सव मिलाकऽ कोनो भारतीय भाषाक अपेक्षा अंग्रेजी मे वाजव अधिक सरल भेल होयतनि किएक तँ चट्टोपाध्याय परिवार वंगाली छल जे तेलगु प्रदेश मे वसि गेल छल, आ जेनाकि हमरालोकनि देखि चुकल छी, घरमे चारि भाषा बाजल जाइत छलनि, माता-पिताक वीच वंगला, किन्तु वच्चासभक संग अंग्रेजी, नोकरक संग तेलगु आ उर्दू मिलल-जुलल हिन्दुस्तानी आ अभ्यागत सभ सँ अंग्रेजी। एहि कालक अपन जीवनक विषय मे सरोजिनीक टिप्पणी एहि प्रकारक छनि 'हम नहि सोचैत छी जे नेनपन मे हमरा कविता लिखवाक कोनो विशेष इच्छा छल, यद्धपि हमर स्वभाव वहुत कल्पनाशील आ स्वप्नदर्शी छल। हमर पिताक आँखिक सोझाँ मे होवऽ वला हमर शिक्षा-दीक्षा गम्भीर आ वैज्ञानिक ढंगक छल। हुनक निश्चय छलनि जे हम एक महान गणितज्ञ वनी अथवा वैज्ञानिक, किन्तु हमर कवि-वृत्ति वलवती सिद्ध भेल जे हम हुनका सँ आ अपन माए सँ सेहो(जे अपन युवावस्था मे किछु मधुर वंगला गीत लिखने छलीह)उत्तराधिकार मे प्राप्त कयने छलहुँ। एक दिन जखन हम एगारह वर्षक छलहुँ, हम वीजगणितक एक प्रश्न पर वेचैन भऽ रहल छलहुँ, ओ ठीक नहि वनि रहल छल, किन्तु ओकर स्थान मे हठात हमरा एक सम्पूर्ण कविता स्फुरित भऽ गेल। हम ओकरा लिखि लेलहुँ। ओहीदिन सँ हमर 'कवि जीवन' प्रारम्भ भऽ गेल। तेरह वर्षक अवस्था मे हम एक पैघ कविता लिखलहुँ 'एलेडी ऑफ दि लेक'—छओ दिनमे तेरह सए पंक्ति। तेरह वर्षक अवस्था मे हम दू हजार पंक्तिक एक नाटक लिखलहुँ—एक सम्पूर्ण भावनामय कृति। जकरा हम विना सोचने-विचारने क्षणोन्मादहि मे लिखव प्रारम्भ कऽ देने रही, मात्र अपन चिकित्सकक उपेक्षाक लेल, जे कहने रहथि जे हम बहुत दुःखित छी आ हमरा पुस्तक छुवोक नहि चाही। लगभग एही समय मे हमर स्वास्थ्य स्थायीरूप सँ खराप भऽ गेल आ हमर नियमित अध्ययन वन्द भऽ जयवाक कारणें हम अतृप्त रूप सँ पढ़िते रहैत छलहुँ। हमर अनुमान अछि जे हमर पढ़वाक अधिकतम भाग चौदह आ सोलह वर्षक वीच मे छल। हम एक उपन्यास लिखलहुँ, दैनन्दिनीक अनेक भाग लिखलहुँ, हम ओहि समय मे अपन विषय मे गम्भीरता सँ सोचैत छलहुँ।"[1]

1. दि० गोल्डेन थ्रेशोल्ड, पृ० 11-12.

जखन सरोजिनी कन्ये छलीह, तखनहि अघोरनाथ हुनक अप्रतिम प्रतिभा कें चिह्नि लेने रहथिन आ निश्चय कयने छलाह जे सरोजिनी कें कमसँ कम मैट्रिक उत्तीर्ण होयबाक चाही। हैंदरावाद मे वालिका सभक पढ़वाक लेल कोनो उपयुक्त विद्यालय नहि छलैक, तैं सरोजिनी कें मद्रास पठा देल गेलनि, जतऽ ओ मात्र वारह वर्षक उमेर मे मैट्रिकक परीक्षा मे उत्तीर्णता प्राप्त कयलनि। आ सम्पूर्ण मद्रास विश्वविद्यालय मे प्रथम श्रेणी मे प्रथम भेलीह जकर अन्तर्गत दक्षिणक सम्पूर्ण पठार अवैत छल। संगहि 1891 मे परीक्षो सरल नहि होइत छलैक आ वालिका सभ सँ ई आशो नहि कयल जाइत छलैक जे ओ लोकनि उच्च कक्षा मे पढ़तीह। हुनक सफलताक कारणें सम्पूर्ण भारत मे आश्चर्य आ यशोगान भेल, किन्तु हुनका प्रसिद्धि पसिन्न नहि छलनि आ ओ आर्थर साइमन लग स्वीकार कयने छथि, "ईमानदारी सँ कहीतँ हम प्रसन्न नहि छलहुँ, एहि प्रकारक वात हमर भीतर मे नहि छल।"

सरोजिनीक जीवन अनेक पहेली सभमेसँ एक ईहो अछि जे एकर बाद ओ कहियो कोनो शैक्षणिक परीक्षा मे उतीर्णता प्राप्त नहि कयलनि आ ने कोनो मे वैसवाक चेष्टे कयलनि। जाहि प्रकारें ओ दीर्घ वर्णात्मक कविता, उपन्यास आ दैनन्दिनी लिखव वन्द कऽ देलनि ओही तरहें ओ सभ परीक्षाक उपेक्षो कऽ देलनि आ अपन जीवन कें गीत लिखवाक दिस मोड़ि देलनि, आ वादमे अपना कें पूर्ण रूपेण राजनीतिक कार्य-कलाप मे डुवा देलनि, कविता पर्यन्त कें छोड़ि कऽ। यद्यपि बाद मे ओ किंग्स कॉलेज, लन्दन आ गिर्टन, कैम्ब्रिज मे अध्ययन कयलनि, ओ विना कोनो उपाधि लेने अठारह वर्षक उमेर मे भारतवर्ष घुरि अयलीह। किन्तु मात्र शैक्षणिक उपाधिक अपेक्षा हुनक अंग्रेजी साहित्यक अध्ययन आ लन्दनक साहित्य-संसार सँ परिचय अपेक्षाकृत अधिक मूल्यवान छल। वादमे ओ रॉयल लिटररी सोसाइटीक सदस्या वनि गेलीह आ अनेक विश्वविद्यालय हुनका डॉक्टरेटक उपाधि प्रदान कयलक।

मैट्रिक परीक्षा मे उत्तीर्णताक वाद सरोजिनी धुरिकऽ हैदरावाद चल अयलीह आ 1892 सँ 1895 धरि अपन माता-पिताक संग रहलीह। ई सरोजिनीक जीवनक सर्वाधिक सुखी वर्ष मे सेहो छल, जतय हुनक माता-पिता एवं सव प्रकारक धर्म, जाति आ वर्ग सभक विस्तारशील मित्र-मंडली द्वारा प्रदत्त सुखी घरैया जीवन मे ओ उल्लसित रहैत छलीह आ अधिक सँ अधिक पढ़वा मे लागलि रहैत छलीह।

सरोजिनी एहि काल मे पहिल-पहिल कविता लिखवाक साहस कयलनि, यद्यपि ओ एगारह वर्षक उमेरहि मे 'ए लेडी ऑफ दि लेक' लिखि चुकलि छलीह। वाद मे प्रकाशित हुनक सभ कविता संक्षिप्त आ गीतात्मक छलनि। ओ कहियो वैले लिखवाक साहस नहि कयलनि आ ने सॉनेट लिखवाक हेतु अपन शैली मे परिवर्तन कयलनि।

तेरहसँ पन्द्रह वर्षक उमेर धरि ओ अनेक कविता लिखलनि जे हुनक पिता द्वारा स्वयं प्रकाशित कयल गेलनि।[1] ई हुनक शीघ्र विकसित आ परिपक्व मस्तिष्क केँ प्रकट करैत अछि, किन्तु अछि धरि हल्लुक।

1896 मे सरोजिनी केँ विलेंत पठाओल गेलनि। डॉ० नायडू द्वारा हुनक प्रति प्रेमक उद्घोषणा हुनकासँ विवाह करबाक विधिवत प्रस्ताव हड़बड़ी मे उठाओल गेल एहि डेगक मुख्य कारण प्रतीत होइत अछि। डॉ० नायडूक संग विवाहक अनुमति नहि देबाक पाछाँ सरोजिनीक माता-पिताक दू उद्देश्य रहल होयतनि। पहिल, सरोजिनीक बहुत कम उमेर, ओ मात्र सोलह वर्षक छलीह आ अघोरनाथ बालविवाहक विरुद्ध छलाह। संगहि, डॉ० नायडू विधुर छलाह आ हुनका सँ दस वर्ष जेठ छलाह। दोसर, सरोजिनीक विवाहेच्छु निम्न जातिक छलाह, किन्तु एकर प्राय: अधिके महत्त्व रहल हेतेक, किएक तँ 1898 में इंगलैंड सँ घूरिकऽ अयलापर हुनका ओहि व्यक्ति सँ विवाह करबाक अनुमति दऽ देल गेलनि जकरा अघोरनाथ तीन वर्ष पूर्व अस्वीकृत कऽ देने रहथिन। हुनका लोकनि केँ; जे ई घोषणा कथने रहथि जे अघोरनाथ अन्तर्जातीय विवाहक विरोधी छथि, ई स्मरण रखबाक चाही जे अघोरनाथ स्वयं उत्साही सुधारक छलाह आ जाति-उन्मूलनक लेल कार्य करैत छलाह। निजाम सरोजिनी केँ 'वेलकम' स्कालरशिप देने रहथिन आ ओ उच्च अध्ययनक हेतु सितम्बर, 1895 में जहाज सँ विदेश प्रस्थान कऽ गेलीह।

1. पोएम्स ले० कुमारी एस० चट्टोपाध्याय, 3 अक्तूबर 1896, प्रकाशक, अघोरनाथ चट्टोपाध्याय।

3
अंग्रेजी परिप्रेक्ष्य

1895 में प्राय: सोड़ह वर्षक एक भारतीय बालिका अंगेजी परिप्रेक्ष्य मे हठात् प्रवेश कयलक आ संयमित विक्टोरियन वैसक सभ मे तहलका मचा देलक। अंग्रेज द्वारा शासित विशाल भारतीय उपमहाद्वीप मे सुषुप्त प्रतिभा आ सौन्दर्यक प्रति ओ ने मात्र संस्कारपालित संकीर्ण द्वीपवासी कें वरन परम्पराप्रिय सामान्य अंग्रेज काव्य समालोचक कें सेहो हठात सचेत कऽ देलक।

जखन सरोजिनीक एडमन्ड गॉस सँ परिचय कराओल गोलनि, तखन ओ सोड़ह वर्षक बालिका छलीह, जेनाकि गॉस वाद मे कहलनि किन्तु ओ ओहि उमेरक सामान्य अंग्रेज बालिका सँ भिन्न छलीह, जहिना पर्वतीय घाटीक कुमुदिनी अथवा कमल कैक्टस सँ भिन्ने बुझना जाइत अछि। हुनक मानसिक परिपक्वता अद्‌भुत छलनि, हुनक अध्ययन आश्चर्यजनक छलनि आ संसारक संग हुनक परिचय पश्चिमी बालिका सँ कतेको अधिक छलनि।[1]

आर्थर साइमन्स, एक दोसर समकालीन अंग्रेज विद्वान आ सरोजिनीक प्रतिभू, कहैत छथि जे सरोजिनी अपन पहिल कविता हुनका 1896 मे सुनौलथिन। "ओ हमरा लोकनिक बीच मे वैसलीह, ओ हमरा लोकनि कें परखलनि आ बहुत कम लोक बुझलनि जे हुनक मुंहक पाछाँ की भऽ रहल अछि, हुनके शब्द मे एक सचेतक आत्माक सदृश।" हुनक ऑखि दू गहींड़ झीलक समान छलनि आ लगैत छल जे अहां गहींड़ सँ, गहींड़ मे डूबल जा रहल छी।[2]

एडमन्ड गॉस आगाँ लिखैत छथि "एक आकस्मिक घटनावश जे विस्मृत भऽ चुकल अछि, किन्तु जे घटना हमरा लेल भाग्यशाली छल। लन्दन मे अयवाक वाद शीघ्रे सरोजिनीक हमर घर मे परिचय कराओल गेलनि आ ओ शीघ्रे हमर स्वागतयोग्य घनिष्ठ अभ्यागत मे सँ एक भऽ गेलीह। ई स्वाभाविके छल जे एतवा उत्साही आ एतवा सहानुभूतिमयी ओ अपन गृहपति सँ ई बात अधिक दिन धरि नहि नुका कें राखि सकली जे ओ प्रचुर पद्य लिखैत छलीह आ अंग्रेजी मे लिखैत छलीह।"

1. दि बर्ड ऑफ टाइम, पृ० 3-4.
2. दि गोल्डेन थ्रेशोल्ड, पृ० 23.

अंग्रेजी साहित्यिक परिप्रेक्ष्यक एक प्रमुख पात्र सँ मिलनक अवसर देबाक लेल सरोजिनीक सहपाठी मे सँ एक एहि युवा भारतीय कवयित्रीक परिचय एडमन्ड गॉस सँ करौलथिन । आ तकर बाद सँ, सरोजिनी कें जे प्रोत्साहन भेटल छलनि ओ एहन छल जे ओ अपन जीवनक समक्ष आबऽ बला बीस वर्ष ने खाली कविता लिखबाक हेतु, अपितु अंग्रेजिये मे कविता लिखबाक हेतु समर्पित कऽ देलनि— अंग्रेजी बाजऽ बला संसार कें विदेशी पूर्वी संसारक परिचय देबाक हेतु । इएह हुनक उत्साही मिशन प्रतीत होइत अछि ।

सरोजिनी पहिने लन्दनक किंग्स कॉलेज मे अध्ययन प्रारम्भ कयलनि । पश्चात् ओ गिर्टन, कैम्ब्रिज चल गेलीह मुदा एहन बुझना जाइत अछि जे कोनो प्रकारक शैक्षणिक योग्यता प्राप्त करबाक ओ अपन इच्छा छोड़ि देने रहथि । कैम्ब्रिज मे ओ सामान्यतः व्याख्यान कक्षसँ दूर रहैत छलीह, आ समीपस्थ रमणीय वन मे स्वप्न देखबामें अपन समय बितबैत छलीह, आ एहिठाम ओ अंग्रेजी ग्राम्य प्रदेशक विषय मे लिखय लगलीह आ ओहि सुन्दर देशक फूल आ पक्षीक विषय मे सेहो, जाहि विषयक हेतु एडमन्ड गॉस हुनक प्रायः निर्दयतापूर्वक आलोचना कयने रहथिन ।

एहि बातक पश्चाताप होइत अछि जे राष्ट्रीयता आ कोनो प्रकारक कृत्रिम हौआ सँ रहित प्रारम्भिक कविता-शैली कें हुनक आलोचक सभ दिन लेल स्तब्ध कऽ देलथिन आ हुनका सँ ई कहल गेलनि ज ओ मात्र भरतीये वस्तुक विषय मे लिखथि, एहि सँ हुनक वृत्ति पर एतबा शीघ्रे रोक लागि गेलनि । एतय ओ भावात्मक छलीह । जखन ओ भरतीय गीत लिखब प्रारम्भ कयलनि तखन विषयात्मक भऽ गेलीह । किन्तु अठारह सए छियानबहि मे सरोजिनी अपना कें कविताक हेतु समर्पित कऽ देने रहथि आ ओ एहि बात कें बुझितो रहथि आ एहि कारणे आर्थर साइमन्सक सोझाँ में महान कवयित्री होयब अस्वीकार कयलहु पर ओ अपन एहि कविताक नाम 'कविक प्रेमगीत' (दि पोएट्स लव सौंग) सोचि-विचारिकऽ रखलनि । ओ एतेक उत्साही भऽ गेलीह आ हुनक आत्मा गीतक पाँखिपर एतबा तीव्रता सँ उड़ऽ लागल जे हुनक स्वास्थ्य खराब होबऽ लगलनि । हवा आ लहरिक संग तीव्रतापूर्वक आगाँ बढ़ैत ओ ओहि प्रेमपूर्ण स्वप्न कें जरा देलनि जे मरि चुकल छल, आ कैम्ब्रिजक आच्छादित वनमें ओ 'संसारक युद्ध आ भीड़क झगड़ा सभ' सँ बचबाक चेष्टा क्यलनि । ओ आब निश्चय कऽ लेने छलीह जे 'जीवनक दुःख पर गीतक दुःखसँ विजय प्राप्त करतीह' आ रहस्यवादी सन ओ अपन वियोग आ कष्ट कें अपन गीतक प्रोज्ज्वल आनन्द मे बिसरबा मे समर्थ भऽ गेल छलीह ।

इंगलैंड मे सरोजिनी चुस्त रेशमी-वस्त्र पहिरैत छलीह । ओ छोटि छलीह आ पीठपर झुलैत' वेश खुजल रखैत छलीह, साइमन्स कहैत छा जे हुनका बालिका बुझल जा सकैत छल । ओ बहुत कम बजैत छलीह, मंद-स्वरमे आ मंद संगीतक समान आ ओ जतऽ कतहु रहथि, एकाकी बुझि पड़ैत छलीह । हुनक अतिशय

भावुक स्वभाव ओहि समय मे अत्यधिक तनाव सँ पीड़ित बुझना जाइत छल आ 'ई सुझाओल गेल जे हुनका किछु नाड़ी-शैथिल्य भऽ गेल होयतनि। हुनका स्विटजरलैंड पठा देल गेलनि। आ ओतऽ सँ इटली पठा देल गेलनि। ई देश हुनका चमत्कृत कऽ देलक आ ओ पुछि देलथिन, 'ई देश मनुष्यक थिकैक आ कि देवताक' 'ई पृथ्वी थिकैक कि स्वर्ग ? हुनक रंगीन, रुमानी, मायावी गद्य फेर सँ पूर्णरूपेण उभरि अयलनि। "ई इटली प्रभात आ दिनक प्रकाशक स्वर्ण सँ वनल अछि, तारा-गणक स्वर्ण सँ वनल अछि, आ आव ई मइक मायावी मास में सुगन्धित अन्धकार मे भगजगोनीक स्वर्ण बिचित्र मोहक लय में नाचि रहल अछि —'पंक्तिवद्ध-स्वर्ण' हम हुनक परीनृत्यक सूक्ष्म संगीत कें पकड़ऽ चाहैत छी आ तकर लय सँ एक कविता लिखऽ चाहैत छी ओकर आकस्मिक गतिक वेंगवान अनियमित उन्मुक्त चमकक समान। को ओ विस्मयकारी नहि होयतैक ? एक अनहार राति मे हम एक उद्यान मे ठाढ़ि छलहुँ आ हमर केश मे भगजोगिनी छल जेनाकि अन्धकारक जाली में उड़ैत चंचल तरेगन फंसि गेल हो। एहि सँ हमरा मे एक विचित्र भावना उत्पन्न भेल जे हम मनुष्य नहि, परी छी।" "शव्द आ शव्द, ओ ओहि मे कतवा उल्लसित रहैत छलीह। ओ इटलीक सौन्दर्य कें मद्य जकाँ पालनि। 'भगवान' ई सभ कतबा सुन्दर छैक आ हमरा कतवा प्रसन्नता अछि जे हम आइ जीवित छी।"

एहितरहें सत्रह वर्ष ई वालिका वौद्धिक दिनक पैघ छोट कें भावातिरेक मे पिवैत यूरोप मे रहलीह। एक विचित्र आ आकर्षक वालिका जे दोसराक कठिनता कें धैर्यपूर्वक सुनैत छलीह, किन्तु स्वयं एक एहन मानसिक आवेग सँ दुखी बुझना जाइत छलीह जे हुनका एतवा विक्षुव्ध कऽ देलकनि जे हुनक स्वास्थ्य विछड़ि गेलनि। किन्तु हुनका लग छलनि "मनक एक भावनामयी शान्ति जकर समक्ष निम्न, क्षुद्र आ अस्थायी प्रत्येक वस्तु मे आगि पकड़ि लैत छलैक आ धुआँ दऽ कऽ जरि जाइत छलैक। साइमन्स कहैत छथि, "एहि ज्ञानक संग-संग जे हुनक उमेरक अथवा जातिक उमेरक छल, एक एहनो वस्तु छल जकरा हम उत्तेजनाक पीड़ा सँ कम आओर किछु नहि कहि सकैत छी।" दुःख आ आनन्द हुनका भावनाक दोसर संसार मे उड़ा कऽ लऽ जाइत छलनि आ ओ मित्रक वक्र भहुँ देखिये कऽ दुखी भऽ जाइत छलीह। वास्तव मे ओ छलीह एक रहस्यमयी रूमानी वालिका, जे ने मात्र विदेश मे उत्तेजना पसारि देलनि, अपितु अपन पाछाँ पूर्वक जादू सँ दीप्त एक पौरस्त्य कन्याक स्थायी प्रिय चित्र सेहो छोड़लनि। ई जादू वहुत किछु हुनक शव्दक जाल मे भरल छल जे हुनक कविता मे सर्वदा सुन्दर शव्दावलीक अजस्र धारा मे फुटि गेल छल। किएकतँ लोकक वीच मे ओ वहुत कम वजैत छलीह. आ एहि वात सँ, हुनक स्वयं अप्रतिम सौन्दर्य आ अभिलाषाक गुप्त संसारक संग अंग्रेजी परिप्रेक्ष्य कें मंत्र मुग्ध कऽ देलक जे अंग्रेजी लेखनक इतिहास मे हुनका समय सँ पूर्वे विख्यात कऽ देलकनि।

4
गृह-प्रत्यावर्तन

इंगलैंड सरोजिनी पर बहुत गहीर छाप छोड़लक आ हुनक एहि चुनाव कें पक्का कऽ देलक जे हुनका अपन कविताक लेल अंगरेजिये कें माध्यम बनयबाक चाही। ओहि समयक आलोचक आ विद्वान सँ हुनका जे प्रोत्साहन भेटलनि आ पश्चिम मे भारत कें बुझयबाक लेल ओ सरोजिनी मे जे प्रेरणा भरि देने रहथिन ओ आव पक्का महत्वाकांक्षा बनि गेलनि। एडमन्ड गॉस हुनका मिथ्या अंगरेज नहि बनबाक परामर्श व्यर्थ मे नहि देलथिन। अंगरेजी भाषा आ पश्चिमक काव्य-शास्त्र पर अधिकार पौलहु पर हुनका विलेंत आ ओकर ग्राम्य-प्रदेशक विषय मे नहि लिखबाक छलनि, जे हुनक भारतीय दृष्टिक हेतु विदेशी बुझल जयबाक चाहैत छल। ओ कहैत छथि, "सरोजिनी जे पद्य हमरा सुपर्द कयने छलीह ओ रचना मे प्रावीण्य पूर्ण छल, व्याकरण मे शुद्ध छल आ भावना मे निर्दोष छल, मुदा ओहि मे पूर्ण रूप सँ व्यक्तित्वविहीन होयबाक दोष छल ओ भाव आ विम्ब मे पश्चिमी छल, ओ टेनीसन आ शेलीक स्मृति पर आधारित छल, हम अनिश्चित सन छी जे ओहि मे इसाइ परित्यागक वातावरणक झलक तक नहि छलैक। हम ओकरा निराशापूर्वक राखि देल, ई मात्र प्रतिशोधक लेल खौंझावऽ बला पक्षीक चहक छल।"[1] तखन ओ अपन छात्रा कें अपन प्रसिद्ध निर्णय देलथिन आ हुनका रॉविन आ स्काइलार्कक विषय मे लिखबा सँ मना कऽ देलथिन एवं 'एंग्लो-सेक्सन पृष्ठभूमि मे एंग्लो-सेक्सन भावनाक वासी' कें छोड़बाक लेल कहलथिन आ ई निर्देश देलथिन जे कहथु भारतक हृदयक झाँखी आ प्रमुख प्राचीन धर्मक तद्देशीय भावक प्रामाणिक सूक्ष्म विश्लेषण आ ओ रहस्वादी सूचना जे पूर्वक आत्मा कें ओहि समयक पूर्वहि हिला देने छलैक, जखन यूरोप ई सपना देखवे प्रारम्भ कयने छल जे आत्माक सेहो अस्तित्व छैक।

इंगलैंडक विषय मे एक भारतीय द्वारा लिखल गेला पर एडमन्ड गॉस एतेक घोल किएक करैत छलाह? की ओहि समय मे हुनक देशक अनेक लोक, एडबिन अर्नल्ड, मिडोज टेलर आ दोसर केओ भारतक विषय मे नहि लिखैत छलाह? एक

1. दि बर्ड ऑफ टाइम, पृ० 4

117145
9.12.04
SHIMLA

कविक लेल ई सम्भव नहि छैक जे ओ पूर्णरूपेण राष्ट्रीय होथि, आओर किछु नहि। से संसारक विचार आ गतिविधि केँ विषय-वस्तुक भाग बनबहि पड़ैत छैक। भरिसक एहि लेल हुनक कविता सभ हल्लुक अछि किएक तँ हुनक मंच पर मात्र भारते नहि, अपितु स्त्रीगणक एक सीमित संसार छनि, जाहि मे बीच-बीच मे लोक-संगीत आ वृद्ध किंवा गोखले अथवा गांधीसन महान पुरुष लोकनि पर लिखल गेल कवता सभ दऽ देल गेल छैक। मुदा घर आपस अयलाक बाद पश्चिमक हेतु भारत केँ, विशेषरूपेँ अपन हैदराबादक हिन्दू-मुस्लिम संसार केँ, बुझयबा मे ओ एतेक तल्लीन भऽ गेलीह जे बुझना जाइत अछि जे ओ अपन आँखि प्रत्येक दोसर वस्तुक हेतु मुनि लेलनि। हुनक बादक राष्ट्रीय पद्य सेहो हल्लुक छल यद्यपि ओ वास्तविक जीवन मे गांधीवादी स्वतंत्रता-संग्रामक त्रासदी आ दुःख मे डूबल छल। स्त्री-जागरणक हेतु हुनक आह्वान आ हुनक किछु आन पद्य ने तँ गम्भीर अछि आ ने वस्तुतः मर्मस्पर्शी, अपन शब्दक रमणीयता केँ छोड़ि। जीवनक दुःख केँ गीतक दुःख सँ जीबाक हुनक दर्शन वास्तव मे विश्वसनीय नहि छल, किएक तँ ओ कहियो मीराबाइ अथवा अब्दलक गम्भीरता धरि पहुंचि कऽ ओहि भक्तिक स्पर्श नहि कयलनि। टिकुलिक समान एक फूल सँ दोसर फूल पर उड़ैत ओ यदा-कदा रस-पान कयलनि अपन गीत सभ मे जाहि मे ओ ठीक ओहि प्रकारक संसार केँ बुझौलनि जाहि प्रकारक पश्चिम कल्पना कयने छल। विदेशी पूर्वी रोमांसक एक संसार।

जखन सितम्बर 1898 मे सरोजिनी घर आपस अयलीह, तखन हुनक प्रथम काज छलनि अपन प्रिय व्यक्ति सँ विवाह करब, जनिका ओ विगत तीन वर्ष सँ चाहैत छलीह। हुनक विवाह सँ भारत मे अनेक सुधारक आधारशिला पड़ल किएक तँ ई अन्तर्जातीय आ अन्तःप्रान्तीय छल आ ई एहन अनेक प्राचीन निषेधाज्ञा केँ शिथिल करबा मे सहायता देलक जे एखन धरि एहि उपमहाद्वीपक स्वच्छन्द जीवनक कंठ मोकिकऽ रखने छल। विशेष विवाह कानून (1872 क कानून 3) आब उपयोग मे आयल। दूनू पक्ष केँ ई अस्वीकार करय पड़लनि जे ओ कोनो धर्मक छथि—यथा हिन्दू, सिख, ईसाइ, मुसलमान अथवा जैन। ई विवाह मद्रास मे 2 दिसम्बर 1898 केँ सम्पन्न भेल आ एक भारतीय समाचार-पत्र में निम्न-लिखित रुचिकर सूचना प्रकाशित भेल—"एक सुरुचि संस्कार सम्पन्न ब्रह्म महिला श्रीमती राममोहनराय वधूक बहिनपा बनलीह आ एहि अवसरक गम्भीरता केँ सौन्दर्य आ शालीनमय कऽ देलनि। श्री एस० सोमसुन्दरम पिल्लइ, बी० ए० द्वारा कयल गेल एक प्रार्थनाक संग समारोह प्रारम्भ भेल, आ विहित संस्कार पूरा कयल गेलाक बाद राव बहादुर बीर नायडू गुरु एहि पवित्र अवसर पर पुरोहितक कार्य कयलनि। पुरोहित द्वारा जीवनक उत्तरदायित्वक संबंध मे हर्षित युगल केँ आदेश देबाक बाद डा० अघोरनाथ कन्यादान कयलनि आ दूनू केँ विधिवत् पवित्र विवाहक बन्धन मे बान्हि देलथिन, विवाह श्री एफ० डी० बर्ड, मद्रास नगरक विवाह

पंजीयकक उपस्थिति मे सम्पन्न भेल। दम्पती कें ओहि कालक प्रमुख दक्षिण भारतीय समाज-सुधारक पंडित वीरशलिंगम पुन्तलु गुरुक आशीर्वाद प्राप्त भेलनि।"

सरोजिनी अब तरुण रूमानी वधूक रूप मे हैदराबाद मे सुखपूर्वक वसि गेलीह आ 1901 मे हुनक प्रथम नेना जयसूर्यक जन्म भेलनि आ तकर बाद आगिला तीन वर्ष मे पद्मजा, रणधीर आ लीलामणिक। सरोजिनीक घर संसार प्रत्येक भागक मित्रक लेल प्रचुर अतिथि-सत्कारक कारणें प्रसिद्ध छल आ एतय ओ अपन नेना-सभक हँसी आ अपन जीवन कें समृद्ध बनबऽवला अगाध प्रेमक बीच विवाहित जीवनक आरम्भक किछु वर्ष बितओलनि। हुनक अनेक आरम्भिक कविता हुनक जीवनक एहि अवस्था कें निरूपित करैत अछि जखन ओ अपन घर आ अपन नेना सभ तथा अपन प्रिय नगर हैदराबाद पर गीत लिखलनि।

ओ आर्थर साइमन्स कें लिखलनि, "हम अपना कें सामान्य आ दोसराक समान हल्लुक-फल्लुक रहब सिखा देने छी। सभ केओ सोचैत अछि जे हम कतेक नीक आ प्रसन्न छी, एतेक 'बहादुर', सभ सामान्य वस्तु हमरा आराम दैत अछि। हमर माय बुझैत छथि हमरा मात्र एक शांत बालिका। हमहुँ पल-प्रतिपल जीवन वितयबाक सूक्ष्म-दर्शन सीखि लेने छी। हँऽ ई एक सूक्ष्म दर्शन थिक, यद्यपि ई योग-वादी सिद्धान्त प्रतीत होइत अछि, खाउ, पीबू आ मस्त रहू, किएक तँ काल्हि तँ मरबाक अछिए। किन्तु संगहि हुनका मे किछु दर्द सँ भरल वस्तु सेहो छलनि, निश्चय हुनक रोग आ कष्टक कारण, जकरा ओ लिखैत छथि, "हम एहन कतेक अवधि बितौने छी जखन हम मृत्यु सँ संघर्ष कयने छी आ एहि वाक्यक अर्थ कें एहि पूर्ण रूप सँ बुझलहुँ जे ओ आब हमरा लेल मात्र वाक्यालंकार नहि, अपितु अक्षरशः सत्य अछि। भऽ सकैत अछि जे काल्हि हम मरि जाइ। कठिनतापूर्वक दुइये मास बीतल जखन हम कब्र सँ आपस आयलि छी, की हँसैत-हंसबैत प्रसन्न रहबाक अतिरिक्त आओर किछु श्रेयस्कर अछि? सम्भवतः जीवन आ हमर स्वभाव जे कोनो वस्तु हमरा देने अछि ताहि मे हम हँसीक देन कें मूल्य सँ इतर बुझैत छी।"

तैयो ओ मात्र घरौआपन सँ संतुष्ट नहि भेलीह, किएक तँ लगातार जल्दी-जल्दी अधिकाधिक कविता ओ लिखलनि जे हुनक समकालीन बहिनपा श्रीमती कमला सत्थियनाधन द्वारा 1901 में प्रारंभ 'द इन्डियन लेडीज मैगजीन' नामक प्रसिद्ध पत्रिका मे प्रकाशित भेल। एहि छोट लोकप्रिय पत्रिकाक पृष्ठ द्वारा आ अपन ओहि पद्यक सौन्दर्य द्वारा, जे ने मात्र भारत मे अपितु सभ अंग्रेजीभाषी देश मे प्रशंसित भऽ रहल छल, सरोजिनी शीघ्रे विख्यात कवयित्री बनि गेलीह जे हुनका कविताक प्रथम पुस्तक 'द गोल्डेन थ्रेशोल्ड' बना देलकनि।

5

शब्द

सरोजिनीक मंत्र-मुग्ध अधर सँ फूलक झरनासन शब्द बहैत छल। ओ ओकर जादू मे रहैत छलीह आ ओ सभ लोक जे सरोजिनीक पद्य कें सुनैत छलाह अथवा पढ़ैत छलाह, तकर संगीतमय ध्वनि सँ रोमांचित भऽ जाइत छलाह। ई मानव किछुओ असामान्य नहि अछि जे ई शब्दावली अंग्रेजी मे छल, हुंनक बाल्यावस्थाक घरक तीन भारतीय भाषा सभ मे कोनो एक मे नहि।

सरोजिनी अंग्रेजिए किएक विछलनि, यदि केओ चाहय तँ ईहो पूछि सकैत अछि जे सरोजिनी कविते किएक लिखलनि। आ ओ अपन कथन कें एतेक सुन्दर शब्द सभमे लपेटिए कें किएक प्रस्तुत कयलनि? ओ सुनऽबला कें शब्दक ऊपर अपन विशिष्ट अधिकार सँ चमत्कृत कऽ दैत छलथिन, आ बुझैत छलीह जे ओ गीतक रचना लेल अपना कें समर्पित कऽ चुकल छथि, जेनाकि ओ स्वयं घोषणा कयने छलीह। ई हुनक 'मीशन' छल, आ ओ गओलनि—

पुरोहित, धर्मगुरुक लेल
हुनका लोकनिक सिद्धान्तक आनन्द,
राजा आ सेनानी लोकनिक लेल
वीरकर्मीक यशोगान,
शान्ति, विजितक लेल,
आ आशा बलवानक हेतु
हमरा लेल तँ, हमर स्वामी।
उल्लासे हो गीतक।[1]

आ ई उल्लास सरोजिनीक लेल, अंगरेजिये मे व्यक्त भेल।

अपन स्वयंकेर मातृभाषा मे कयल गेल लेखनहिक सर्वदा उचित मूल्यांकन करऽ बला साहित्यक विदेशी प्रतिभू आ भारतीय पंडित सभक संकीर्ण दृष्टिकोण अवास्तविक आ समये नष्ट करब प्रतीत होइत अछि। भारतीय समीक्षक निश्चित रूपें एहि अपराधक दोषी छथि, सम्भवतः एहू कारणें जे हुनका लोकनि लग नीक

1. दि बर्ड ऑफ टाइम, पृ० 103

अथवा खराप रचनाक मूल्यांकन करबालेल दोसर सामग्रीक अभाव छनि। आधुनिक भारतक ओ कवि मे सँ एक जे अंग्रेजी मे लिखलनि अछि—आ जकरा हम एक "इन्डो एंग्लियन' लेखकक लोकप्रिय लोकप्रिय 'लेविल' देवा सँ अस्वीकार करैत छी—कमलादास भारतीय द्वारा अंग्रेजी मे लिखवाक विरोध करऽवला सभक प्रति प्रतिरोध मे ई आक्रोश व्यक्त कयने छथि।

'हम भारतीय छी, श्याम-रंग, जन्मलहुँ मलावार मे, आ वजैत छी तीन भाषा, लिखैत छी दू मे, एक मे देखैत छी सपना। अंग्रेजी मे नहि लिखू, ओं वजलाह अंग्रेजी अहाँक मातृभाषा नहि थिक। हमरा एकसर किएक नहि छोड़ि दैत छी, समालोचकगण, मित्रगण, अभ्यागत भाइ-वहिन लोकनि, अहाँ लोकनि मे सँ प्रत्येक व्यक्ति किएक नहि वाजऽ दैत छी हमरा कोनो भाषा, जकरा हम पसिन्न करी?"

हँऽ, समालोचक सरोजिनी कें एकसर किएक नहि छोड़ि दैत छथिन, ओ तरु-दत्तक समान, समयक कसौटी पर जाँचल जा चुकल छथि, आ ई हुनक प्रथम श्रेणीक लेखिका होयबाक निश्चित संकेत अछि। यदि केओ चाहय तँ पूछि सकैत अछि जे डायलन टॉमस वेल्श मे किएक नहि लिखलनि, वा जेम्स जॉयस अपन आयरिश भाषा मे, कोन कारणें वेस्ट इन्डियन नैपाल, रूसी नोवोकोंव, पोलिश कानराड, चीनी लिनयू ताँग, हंगेरियन कोएस्टलर आ अंग्रेजीक कैकटा प्रेमी स्वयं कें ब्यक्त करबाक हेतु एहि 'लोकभाषा' कें बिछलनि, वास्तव मे एक लेखक ओहि भाषा मे वाजि सकैत अछि जाहि सँ ओ सर्वाधिक परिचित अछि। केओ श्री अरविन्द घोष सँ एकमत भऽ सकैत अछि जखन ओ ओहि समालोचकक बोध पर जोर देबाक अधिक महत्त्व नहि देलथिन जे अपन मातृभाषा कें छोड़ि अंग्रेजी मे लिखएबला भारतीय पर दोषारोपण कयने छलथिन, "की हुनक बोध एतेक अधिक महत्त्व रखैत अछि?" हमहुँ हुनका सँ ओहि तरहें आ ओतबे जिम्मेदारी सँ पूछि सकैत छियनि जे कोन कारणें हुनके सदृश पश्चिमी लोक अध्यात्मवाद अथवा योग-सन भारतीय वस्तुक अभ्यास करैत छथि, अपन पार्लियामेन्ट, कारखाना आओर बहुत किछु छोड़ि कऽ।"

यद्यपि सरोजिनीक अभिब्यक्तिक माध्यम इंगलिश भाषा छलनि, हुनक बिम्बावली पूर्णतः भारतीय छलनि। ओ निश्चय कऽ लेने छलीह जे ओ अंग्रेजी फूल आ पक्षीक विषय मे भविष्य मे किछु नहि लिखतीह आ ने अपन ऊपर ई दोष लेती जे ओ अंग्रेजी बिम्बावलीक प्रयोग करैत छथि, अथवा शैली आ कीट्सक नकल करबाक चेष्टा करैत छथि। हुनक सोझाँ मे हुनक अपन सम्पन्न देश छलनि जकर विशाल आ प्राचीन संस्कृति एवं परम्परा, जकर विविध जीवन आ जकर गुप्त द्वार खोलबाक छल एवं कोश देखबाक आ परखबाक छल। पारम्परिक ज्ञान आ पूर्वी रीति-रेवाजक दोसर कोन स्वर्गक सरोजिनी इच्छा कऽ सकैत छलीह, आ एहि लेल ओ अपन पूर्णतः भारतीय बिम्बावलीक संग लिखब प्रारम्भ कयलनि। ओ अपन

भारतीय दृश्य आ उत्तराधिकारहि मे आनन्दित रहय लगलीह। हुनक सभ विषय भारतीय छनि जाहि प्रकारेँ हुनक रूपक आ उपमा, यद्यपि यदा-कदा ओ फारसी आ इस्लाम सँ सेहो पैंच नेने छथि! हुनक विषयवस्तु घरौआ आ ग्रामीण छलनि आ ओ अपन बहुतरास तर्ज ओहि लोकगीत पर आधारित कयलनि जकरा ओ मल्लाह, जोलहा आ फसिल काटयबला सभ सँ सुनने छलीह। एहि गीत सभक लय हुनका परम आनन्द मे अन्तरित कऽ दैत छलनि जे मात्र एक्के उदाहरण सँ देखल जा सकैत अछि—

भ्रमणशील गायक,
(ओकरे एक तर्ज मे लिखल)
जतऽ बजबैत अछि पवनक स्वर हमर भ्रमणशील पयर केँ
गुंजायमान जंगल आ गुंजायमान सड़क होइत
लऽ कऽ वीणा सर्वदा अपन हाथ मे गबैत हम घुमैत छी,
सभलोक छथि हमर सम्बन्धी आ सम्पूर्ण जगत हमर अपन अछि।[1]

केओ कल्पना कऽ सकैत अछि जे अपन प्रारम्भिक वर्ष मे ओ जतऽ रहलीह ओहि शीशमहलक खिड़की सँ सरोजिनी माथ बाहर कऽ हुलकि रहल छथि आ नीचाँ सँ जायबला गायक केँ सुनि रहल छथि—अथवा पुनः अपन गाड़ी रोकि रहल छथि आ एहि सोझ-साझ लोक सँ गप्प कऽ रहल छथि। मंदिरक घंटी, मूजीक पुकार, पुजेगरी आ सभ धर्मक पुरोहित लोकनिक पूजा सँ ओ रोमांचित भऽ जाइत छलीह आ सतत एकताक सपना देखए लगैत छलीह—जकरा लेल ओ व्यग्र अभिलाषा रखैत छलीह।

धर्म मे भिन्नता किएक होयबाक चाही—किएक नहि सम्पूर्ण मानव जाति पूजक सभ रूपक हेतु गंभीर श्रद्धापूर्वक एक भऽ जाइत अछि, हम ई बात बेर-बेर सुनैत छी :

सान्ध्य प्रार्थनाक हेतु आह्वान—

अल्लाह हो अकबर, अल्लाह हो अकबर।
मस्जिद आ मीनार सँ मुल्ला बजा रहल छथि,
करू अपन पूजा, हे इस्लामक प्रतिनिधि,
तेजी सँ पसरि रहल अछि सूर्यास्तक छाहरि,
अल्लाह ओ अकबर। अल्लाह हो अकबर।

एव मेरिया। एव मेरिया।
श्रद्धानत पादरी छथि वेदी पर गाबि रहल,

1. दि गोल्डेन थ्रेशोल्ड, पृ० 28

कुमारिक वेटा कें पूजऽ वला
करू याचना, सान्ध्य प्रार्थनाक वजि रहल अछि घंटी,
एव मेरिया। एव मेरिया।

अहुर मज्द। अहुर मज्द।
केहन प्रवाहित अछि गुरु गंभीर अवेस्ता।
ज्वाला आ प्रकाश कें माथ झुकवऽ वला
माथ टेकि जतऽ जरि रहल अछि अमर शिखा,
अहुर मज्द। अहुर मज्द।

नारायण ! नारायण !
सुनू दिव्य सम्वोधन अनादि अनन्त !
उठाउ, हथा जोड़ू अहाँ छी ब्रह्मक सन्तान !
स्वर कें ऊपर उठाउ अहाँ छी भक्ति सँ भरल,
नारायण ! नारायण ![1]

सरोजिनी अपन हैदराबाद आ ओकर हिन्दू-मुस्लिम साझीदारीवला विविध जीवनक वर्णन सँ अपन कविताक आरम्भ कयलनि। तँ ई अछि एक चित्ताकर्षक नगर। देखू केहन दीप्त अछि चित्र, आकाश कपोत कंठक समान मणिमुक्ताक रत्न-जटित अंगार-सर।

देखू चमकैत-दमकैत धवल सरिता
हस्ति दन्त जकाँ घुमैत नगर द्वारक वदन सन।[2]

सरोजिनी अपन शाही शहर आ अपन घर, स्वर्णिम देहरि कें वहुत चाहैत रहथि जे हिन्दू-मुस्लिम स्थापत्यक पूर्वी छटाक वीच एक रत्नक समान जटित छल। ओ अपना कें इस्लामी काव्य संस्कृति मे डुवा लेलनि। "पहिल अक्षर जे हम सुनलहुँ ओ अमीर खुसरोक भाषा मे छल। हमर सभ प्रारम्भिक संगति हमर नगरक मुसलमान पुरुष आ मुसलमान स्त्रीसभ सँ छल। हमरा संगे सभ सँ पहिल खेल-निहार मुसलमान वच्चा छल।" हुनका लेल रुमीक अमर गाथा सँ अधिक सुन्दर आओर किछु नहि अछि। किन्तु ओ अपन हिन्दू-संस्कृति आ पुराण-गाथा कें सेहो चाहैत रहथि, यद्यपि तरुदत्त सन ओ कहियो हिन्दुस्तानक गीत लिखवा मे अपन मन नहि लगौलनि। यद्यपि देवी-देवता सभक ज्ञान हुनका कम प्रेरित नहि कयल-कनि, तथापि ओ विशेष रूपें चाहैत रहथि पर्दानशीन दुनिया कें, ओकर धनिक रहस्य आ खजाना, सुन्दर स्त्री, लज्जाशील बधू आ माता, तकर रत्न आ इत्रक

1. दि वर्ड ऑफ टाइम पृ० 45-46
2. दि गोल्डेन थ्रेशोल्ड

शीशीक मलहम आ तेल, पर्दा, मखमल आ रेशमी वस्त्र केँ।

अविलम्ब सरोजिनी अग्रिम क्षेत्र मे विचरण करैत छथि आ भारतक सभ भागक विषय मे लिखैत छथि, आ हुनक भाषण राष्ट्रीय भावना सँ ओत-प्रोत होइत अछि। यदि श्रीनिवास शास्त्री केँ स्वर्णिम स्वर वला वक्ता कहल जाइत छल, सरोजिनी निश्चित रूपेँ हिन्दुस्तानक बुलबुल (नाइटिंगेल) छलीह, अथवा जेना केओ हँसी मे कहने छल 'सिखचिल्ली कन्या' (नाटी गर्ल) एक हँसी, जकर कवयित्री सेहो हृदय सँ आनन्द लेने छलीह कारण जे ओ ओतबा कोनो दोसर वस्तुक सराहना नहि करैत छलीह जतवा अपना ऊपर कयल गेल हँसी केँ। ओ दोसर कयने हो अथवा स्वयं एकर वर्णन कयने होथि।

6

दि गोल्डेन थ्रेशोल्ड

आर्थर साइमन्स लिखलनि "ई हुनक सौन्दर्यक प्रति अभिलाषा छलनि जाहि कारणें ओ कवि बनि गेलीह, हुनक 'आनन्दक स्नायु' सौन्दर्यक सम्पर्क मे अवितार्हि जनैत छलनि हुनका सभ लेल एहि छोट आकृतिक सम्पूर्ण जीवन ओकर आँखिये मे समटल प्रतीत होइत छल, ओ सौन्दर्यक दिस ओहि प्रकारें झुकि जाइत छलीह जाहि तरहें सूर्यमुखी सूर्यक दिस घुरि जाइत अछि आ पसरैत-पसरैत एतबा दूर जे आँखिक अतिरिक्त किछु नहि देखल जाइत छल।"[1] हँ सौन्दर्य सरोजिनी कें उन्मत्त कऽ दैत छलनि, मुदा सुन्दर वस्तुक हुनक चित्र मे पारम्परिक सरणी छनि जाहि कारणें हुनक कविता रीतिबद्ध भऽ जाइत अछि आ प्रकृतिक संग यथारूप नहि रहैत अछि। हुनक रचना एतबा उत्साहमयी छनि जे ओ अतिशयोक्तिपूर्ण भऽ जाइत अछि आ एहन प्रतीत होइत अछि जे सरोजिनी कहियो अपन कविता सभ मे असंस्कृत, अनुचित आ जीवनक कुरूप पक्षक अनुभूति नहि कयलनि जेहन आधुनिक युगक कविलोकनिक लक्षण छनि। हुनक द्वारा निरूपित अलंकृत पूर्वी सौन्दर्य सँ कखनहुँ-कखनहुँ प्राण अकुलायल लगैत अछि। ई देखू भारतीय जोलहा कें जे हमरा लोकनिक चकचौन्ही लागल आँखिक सोझाँ मे चंचल वर्ण सभक एक विम्ब राखि रहल अछि। ई अछि एक दृश्य, जीवनक सभ संघर्ष आ कष्ट सँ विरहित, परन्तु तैयो जन्म आ मृत्युक पाछाँक पीड़ा स्पष्ट रूप सँ चित्रित कयल गेल अछि :

हे जोलहागण, उषाकाल मे बुननिहार,
किएक बुनैत छी अहाँ लोकनि एहन सुन्दर कपड़ा ?
है लक्यान पाँखिक हवासन नील···
हमरा लोकनि बुनैत छी नवजात शिशुक परिधान।
हे जोलहागण, सन्ध्याकालक बुननिहार,
किएक बुनैत छी अपन एहन चकमक वसन ?
मयूर पाँखिसन हरिअर आ बैंगनी

---

1. दि गोल्डेन थ्रेशोल्ड

हमरा लोकनि बुनैत छी रानीक व्याहक घोघ
हे जोलहागण, शाँति पूर्वक बुननिहार,
की अहाँ बुनैत छी हिम चन्द्रिका मे ?···
श्वेत पाँखिसन, श्वेत मेघ-सन
हमरा लोकनि बुनैत छी मृतकक कफन ।

ई अछि अपरिहार्य प्रश्न आ उत्तर जे सरोजिनी पूछब पसिन्न करैत छथि आ जकर उत्तर ओ स्वयं ताकि लैत छथि । मुदा दृश्य अवास्तविक अछि आ मात्र एक रूमानी चित्र अछि । जोलहा इजोड़िया मे नहि बुनैत अछि, एतवा धरि जे साँझो मे नहि बुनैत अछि । जोलहाक कपड़ा कें दिन भिनसर, साँझ आ इजोड़ियाक रंग से मिलयवा मे सरोजिनी कविक स्वच्छन्दताक अपन अधिकारक प्रयोग कयने छथि, ई समय आ ओकर गतिक जीवन आ ओकर जन्म सँ मृत्यु पर्यन्तक यात्रा सँ सामंजस्य स्थापित करवाक दोसर रूप अछि । एहि मे प्रतीकवादक चिह्न अछि, आ ई स्मरणीय अछि जे सरोजिनी एहन समय मे रहि रहलि छलीह जखन साहित्य मे प्रतीकवादी आन्दोलन चलि रहल छल । आर्थर साइमन्स कहैत छथि जे प्रतीकवादक चेन्ह जे राईड नेखल (1808-1855) तक ताकल जा सकैत अछि । ओ एक शैलीक सूत्रपात कयलनि, 'जाहि मे दृश्य संसार वास्तविकता नहि रहि जाइत अछि, आ अदृश्य संसार स्वप्न नहि रहि जाइत अछि ।''[1]

1905 मे विलियम हीनमान द्वारा प्रकाशित 'दि गोल्डेन थ्रेशोल्ड' इंगलैंड मे विहाड़ि आनि देलक । एहन गीत पर आइ सम्भवतः कोनो ध्यान नहि देल जाइत अछि, कारण जे सातम दशकक काव्यक-संसार मे ओकरा कोनो स्थान प्राप्त नहि छैक, मुदा एहि शताब्दीक प्रथम दशक मे बिलैत एखनहुँ धरि विक्टोरियन भावना मे डूबल छल आ एहि तरुण रंगीन रहस्यमयी बालिकाक पुस्तकक उन्मुक्त प्रशंसाक संग स्वागत कयल गेल । ईहो स्मरणीय अछि जे जखन समकालीन श्रेष्ठ समालोचक द्वारा कविता एतबा उन्मुक्त रूपें प्रशंसित होइत अछि तँ ओकर हठात बहुत अधिक मूल्य भऽ जाइत छैक, आ यद्यपि सरोजिनी अपन अलंकृत आ प्रवाहमय पद्य सँ आइ अपत कवि जीवन सम्भवतः प्रारम्भ नहि कऽ सकितथि, वास्तविकता तँ इएछ अछि जे 1905 मे हुनक बहुत प्रशंसा कयल गेलनि, भऽ सकैछ जे एतबा उन्मुक्त हृदय सँ प्रशंसा कयल गेलाक कारणें ओ मरतीह नहि । की टेनीसन आ शेलीक सेहो आइ उच्च स्वर से प्रशंसा कयल गेल छनि ? मुदा, ओ लोकनि अपन-अपन काव्य-सम्प्रदायक स्थापना कयलनि जे आजुक कविताक आधारशिला बनल, आ एहि प्रकारें सरोजिनी सेहो अपन गीत सँ अपन छोट आ स्वयं स्फूर्त देन देलनि जे भारतीय प्रेम गीत आ समकालीन एवं पश्चात्यवर्ती एहन

1. सिम्बॉलिस्ट्स मूवमेन्ट इन लिटरेचर, ले० आर्थर साइमन्स, पृ० 4

पूर्वी पद्यक श्रेणी मे आवि सकैत अछि जे वहुत वर्षधरि जनताक कतेको वर्ग द्वारा गाओल आ पढ़ल जायत। समाचारपत्रक किछु उदाहरण 1905 क समालोचक लोकनिक उन्मुक्त सराहनाकेँ स्पष्ट करत।

'लन्डन टाइम्स' टिप्पणी कयलक जे मि० आर्थर साइमन्स किछु वर्ष पहिने एहि हिन्दू महिला सँ परिचय कयने छलाह, आ सरोजिनीक ज्ञान, भाव आ समाद पर टिप्पणी करऽ वला हुनक प्रस्ताविक अनुच्छेद सभ केँ उद्धृत कयलनि 'हमरा लोकनि ई सभ हुनक कविता मे पवैत छी, मुदा जे वात मुख्य रूप सँ उल्लेखनीय अछि, हुनक राष्ट्रीयता केँ ध्यान मे रखैत, ओ अछि हमरा लोकनिक भाषाक शब्द आ ध्वनिक सौन्दर्यक प्रति एवं हमरा लोकनिक छन्दक लयक प्रतिक हुनक भावनापूर्ण आनन्द। ओ अपन पदक आन्दोलित गति मे मुदित रहैत छथि। हुनक कविता स्वयं गवैत प्रतीत होइत अछि, एहन बुझना जाइत अछि ओकर वेगवान विचार आ वलवान-भाव स्वयं गीत मे कूदि पड़ल हो। एहि कविता मे वैह एकता आ स्वयं स्फुरण अछि जे 'पद्म पर आसीन बुद्धक प्रति' नामक कविता मे अछि जतय हुनक ज्ञान खेला रहल हो···। हुनक वर्णनात्मक कविता मे किछु आने वात अछि—संगीत मे परिवर्तित दृष्टि आ गति एवं ओहि मनोहारी छोट गीत मे सेहो जे ओ अपन चारि बच्चा पर लिखने छथि। एहि मामिला मे पश्चिमी संस्कृतिक पूर्वी संस्कृति सँ विवाह अन्युत्पादक सिद्ध नहि भेल अछि। ई कवि केँ पुरान वस्तु केँ देवा लेल नव आँखि देने छनि। परिणाम किछु अद्वितीय अछि जकरा कविता कहवा मे हमरा लोकनिक केँ हिचकिचयबाक नहि चाही।'[1] 'दि मैन्चेस्टर गार्जियन' हर्षोन्मत्त भऽ उठल। 'एहन वास्तविक कविता केँ प्राप्त करव सेहो विशेष आनन्दक वात थिक जेहन सरोजिनी नायडूक 'दि गोल्डेन-थ्रेशोल्ड' मे समाहित अछि। एकर सादगी ब्लेक दिस संकेत करैत अछि। ओ सर्वदा संगीतमय अछि, एकर पूर्वी रंग टटका अछि आ दृढ़ स्पर्श शीघ्र आ मृदु अछि।'[2]

अक्टूवर 1905 क 'दि रिव्यू ऑफ रिव्यूज' लिखलक···विगत कतेको माससँ कविताक एहन सुन्दर फसिल नहि आयल अछि जतबा विगत मास मे एकत्र भेल। सभ सँ आगाँ हमरा सरोजिनी नायडू द्वारा लिखित पूर्वी गीत आ कविता सभक उत्तम संगीतमय संग्रह केँ रखवाक चाही। ई छोट संग्रह ओहि व्यंग्य करऽवला केँ सभ दिन लेल चुप कऽ देत जे कहैत छथि जे स्त्रीगण कविता नहि लिखि सकैत छथि···। ई उल्लेखनीय अछि जे एहि प्रशंसा योग्य सुन्दर पद्यक लेखिका वहिक्रम मे मात्र 26 वर्षक छथि। एहि भारतीय वालिकाक गीत पढ़लाक वाद कुमारि ई० टी० फाउतरक 'वाइज एन्ड अदरवाइज' पद्य केँ पढ़ला सं एतवा विरोधाभास

1. मैन एन्ड वीमैन ऑफ इन्डिया में उद्धृत, मइ 1906
2. मैन एन्ड वीमैन ऑफ इन्डिया में उद्धृत, मइ 1906

प्रतीत होइत अछि जे अंग्रेज लेखिकाक प्रति उचिते अछि, जनिक पद्य तुलना मे उदास लगैत अछि। ई उष्ण कटिबन्धीय चित्र-विचित्र रंग मे सँ उपनगरीय उद्यानक एकरंगी संकीर्णता मे जयवाक समान अछि।"[3]

टी० पी०क 'वीकली मे कहल गेल निश्चयात्मक सौन्दर्य आ विशेषतावला पद्यक एक पुस्तक···। सरोजिनी नायडुक कृति प्रशंसनीय छनि, एक खिड़की खोलैत जाहि मे सँ पश्चिम यदि चाहय तँ पूर्व केँ देखि सकैत अछि।' 'दि मार्निंग पोंस्ट' कहलक : किछु छोट कविता अछि जे प्राच्यक दैनिक जीवनक वर्णन करैत अछि, जाहि मे आश्चर्यजनक स्पष्टता छैक। ई एक दुर्लभ कला अछि जे आँखि द्वारा देखल गेल वस्तुक यथावत् वर्णन मे सेहो काव्यक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। ई एक सम्पूर्ण उपलब्धिहिक नहि, किन्तु सुन्दर पद्यक पुस्तको अछि, ई मानसिक संरचनाक अभिव्यक्ति थिक।" 'द एकेडेमी' सौन्दर्य सँ भरल पुस्तकक रूप मे गोल्डेन थ्रेशोल्ड' क प्रशंसा कयलक··· "जे आनन्ददायक आ संगहि आश्चर्यजनक अछि आ अछि एकर व्यक्तित्व स्वयं केर सम्पूर्णता जे दोसराक बहुत कम ऋणी अछि। बहुत दिन सँ हम नहि देखने छी कविताक एहन संग्रह, होंनहार आ वास्तविक उपलब्धि सँ भरल।"[1]

लिजा लेहमान सरोजिनीक पन्द्रह गीतक लेल संगीत तैयार कयलनि। लन्दन मे एहि गीतक समूह-गान प्रस्तुत करवाक हुनक योजना छलनि। ई वास्तव मे प्रस्तुत भेलैक अथवा नंहि, ई सिद्ध करब कठिन अछि, मुदा जाहि बौद्धिक मंडली मे सरोजिनी विचरण करैत छलीह, ओं निश्चित रूपेँ भावनामयी आँखिवाली एहि भारतीय बालिकाक पूजा करैत छल।

सरोजिनीक कविताक वास्तविक प्रतिभू दूनू अंग्रेजी समीक्षक आर्थर साइमन्स आ एडमन्ड गॉस अपन समयक प्रमुख विद्वान छलाह। आर्थर साइमन्स (1865-1945) एक प्रतीकवादी छलाह आ 'कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंग्लिश लिटरेचर 'क अनुसारेँ एक रुचिमय 'सौन्दर्यवादी'। हुनक ग्रन्थ 'दि सिम्ब्रालिस्ट्स मूवमेन्ट इन लिटरेचर' एक प्रवर्तक अध्ययन छल आ कहल जाइत अछि जे हुनक अनुवाद यीट्सक कविता केँ प्रेरित कयने छल। प्रतीकवाद आ रहस्यवाद ओहि समय वातावरण मे छल, आ स्वप्निल आँखिवाली रहस्यवादी भारतीय बालिका एहि उदार सहिष्णु अंग्रेजक कल्पना केँ बान्हि लेलक जे एक विदेशी द्वारा अंग्रेजी मे लिखवा मे कोनो त्रुटि नहि देखलक। यद्यपि सरोजिनी नायडू अपन प्रेरणाक लेल स्वयं केँ गॉसक ऋणी बुझैत छलीह आ 'दि गोल्डेन थ्रेशोल्ड'

1. मैन एन्ड वीमैन ऑफ इण्डिया' में उद्धृत, मइ 1906
2. वैह

क समर्पण मे ओ लिखलनि 'एडमन्ड गाँसकेँ जे सभ सँ पहिने हमरा दि गोल्डेन थेशोल्डक बाट देखौलनि'। ओ आर्थर साइमन्सक सेहो कम ऋणी नहि छलीह जे एहि पोथीक प्रस्तावना लिखने छलाह। साइमन्स लिखि कऽ सरोजिनी केँ प्रस्तकक रूप मे प्रकाशित करबथि। एखन धरि ओ सब भारत आ विदेश मे मात्र पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित भेल छल। आब ओ इच्छा कयने छलाह जे संसारक हेतु ओकरा सभ केँ एकत्र कऽ एक संग्रह बनाओल जाय। सरोजिनी बहुत विह्वल भऽ गेलीह आ लिखलनि 'अपनेक पत्र हमरा बहुत गर्विता आ उदास कऽ देलक। की ई सम्भव अछि जे अपने वास्तव में ओकरा सभ केँ संसार केँ देवा योग्य बुझैत छी? अपने जनितहिं छी जे कलाक प्रति हमर विचार कतबा ऊँच अछि, आ हमरा अपन क्षुद्र आकस्मिक लघु कविता सुन्दर सँ न्यून बुझना जाइत अछि। हमर अभिप्राय ओहि अन्तिम स्थायी सौन्दर्य सँ अछि जकर हमरा अभिलाषा अछि।'[1] पुनः पूर्ण विनम्रताक संगे ओ स्वीकार करैत छथि 'वास्तव मे हम कवि नहि छी। हमरा मे दृष्टि आ अभिलाषा अछि, किन्तु स्वर नहि। यदि हम महानताक तत्त्व आ सौन्दर्य सँ भरल मात्र एक्के कविता लिखि सकलहुँ, तँ सभ दिन लेल विजयोल्लास मे चुप भऽ जातहुँ, मुदा हम ओहने गबैत छी जेनाकि पक्षी सभ गबैत अछि, आ हमर गीत ओही प्रकारेँ स्वरूपजीवी अछि।' साइमन्स अनुभव करैत छलाह जे गीतक ई 'पक्षीक समान' गुणें हुनक कविता केँ मूल्यवान बना देने छल।' ओ एक प्रकारक नम्र बचावक तरीका सँ एक दुर्लभ स्वभाव, पूर्वक एक स्त्रीक स्वभाव दिस इंगित करैत छथि, बहुत किछु पश्चिमी प्रभाव मे पश्चिमी भाषा मे अभिव्यक्त होइत। ओ ओहि स्वभाव केँ पूर्णरूपेण व्यक्त नहि करैछ किन्तु हम सोचैत छी जे ओ ओकर सत्व केँ व्यक्त करैत अछि, आ ओहि मे एक पूर्वी जादू छैक।'[2]

आगाँ चलिकऽ सरोजिनी नायडूक दोसर पुस्तक 'दि वर्ड ऑफ टाइम' क प्रस्तावना लिखयबला एडमन्ड गॉस, जेना हम ऊपर देखि चुकल छी, अपन पालिता केँ बुझौने छलथिन जे ओ भारतीय वस्तुक विषय मे लिखथि, जखन 1895 आ 1898 क मध्य इंगलैंडहि मे हार्दिक प्रशंसा नहि भेलैक, अपितु अपन कन्याक गीत मे मुखर भेला पर भारत सेहो बड़ सन्तोष सँ मुस्किआयल छल। आब सँ ओ भऽ गेल छलीह 'भारतक बुलबुल।'

1. मैन एन्ड वीमैन ऑफ इन्डिया मे उद्धृत, मइ 1906
2. दि गोल्डेन थ्रेशोल्ड, पृ० 10

7

भारत-कोकिला

सरोजिनीक लेल दू नाम सभदिन ले' रहल—ओ अछि 'भारतक बुलबुल आ 'भारत-कोकिला,' जे महात्मा गांधी हुनका कहैत छलथिन। सरोजिनीक अमर पक्षी सँ तुलना मात्र हुनक कविताक कारणें नहि, वरन् हुनक अति सुन्दर गद्यक कारणें सेहो कयल जाइत छल। हमरा स्मरण अछि जखन हम हुनका सुनिकऽ घर आपस आयलि छलहुँ, हुनक शब्दक सौन्दर्य सँ, बुझू उन्मत्त भऽ कऽ हुनक भाषा, वाक्य-रचना, वक्तृत्व सभ पूर्ण छलनि। ई सत्य जे कैकबेर ई आलोचना कयल जाइत छलैक जे हुनक भाषण मे अनेक महत्त्वपूर्ण वातक समावेश नहि रहैत छनि। सरोजिनीक किछु प्रकाशित भाषण कें पढ़िकऽ तँ हमरा होइत अछि जे ओहि मे कैक वातक आ अपन समकालीन प्रायः प्रत्येक विषयक समावेश छैक। हमरा लोकनिक साहित्यिक प्रकाशन मे ई वहुत पैध त्रुटि अछि जे हुनक सभ भाषण संगृहीत कऽ एक वृहत संग्रहक रूप मे निबद्ध नहि भेल अछि। मद्रासक जी० ए० नटेशन ओकरा सभ कें सकत्र करवाक प्रयत्न अवश्य कयलनि आ देशक लेल एक पैध सेवाकार्य कयलनि, मुदा ई भाषण प्रायः हुनक प्रारम्भिक वर्षक छनि आ ई पुस्तको सभ अप्राप्य अछि।

सरोजिनी शीघ्रे ई अनुभव कयलनि जे कवयित्रीक रूप मे अत्यधिक सफल भेलहुपर हुनका मे अन्यो गुण छलनि आ ओ शीघ्रे अपन धरसँ वाहर भारतक सभ भाग मे राजनीतिक, सामाजिक आ धार्मिक विषय पर भाषण दैत विचरण करए लगलीह। हुनक शब्द मे ओ कोन जादू छल जे श्रोता कें मन्त्रमुग्ध रखैत छल? ओ तथ्य ई छल जे ओ एक व्यक्तिक रूप मे प्रत्येक श्रोताक लेल एक व्यक्तिगत संदेश लऽ कऽ आयलि छलीह। हुनक सुन्दर विशेषण, शब्द आ वाक्यांश कें दोहरायव, हुनक गंभीर स्वर आ काव्यमयी प्रस्तुति सभ हमरा लोकनिकें मत्त कऽ दैत छल जखन कखनहु हमरा लोकनि हुनका सुनैत छलहुँ। आ ओ एहने बुझना जाइत छल जे हमरा लोकनि मे सँ प्रत्येक सँ गप्प करैत छलीह। एतय सामान्य सँ वहरायल एक एहन व्यक्तित्व छल जे हमर सोझाँ मे ठाढ़ छल आ अनुसरण करवालेल एक सोझ सिद्धान्त प्रस्तुत करैत छल "आत्माक जीवन एहन वस्तु नहि अछि जे हम पावि सकैत छी। किन्तु ओ हमर अस्तित्वक वस्त्र मे स्वर्णिम सूतक समान वुनल

अछि। हम चाहैत छी जे अहाँ लोकनि ई अनुभव करी हमर बन्धुगण जे एतवहुपर दिव्यत्वक एक अवस्था होइत छैक जे ने सम्भव छैक, जे ने आवश्यक छैक, जकरा हमरा ओकर ईश्वर रूपी पूर्ण ज्वाला धरि विकसित करवाक अछि।"[1]

मनुष्यक प्रति हुनक अमर रुचि कम विस्मयजनक नहि छल। विशेष रूपेँ भारतक विद्यार्थी आ स्त्रीगण लोकनिक मुक्ति पर ध्यान केन्द्रित करैत छलीह। उन्नैस सय तीने ईस्वी मे ओ भारतक सभसँ पैध शत्रु फूँट क नाड़ी पकड़ि लेने छलीह आ ओ एक संग रहवालेल एवं मातृभूमिक हेतु कार्य करवा लेल तरुण लोकनिकेँ प्रेरित कयलनि 'अहाँ जनैत छी जे अहाँ प्रान्तीय छी,' मद्रास मे तरुण श्रोताक बीच ओ गर्जना कयलनि 'अहाँ ओहूसँ अधिक संकीर्ण छी—किएकतेँ अहाँक क्षितिज सीमित अछि अहाँक नगर धरि, अहाँक उपजाति धरि, अहाँक स्वयं धरि (जोरदार हर्षध्वनि)। हम जनैत छी जे हम ठीक वाजि रहल छी, किएक तँ हमहुँ अपन प्रारम्भिक युवावस्था मे एहि प्रकारक अदूरदर्शिता सँ पीड़ित छलहुँ। वंधुगण, यात्रा कयला सँ, बुझला सँ, आशा कयलासँ, अपन प्रेम केँ विस्तृत कयला सँ, अपन सहानुभूतिक विस्तार कयला सँ, विभिन्न जाति, विभिन्न सम्प्रदाय, विभिन्न सभ्यता, सम्पर्क मे अयलासँ हमर दृष्टि स्पष्ट भेल अछि।"[1]

स्त्रीगणक मुक्तिक लेल सरोजिनी द्वारा कयल गेल कार्य सर्वविदित अछि आ ओकरा एतय दोहरयबाक आवश्यकता नहि, ई तँ हुनक शब्दक प्रवाहमयी धारा, स्त्री समाजकेँ जगयबाक, उठयबाक, प्रेरणादायक हुनक पद्य स्त्रीगणक प्रति कयल गेल गलतीक सुधारक हुनक आग्रह एवं पर्दा हँटाकऽ वाहर आयब आ देश एवं अपन सेवा करबाक आदर्श आ महत्वाकांक्षा स्त्रीगण मे भरि देवे ओ कारण सभ छल जकरा द्वारा 1917 में लॉर्ड मान्टेगू सँ भेट करए बला प्रतिनिधिमंडलक हुनका नेता वनाओल गेलीन आ 1926 में अखिल भारतीय महिला सम्मेलनक संस्थापिका सेहो। स्त्री समाजक दशाकेँ सुधारबाक हेतु सभ संघर्ष आ दवावक पाछाँ सरोजिनीक उपस्थिति सतत प्रतीत होइत छल।

सरोजिनी सम्पूर्ण जीवन हिन्दू-मुस्लिम एकताक हेतु संघर्ष कयलनि। ओ अपन रहस्यवादी स्पष्टीकरण सँ दुनूकेँ एक-संग मिला देलनि: "कैक शताब्दी पूर्व जखन इस्लामक प्रथम सेना भारत आयल तखन ओ लोकनि गंगा तटपर अपन तरुआरिकेँ मिझौलनि आ ठंढा कयलनि। ई गंगाक वपतिस्मे छल जे सभ सेँ पहिने इस्लामी आक्रमणकारीक स्वागत कयलक जे भारतक सन्तान वनि गेल जेना-जेना पीढ़ी वितैत गेल।"[2]

---

1. गोल्डेन थ्रेशोल्ड, पृष्ठ 6
2. स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स ऑफ सरोजिनी नायडू, पृ० 16 तथा 27

हुनक भाषण मे निहित हुनक विचार केवल ध्यानपूर्वक अध्ययन करबाक योग्य अछि—आ एतेक मौलिक अछि आ शीघ्रे ओ भारतक सभ भागक सिंहनी वनि गेलीह। स्वतंत्रता-सेनानी मे सेहो ओ प्रथम छली, जखन महात्मा गाँधी ओहि समय धरि दक्षिण अफ्रीका मे नाम नहि कमयने छलाह। 1905 मे आरम्भ कयल गेल स्वदेशी आन्दोलन मे ओ पूर्णरूपेण भाग लेलनि।

सरोजिनीक शक्ति असीम छलनि। जखन ओ अपन अमर भाषण दैत सम्पूर्ण देश मे दौड़ि रहलि छलीह तखनहि ओ आओर अधिक कविता लिखलनि आ हुनक दोसर संग्रह 'द वर्ड ऑफ टाइम' विलियम हीनमाने द्वारा 1912 मे प्रकाशित कयल गेल। एहि गीतक सुन्दर पुस्तक केँ ओ अपन माता-पिता केँ समर्पित कयलनि "आजीवन श्रद्धांजलि आ स्नेहक प्रतीक स्वरूप।" एडमन्ड गॉस ओकर प्रस्तावना लिखलनि। हुनक अनुसार, सरोजिनीक पद्य मे आव ओ नेनपन नहि छल, जे हुनक पहिलुका कविता सभ मे देखल जइत छल "ओ पक्ष समाप्त भऽ चुकल छल आ आव उदित भेल छल हुनक प्रसिद्ध जीवनक दोसर पक्ष—दुःख निकट संगति मे, ओ सुखकेँ जनैत छलीह आ सान्त्वनाक निराशा केँ सेहो। अत्यधिक दुःख देखलाक कारणेँ संभवतः हुनक चमेलीक माला सभ विरल भऽ गेल छलनि आ हुनक आकाशक नीलिमा धूमिल भऽ गेल छल। ई सम्पूर्ण जगत केँ विदित छैक जे सार्वजनिक कल्याणक हेतु कयल गेल हुनक श्रम हुनक निजी स्वास्थ्य केँ भारी क्षति कयने बिना नहि रहल। किन्तु ई बात सरोजिनीक गीतमयी शक्ति केँ शिथिल नहि कयलक, अपितु ओहि मे तीव्रते भरि देलक। उच्च महत्वाकांक्षा, जेनाकि वास्तविक कविक लेल होयबाक चाही, हुनक अवलम्बन छलनि। अपन बाल्यावस्था मे ओ भव्य सपना देखैत छलीह, ओ भारतक गेटे अथवा कीट्स बनऽ चाहैत छलीह। ई इच्छा अनेक अन्य इच्छाक समान, ओहि हृदयक लेल भारी तनाव सिद्ध भऽ सकैत छल जे···

Souvrit Comme une fleur profonde
Dont I anguste Carolle a predif I orient.

किन्तु सौन्दर्य आ यशक हेतु इच्छा, भव्य प्रेरणा, एखनहुँ एहि प्रोज्ज्वल आत्माक भीतर शक्तिमय अछि।[1]

हुनक शीर्षक उमर खैयाम सँ लेल गेल छल :
"समयक पक्षीकेँ बाँकी छैक उड़ब थोड़बे दूर—
आ देखू पक्षी उड़ि गेल।"

एहि दोसरो पोथीक भावपूर्ण स्वागत कयल गेल, यद्यपि पहिलुक संग्रहक समान एकर ओतबा स्वयंस्फूर्त आ उच्च स्वर मे प्रशंसा नहि भेलैक। संभवतः एहि लेल

1. दि बर्ड ऑफ टाइम, पृष्ठ 6-7

जे गॉस द्वारा हुनक परिपक्वक घोषणा भेलहुँ पर, ओ एखनहुँ 'दि गोल्डेन थ्रेशोल्ड' पद्य रचना शैलीक पीड़ा उठा रहल छलीह—वस्तुतः ओ कहियो एक-रासँ आगाँ नहि बढ़ि सकलीह आ हुनक द्वारा प्रस्तुत चिरपरिचित भारत किछु दूर धरि जीर्ण भऽ चुकल छल। मुदा यार्डशायर पोस्ट कहलकक, "श्रीमती नायडू हमर भाषे मात्रकेँ नहि समृद्ध कयने छथि, अपितु पूर्वक चमत्कार, रहस्यवाद, भावना आ आत्माक संग निकट सम्पर्क बढ़यवा मे हमरा लोकनिकेँ समर्थ कयलनि अछि।" हुनक पोथीक बिक्री खूब भेल आ भारत हुनका देवी तुल्य बुझलक।

8

गोपालकृष्ण गोखले आ सरोजिनी नायडू

सरोजिनी नायडूक क्षमता गम्भीर आ स्नेहिल मैत्रीक हेतु अपार छलनि आ महात्मा गांधी कें 'अपन गुरु' स्वीकार करवासँ पूर्व हुनक पहिल मित्र आ गुरु छलथिन नरमदलीय देशभक्तिक महास्तम्भ गोपाल कृष्ण गोखले। ओ 'वीर हृदय', सरोजिनी नायडू एही नामे हुनका सम्बोधित करैत छलथिन, 19 फरवरी 1915 कें 49 वर्षक अल्पायु मे दिवंगत भऽ गेलाह। यद्यपि एहि दुनू प्रियजनक वयस मे तेरहे वर्षक अन्तर छल, मुदा गोखले नेता पहिने बनि गेल छलाह, विशेषतः दक्षिण अफ्रिकी विषयक तथा महात्मा गांधीक नियामक परामर्शदाताक रूप मे। वास्तव मे गोखले अनेक भारतीय नायकक निर्माण मे सहायता कयने रहथि। सरोजिनी नायडूक दृष्टि मे ओ एक सम्माननीय शिक्षक छलाह। श्रेयक भागी वास्तव मे गोखले छलाह जे सर्वप्रथम 1902 मे सरोजिनी कें मातृभूमिक सेवाक निमित्त जीवन अर्पित कऽ देबाक प्रेरणा देने छलथिन।

गोखले चितपावन ब्राह्मणक महान वंश परंपराक छलाह आ ओ रानाडे, तिलक एवं परांजपेक संग लागि विचार आ नेतृत्वक एक वर्ग बनबैत छलाह, जे भारतीय स्वतन्त्रताक आधारशिला छल। ओ देशसेवाक लेल दरिद्रता आ आत्म-बलिदान कें अंगीकार कयनिहार निःस्वार्थ कार्यकर्ताक 'सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी'क निर्माण कयलनि। 1912 मे, एक दिन लखनउ मे मुस्लिम लीगक 'नवीन ऐतिहासिक सत्र' मे भाषण दऽ कऽ सरोजिनी नायडू पूना गेलोह आ श्री परांजपेक संग फरग्यूसन कालेज सँ 'सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' धरि पयरे पहुँचलीह। ताहि समय गोखले दुर्बल आ मधुमेह सँ पीड़ित छलाह, मुदा कार्यव्यस्तता कम नहि रखने छलाह। मुस्लिम लीगक नवीन आदर्शक अध्ययन मे रत छलाह ओ अपन मित्र सरोजिनी दिस नजरि उठौलनि तँ कहि उठला "ओ···हो, की अहाँ ई कहऽ अयलहुँ अछि जे अहींक दृष्टि ठीक छल?" ताहि दिनक बाद सँ गोखले आ सरोजिनी नायडू साम्प्रदायिक एकताक उन्नायक बनि गेलाह।

गोखले आ सरोजिनी परस्पर समान प्रशंसक रहथि। 1906 मे, सरोजिनी कलकत्ता मे स्त्री शिक्षा पर एक ब्याख्यान देलनि तँ वक्तृत्वक प्रवाह सँ अत्यन्त प्रभावित भऽ गोखलेक टिप्पणी छलनि जे हुनका सुनब श्रेष्ठ कोटिक बौद्धिक आनन्दो सँ कतहु अधिक छल।

'सहानुभूतिक एहि प्रकारक सुखद टिप्पणी संग आरम्भ भेल परिचय क्रमशः बढ़ए लागल आ अन्ततः निकट तथा सुन्दर सहयोगिता मे परिणत भऽ गेल जकरा हम अपन जीवनक श्रेष्ठ छाया मे गनैत छलहुँ', सरोजिनीक कहव छल "गोखले एहन व्यक्ति छलाह जनिका महात्मा गांधी गंगा सँ तुलना करैत छलथिन। पवित्र नदी मे केओ स्नान कऽ प्रफुल्ल भऽ सकैत छल। ओहि मे नाव आ पतवार लऽ कऽ चलव एक आनन्द छल।" 1890 मे गोखले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस मे नोन-कर घटयवाक सम्बन्ध मे वाजल छलाह। ओहि दिन सँ ओ एक विशाल संस्थाक एक प्रतिष्ठित सदस्य वनि गेलाह। ई कोनो अतिशयोक्ति नहि छल जखन अनेक वर्षक वाद सरोजिनी हुनका 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक विश्वविख्यात नेता' कहने छलथिन। वंगाल-विभाजन आ ऋणी वन्धुआ मजूरक विरोध मे गोखले मुक्त हृदय सँ लड़ल छलाह। सरोजिनी नायडू सेहो एहि घृणित व्यवस्थाक निषेधक उत्साहपूर्वक ओकालति कयलनि।

1907 सँ 1911 धरिक अवधि मे गोखलेक संग सरोजिनीक मित्रता प्रगाढ़ भऽ गेलनि। प्रत्येक भेंट एक मधुर स्मृति छोड़ि जाइत छल, "भारतक सेवाक निमित्त अपन जीवन अर्पित करवाक हेतु कोनो उद्दीपक आ मंथनकारी प्रेरणाक शब्दक"। अपन व्यस्त जीवनक अछैतो यदाकदा, ओ तरुण कवयित्रीक लेल प्रोत्साहनक शब्द वा स्वीकृतिक संदेश पठा दैत छलाह। 1912 क, प्रारम्भिक भाग मे, जखन सरोजिनी अधिकाधिक समय अपन पिताक संग वितौलनि, वास्तविक घनिष्ठ मित्रताक जड़ि मजगूत भेल। कहलनि गोखले, "एखन धरि हम अहां केँ हरदम उड़ैत पकड़ने रही, आव हम अहाँक असल आत्मा केँ जनबाक हेतु दीर्घ काल धरि पिजड़ा मे वन्न राखव।' क्रमशः सरोजिनी वहुमुखी आ गतिमान व्यक्तिक वास्तविक महत्ता केँ वूझऽ लगलीह "एक सुसम्पन्न आ विरोधाभासपूर्ण स्वभाव। ओ एक व्यावहारिक परिश्रमी कार्यकर्ता रहथि" तथा एक रहस्यवादी स्वप्न द्रष्टा', अपन दीर्घकालीन ब्राह्मणवंशक अनुशासन सँ समन्वित। सरोजिनी अपन गुरु केँ अपन कविताक दोसर पोथी 'दि वर्ड ऑफ टाइम' जखन भेंट कयलनि, तखन गोखले पुछलथिन, 'ई ज्वाला एखनहुँ ओहिना लहकि रहल अछि?' सरोजिनी सोत्साह उत्तर देलथिन "प्रखरतर रूप मे', तँ बजलाह गोखले 'आश्चर्य अछि', एतेक दीर्घकालीन ववंडर कोना अतिशय प्रशंसा आ सफलता केँ ऊघि सकत?'

दुनू 'वीर हृदय' रोमांटिक रहथि। एक वेर, एक छत पर गोखले सरोजिनी केँ कहलथिन, "तारा आ पहाड़क साक्ष्य मे एतऽ हमरा संग ठाढ़ रहू ओ ओकर समक्ष अपन जीवन, आ अपन प्रतिभा, अपन गीत आ अपन वाणी, अपन विचार आ अपन स्वप्न केँ मातृभूमिक लेल अर्पित करू। हे कवि, पहाड़क उत्तुंग सँ देखू आ घाटीक श्रमिक मे आशाक संदेश विलहू।"

1912 क मइ मे सरोजिनी आ गोखलेक भेँट बिलेँत मे भेलनि। गोखले केँ

एक नवीन भूमिका मे देखिकऽ सरोजिनी चकित रहि गेलीह, जे सरोजिनीक अनुसार, "पश्चिमी वेश-भूषा में पार्टी मे जाइत छलाह आ 'ब्रिज' खोलाइत छलाह तथा नेशनल लिबरल क्लबक छत पर रात्रिभोज मे महिलाक मनोरंजन करैत छलाह।"

लन्दन मे गोखले दुखित रहैत छलाह आ यदाकदा सरोजिनीक संग केन-सिंगटन उद्घाटन मे गेल करैत छलाह। "अपन दिमागक एक कोन हमरा दऽ दियऽ जकरा हम अपन कहि सकी', एक बेर ओ हिनका सँ कहने छलथिन, आ सरोजिनी आगाँ जोड़ैत छथि, 'आ ओहि विशेष कोन मे जे हुनक छलनि। हम हुनक चिर-स्मरणीय वचन जोगाकए रखैत छी।' अन्तिम वर्ष मे, लन्दन मे, गोखले सरोजिनीक सँग अपन मैत्री कें एतेक चाहैत छलाह जे जखन ई हुनका सँ भेंट करऽ जाइत छलीह तँ ओ हिनका 'अपन सभ औषध मे श्रेष्ठ' कहैत छलथिन। अन्ततः अक्टूँबर 1914 मे वियोग भऽ गेलनि। पतझड़ मे झड़ल पातक उदासी आ उमड़ैत कुहेस प्रायः हुनक मन मे बसि गेल छलनि आ कि, प्रत्यह मृत्युक पाँखिक परिछाँहीक हुनका पहिनहिँ पता चलि गेल छलनि। ओ सरोजिनी सँ विदा लैत बाजल छलाह "हमरा नहि होइत अछि जे हमरा लोकनिक फेर भेंट भऽ सकत। अहाँ जीवित रहब तँ मन राखब जे अहाँक जीवन देश-सेवाक लेल समर्पित अछि। हमर काज पूरा भऽ गेल।"

9

महात्माजी सँ पहिल भेँट आ हुनक संग प्रारम्भिक कार्य

ई एक सामान्य विश्वास थिक जे विरोधी एक दोसर दिस परस्पर आकर्षित होइत अछि। निश्चयतः, महात्मा गांधी आ सरोजिनी नायडू सन दू पूर्णतः मित्र व्यक्ति केँ एक विचित्र बन्धन छल जे अपना दिस खिचने छल। गांधी जी रहथि संयमी संत, रहन-सहन मे सोझ-साझ, तपस्वी आ अहिंसक मसीहा। सरोजिनी छलीह एक उल्लासमयी कवयित्री, आनन्द सँ लबालब, उच्च रहन-सहन, अलंकरण आ रंगीन साड़ीक इसखी तथा आहार-विहारक प्रिय। अस्वस्थताक अछैतो ओ जीवनक विविधताक आनन्द लैत छलीह। तथापि, संत आ गायक मे कतिपय विशेषता समान छलनि तथा हुनक महत्वाकांक्षा आ आदर्श एक दोसर सँ मिलैत छलनि। ओ दूनू शान्ति आ एकताक मसीहा रहथि। राष्ट्रीय एकता एहन विषय छल जकरा लेल ओ दूनू अपन जीवनक बलि पर्यन्त देवाक हेतु प्रस्तुत रहथि। संगहि, यद्यपि सरोजिनी महात्माजी सदृश शाकाहारी नहि रहथि, तथापि ओ अहिंसाक उत्साही आ प्रामाणिक अनुयायिनी छलीह। आ ईहो जे सरोजिनी आ गांधीजी दूनू हास्यक एहन वृत्तसंवद्ध रहथि जे हुनकालोकनि द्वारा उठाओल गेल कठिनता आ परीक्षा सँ उत्तीर्ण करबा देलक, आ जे हुनकालोकनि केँ एहि योग्य बना देलकनि जे ओ लोकनि अराजकता आ निराशाक मुँह पर हँसि सकथि तथा संगहि परस्पर हँसी-ठट्ठा कऽ सकथि। ओहि सँ अधिक साँच आर कोनो वाक्य नहि कहल गेल छैक जे सरोजिनी कहने छलीह 'जे खाली बापू हुनका गरीबी मे रखबाक गुर जनैत छथि।' सरोजिनी ओहि गरीबी केँ बुझबा मे समर्थ छलीह जकरा महात्मा गाँधी व्यवहार मे अनैत छलाह आ प्रचारित करैत छलाह···गरीब आ अमीरक बीचक खाधि केँ एक नवीन तरीके टा पाटि सकैत छल।

सरोजिनी रंगक पुजारिन छलीह। जतऽ महात्माजीक संसार उज्जर वा भुल्ल सरस पृष्ठभूमि मे जटिल छल, ततऽ सरोजिनीक संसार इन्द्रधनुषी रंग सँ दमकैत छल। तथापि, अत्यन्त उल्लासपूर्वक महात्मा गांधी एहि चमकदार गायिका पक्षीक

अपन संयमी मण्डली मे स्वागत कयने छलाह, कारण जे ओ निश्चये हर्ष विलहऽ वाली छलीह आ महात्मा गाँधी अनुभव करैत छलाह जे जीवनक हेतु ईहो आवश्यके छैक।

सरोजिनी नायडू महात्मा गाँधी सँ दस वर्ष छोटि छलीह आ हुनक जन्म 1879 मे भेल छलनि। ओ हुनका सँ सर्वप्रथम लन्दन मे 1914 मे भेँट कयने छलथिन जखन कि ओ तीस टपि गेल छलीह। ओ अपन एहि पहिल भेटक-प्रसंग वाद मे एक जीवनी-लेखक केँ कहलथिन, 'हम हुनका सँ 1914 मे भेँट कयलियनि आ तखन ओ महात्मा भऽ चुकल छलाह। प्रथम विश्वयुद्ध शुरू होयवाक दू दिन वाद 6 अगस्त 1914 केँ गांधीजी दक्षिण अफ्रिका सँ विलेत पहुँचलाह। गोखले हुनका विलेत वजौने छलथिन। मुदा, ओ स्वयं पेरिस मे फँसि गेल छलाह आ अपन संरक्षित सँ भेँट नहि कऽ सकलाह। अतः गाँधीजी ओहि विशाल राजधानी मे निर्वध पड़ल छलाह, कारण विना अपन गुरुक अयने ओ किछु नहि कऽ सकैत छलाह। विलेत मे रहऽ वला भारतीय ई सोचैत छल जे भारत केँ युद्ध-प्रयास मे सहायता नहि करवाक चाहिऐक, कारण ओ पराधीन छल। मुदा, गाँधीजी एहि वात पर जोर दऽ रहल छलाह जे हमरालोकनि 'पराधीनताक सीमा धरि नहि पहुँचल छी। आ ने स्वतन्त्रताक माङ कऽ भारत विलेत केँ ओकर विपत्ति मे उकठ करय।" हम ई विचारैत रही जे विलेतक आवश्यकता केँ हमरा अपन अवसर मे नहि वदलवाक चाही आ ई अधिक उचित आ दूरदर्शितापूर्ण होयत जे युद्धकाल धरि हम अपन माङ पर जोर नहि दी।" अतः ओ एक 'इंडियन वालंटरी एम्बुलेंस कोर' आरम्भ कयलनि, आ ओ वोएर आ जुलु युद्धक समय दक्षिण अफ्रिका मे रुग्ण तथा आहतक मदति कयलनि। महात्मा गाँधी, सरोजिनी नायडू आ अन्य भारतीय हस्ताक्षर सँ युक्त एक संयुक्त-पत्र सहायता देवाक हेतु ब्रिटिश अधिकारीक समक्ष पठाओल गेल। किंचित असमंजसक वाद अंग्रेज गांधीजीक प्रामाणिकता केँ वुझलक, प्रशिक्षक देल गेलैक आ 'कोर' संगठित भेलैक। एतएव, सरोजिनी आ गाँधीजी समान उद्देश्यक हेतु काज करवाक लेल लग अयलाह। सरोजिनी एक प्रसिद्ध महिला क्लव 'लाइशियम' क सदस्या छलीह आ ओकर सभ सदस्य 'इंडियन वालंटरी कोर'क निमित्त कपड़ा सीवाक काज हाथ मे लेलक। महात्मा गाँधी सँ पहिल भेटक कवयित्री नाटकीय ढंग सँ वर्णन कयने छथि। ओ लिखने छथि "आश्चर्यक विषय थिक जे महात्मा गाँधी सँ हमर पहिल भेट 1914 क यूरोपीय महायुद्ध आरम्भ होयवाक ठीक पहिने लन्दन मे भेल। जतऽ ओ अपन सत्याग्रहक सिद्धान्तक श्रीगणेश कयने छलाह आ अपन देशवासीक निमित्त, जे ओहि काल मुख्य रूपे ऋणी वन्धुआ मजूर छल, विजय प्राप्त कापने छलाह। ओहि दक्षिण अफ्रीका सँ उद्धत जनरल स्मट्स केँ जीति जखन ओ अयले छलाह तखन हम हुनक जहाज अयला पर भेट नहि कऽ सकल रहियनि, मुदा प्रात भेने अपराह्ण मे केन

सिगटनक एक निरंत भाग मे हुनक निवासक पता लगवैत हम बौआयल छलहुँ तथा एक प्राचीन काटक मकानक सोझ सीढ़ी पर चढ़ल रही जतऽ देखने रही मुक्त अङनै मे एक छोट-खुट लोकक सजीव चित्र, जनिक माथ झाँपल छलनि आ जे फर्श पर जहलक करिया कम्वल पर वैसल छलाह आ जहलेक कठौत मे टमाटरक चटनी आ जैतुलक तेलक मामूली भोजन कऽ रहल छलाह। चारू दिस भुजल चिनियाँ वदाम राखल छल आ छल सुखायल केराक चिक्कसक कुस्वादु विस्कुटक पीचल-पाचल किछु डिव्वा। हम अनायस भभाकऽ हँसि पड़लहुँ ओहि प्रसिद्ध-नामक आशाक प्रतिकूल अद्भुत दर्शन पाबिकऽ जनिक नाम अपन देश मे घर-घर लेल जाय लागल छल। ओ आँखि उठाकऽ तकलनि आ ई कहैत हमरा दिस देखिकऽ हँसि पड़लाह 'अरे', अहाँ अवस्से श्रीमती नायडू होयव। दोसर आर के एतेक आदरविहीन भऽ सकैछ? आउ, भोजन मे हमर संग पूरू। "नहि-नहि, धन्यवाद' हम सुँघिकऽ जवाव देलियनि, ई कते निर्घिन भोजन अछि। 'एहि भाँति ओ ओही क्षण हमर मैत्री आरम्भ भेल जे वास्तविक सहयोग मे पुष्पित भेल आ ओहि दीर्घ-कालीन श्रद्धापूर्ण शिष्यत्व मे फलित भेल जे भारतक स्वातन्त्रयक लक्ष्य हेतु उभय-निष्ठ सेवाक तीस सँ अधिक वर्ष मे एक्को घंटाक हेतु विचलित नहि भेल।"

सरोजिनी ओहि महान सम्मेलनोक स्मरण करैत छथि जे एहि दुर्वल युगलक लन्दन अयला पर स्वागत कयने छल, आ ओसभ किछु दिनक बाद भारत घुर वासँ पूर्व महात्माजी केँ जतेक देखि सकल, ततवा देखलक। ओ कहैत छथि 'हम रोमांचित भऽ उठल रही जे पूर्वी आ पश्चिमी सभ देशक लोक हुनका ओतए जुटल छल···एहि बातक प्रमाण छल जे असल महत्ताक सर्वदेशीय प्रशंसा होइछ।"

घुरलाक बाद सरोजिनी नायडू भाषण देवाक हेतु अपन यात्रा फेर शुरू कऽ देलनि। महात्मा गाँधी लन्दन में दुःखित पड़ि गेलाह आ हुनका पूर्ण विश्रामक निर्देश देल गेलनि। जखन ओ 1915 में भारत घुरलाह तँ गोखले हुनका कोनो काज हाथ में लेबा सँ पहिने पूरे एक वर्ष धरि आराम करऽ कहलथिन जकर ओ पूर्ण पालन कयलनि। अतः, महात्माजी सँ पूर्व किछु वर्ष धरि लोक सरोजिनी केँ वेसी नीक जकाँ जनैत छल। मुदा, दक्षिण अफ्रिका मे एहि संतक जीवन देखि सरोजिनीक दृष्टि हुनका प्रति प्रशंसात्मक भऽ गेल छलनि तथा अपन पोथी 'दि ब्रोकन विंग' मे ओ हुनका सम्बोधित कऽ एक कविता लिखलनि।

1916 मे महात्मा गाँधी काँग्रेस सम्मेलन मे उपस्थित भेलाह आ भारतक राजनीति मे शामिल भऽ गेलाह। एतऽ ओ सरोजिनी केँ मुख्य भूमिकाक निर्वाह करैत पौलनि। भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस मे अपन कविता 'जागू' सुनाकऽ एक वर्ष पहिने ओ बम्वइ मे डंका पीटि देने छलीह।

1916 सँ स्वतंत्रता आन्दोलन एक निश्चित रूप लेलक। चम्पारणक घटना महान्माजी केँ सेहो प्रकाश मे लऽ अनलकनि। ओ दक्षिण अफ्रिका दिस सँ हँटि

अपन नातृभूमि मे अधिक रुचि लेवए लगलाह। स्वायत्त शासन, ऋणी वन्धुआ मजूर, हिन्दू-मुस्लिम एकता आ अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण विषय महात्माजी आ सरोजिनी कें एक संग मिलि काज करवाक लेल उन्मुख कयलक, देशक पीड़ित जनता पर अपन आँचर पसारैत। 1919 में रौलट एक्ट वा कारी विधेयक कें पारित भऽ गेला उत्तर देश मे गम्भीर असंतोष पसरि गेल तथा विरोध मे प्रवल आन्दोलन प्रारम्भ भऽ गेल। ओकरा पारित होयवाक पहिनहु ओकरा कानून वनव। सँ रोकवाक हेतु वहुत प्रयत्न कयल गेल छल। मार्च 1919 मे महात्मा गाँधी सावरमती आश्रम मे एक सम्मेलन वजौने छलाह। खाली एक दर्जन व्यक्ति आमंत्रित कयल गेल छलाह जाहि मे सरोजिनी नायडू सेहो छलीह। सत्याग्रहक प्रतिज्ञाक प्रारूप तैयार कयल गेल छल, जाहि पर हस्ताक्षर कयनिहार मे सरोजिनी नायडू सेहो छलीह। अप्रैलक हड़ताल सँ पूर्व सरोजिनी देशक विभिन्न भाग मे भाषण देलनि। वक्तृत्वक हुनक असाधारण देन लोक कें आश्चर्यजनक रूप सँ जाग्रत कऽ देलक। मार्च 1919 में ओ मद्रास मे एक विशाल जनसभा कें सम्वोधित कयलनि आ गाँधीजीओ सत्याग्रह मे अपन पूर्ण निष्ठा प्रकट कयलनि, 'कारण सत्याग्रह मे आन्दोलन सांयोगिक जीवनक एक सिद्धान्त थिक जकरा अवश्ये वढ़ऽ आ पसरक चाही, किएक तँ एकर भीतर जीवनक अमर क्रिया सन्निहित छैक, आ एहि लेल सत्याग्रह आन्दोलन ओहि मन्दिर वा आश्रम मे अपन ज्वाला प्रज्वलित कयने अछि जतऽ महात्मा गाँधी प्रधान पुरोहित अथवा गुरु छथि। 'सत्य वाजव नीक थिक, मुदा सत्य जीयव आर अधिक नीक', कहने छलीह ओ।

6 अप्रैल 1919 कें एक सर्वव्यापी अखिल भारतीय हड़ताल आयोजित कयल गेल छल। वम्वइ मे आन्दोलन विशेष रूप सँ सफल भेल। मुसलमान आ हिन्दू एकजुट भऽ काज कयलक। महात्मा गाँधी आ सरोजिनी कें एक मस्जिद मे लऽ जायल गेल जतऽ दुनूक भाषण भेल। दोसर दिन अमृतसर जाइत काल गाँधीजी कें पकड़ि लेल गेलनि। तखन जलियाँवाला वागक कहर टूटल। जलियाँवला वाग मे कयल गेल एहि दारुण कृत्यक विरुद्ध घृणाक भावना एतेक तीव्र छल जे रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपन 'नाइट' क पदवी आपस कऽ देलनि आ वाद मे गाँधीजी सेहो अपन 'केसरे हिन्द स्वर्णपदक'। स्वतंत्रता-आन्दोलन अपन वाट पर आगाँ वढ़ि चुकल छल आ अहिंसक सत्याग्रही सेना असंख्य रूप सँ वढ़ल जा रहल छल। माँटफोर्ड सुधार, वेल्सक राजकुमारक आगमन तथा महायुद्ध मे अंग्रेजक हित-लेल भारत द्वारा रक्त वहौलाक अछैतो एकरा सँ जे सामान्य व्यवहार कयल गेल—एहि सभ वात सँ क्रमशः एक रोप उत्पन्न भेल जे बढ़ए लागल आ मुसलमानो संघर्ष मे शामिल भऽ गेल, विशेष रूप सँ तखन जखन भारतीय खिलाफत आन्दोलन स्पष्ट कऽ देलक जे मध्य-पूर्व मे मुस्लिम-हितक निमित्त हिन्दूक सहानुभूति कतेक अधिक छल।

वेल्सक राजकुमारक आगमन काल जे हिंसा फुटल छल आ चौरीचौड़ा मे जे गड़वड़ भेल छल ताहि सँ व्यथित भऽ गाँधीजी वास्तव मे कहि उठल छलाह "हमर नाकक पूड़ा मे स्वराजक दुर्गन्ध आवि रहल अछि।" ओ शान्तिक आह्वान कयलनि, मुदा जनता जेना अनुपातक भावना विसरि गेल हो। सरोजिनी हिंसाग्रस्त क्षेत्र मे काज करैत एक संदेश पठौलनि "कृपा कऽ एक शल्यचिकित्सक शीघ्र पठाओल जाय, सकड़ पर मृतक, म्रियमाण आ घायल लोक पड़ल अछि। अपन लोकक पापक हेतु गाँधीजी अनशन कऽ रहल छलाह आ हुनक अनुयायी शान्ति स्थापित करबाक लेल दिन-राति काज कऽ रहल छलाह। एक लेखकक अनुसार "श्रीमती सरोजिनी नायडूक साहसक विषय मे की कहू ! समय-समय पर ओ गड़वड़ीवला विभिन्न क्षेत्रों मे दंगाकर्मीक वीच जाइत छलीह आ सभ बेर आपस महात्माजी केँ अपन वीर-कर्मक सूचना दैत छलीह, सँगहिँ दोसर क्यो जे भीरुता-पूर्ण काज करैत छल, ओकरो अत्यन्त नाटकीय ढंगे उल्लेख करव नहि विसरैत छलीह। एहि प्रकारें सभ लोकमे सँ ओ कखनो-कखनो दुख आ चिन्तोक वीच महात्माजीक ठोर पर मुस्की आनि दैत छलीह।"

10
दि ब्रोकन विंग

1917 मे 'दि ब्रोकन विंग' (टूटल पाखि)क प्रकाशनक संगहि सरोजिनीक कविताक उत्पादन समाप्त भऽ गेल, खाली गीतक सामयिक उद्वेग टा बाँचल। कविता रचना सँ बचबाक अनेक कारण प्रतीत होइछ। प्रायः सभ सँ संभाव्य तथ्य ई छल जे आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे ओ जमि नहि सकलीह। बीसम शताब्दीक दोसर दशकक आरम्भे सँ जारजियन कविता लोकप्रिय भऽ गेल छल आ सरोजिनी जनैत छलीह जे ओ एहि नवीन स्वतंत्र लेखक मंडलीक समीपो मे पहुँचलि नहि छलीह। आव ओ पुरान सम्प्रदायक मानल जाय लगलीह आ एक नव सम्प्रदाय शुरू भऽ रहल छल। ई सम्प्रदाय प्रथम विश्वयुद्धक बाद अपन आक्षेपपूर्ण आ अजनवी छटाक संग उद्भूत भेल छल, आ ई ओ क्षेत्र नहि छल जाहि मे सरोजिनी अपन गीतक नियम आ उपनियम तथा रीतिक प्रति आसक्ति क संग प्रवेश करितथि।

दोसर कारण ई रहल होयत जे सरोजिनी अनुभव कयलनि जे ओ वास्तविक दार्शनिक पद लिखबा मे असफल भऽ रहलि छथि, जेहन प्रयास ओ दि ब्रोकन विंग मे कयने छलीह। 1915 मे ओ जखन अपन भावी पोथीक शीर्षक कहलथिन तँ गोखले पुछने रहथिन "अहाँ सदृश गाबएवाली पक्षीक टूटल पाखि किएक ?" प्रायः ओ अनुभव कयलनि जे आब हुनक गीतात्मक विषय समाप्त भऽ गेलनि अछि आ जोड़वालेल हुनका लग कमे बचल छनि। संसार क्रमहि अधिक दुःखान्त आ गम्भीर भेल जा रहल छल आ ओ तँ एक गावएबाली पक्षी छलीह। विश्वयुद्धक एहि अराजक युग में पक्षीक स्थान कतए ? गोखलेक प्रश्नक उत्तर, तथापि, गोङि-आएल नहि छल, अपितु पूर्ण विश्वास सँ ओतप्रोत छल :

हम उठी, निहारू, करय भेंट भावी वसन्त सँ
आ नापव तारालोक केँ अपन टूटल पाखि सँ।

जनिक पाखि सूर्य-किरण सँ जरि गेल छल, तैयो जे राम केँ सहायता कयने छल, ओहि गरुड़क समान आहतो भेला पर हुनका अपन कठिनता आ समस्या सँ ऊपर उठबाक छलनि आ तारामण्डल केँ नपबाक छलनि। एही बात पर ओ 1947 में एशियायी सम्मेलनोक अपन भाषण मे जोर देने छलीह।

'दि ब्रोकन विंग' क समर्पण मे ओ अपना समक्ष जे काज रखने छलीह से दुर्भाग्यपूर्ण छल। एहि मे कवि कें दर्शनक अतिरिक्त भारतीय महिला आ राष्ट्रीय सेवा सँ आबद्ध होयबाक लेल कहल गेल छल। विविध विषय एक-दोसर सँ मिलि नहि सकैछ। कविता एकाकी होइछ आ 'जीवन आ मृत्युक गीत, 'स्मारक गद्य, संगीतक गीत' सन विषय पर अछि आ अन्त मे अछि 'मन्दिर', प्रेमक तीर्थयात्रा, (तीन काण्ड मे)। एकाकी गीत तँ प्रायः ओतबे सुन्दर अछि, जतेक पहिनहुँ छल, किन्तु ओकर त्रिक एक श्रद्धालु स्त्री द्वारा अपन प्रेमीक प्रति अपन हृदय खोलि कऽ कहबाक अपन उद्देश्यमे चुकि गेल अछि, प्रायः हुनक अभीष्ट मर्त्य आत्माक प्रति 'दिव्य'क आह्वान कें प्रतीकात्मक रूप मे प्रस्तुत करब छलनि।

समर्पण सँ शुरू करी तँ लगैछ जे एहन कोनोटा कवि सफल नहि भऽ सकैछ जे प्रचारक उद्देश्य सँ अथवा सुनिबद्ध विचार कें (आवश्यक नहि जे ओ अन्तः प्रेरित हो) आगाँ बढ़यबाक निमित्त लिखैत अछि। 1916 मे लिखल गेल 'दि ब्रोकन विंग' समर्पित कयल गेल छल आजुक स्वप्न आ कालहुक आशा कें। ई शब्द सरोजिनीक काव्य शैलीक एकदम अनुरूप अछि। मुदा, जाहि उद्देश्य सँ प्रस्तावना एक सरल अल्पजीवी कवि कें नपैत अछि, से पाठकक बुद्धिक बाहर अछि, कारण कला कें 'एक सूत्र में समटल नहि जा सकैछ।'[1] हुनक प्रस्तावना एक सूत्र सँ कम नहि अछि, देखबा मे मीठ—उबिआयल कार्य सँ आच्छादित— एक दोष जे भारतीय लेखक मे सुस्पष्ट अछि।

प्रस्तावना पढ़बाक अतिरिक्त एहन लगैछ जे पोथी कें छोड़ि देल जाय। मुदा, हम पहिने सरोजिनीक कविताक एतेक आनन्द उठा चुकल छी तँ किछु पन्ना पढ़बाक साहस करी आ देखी जे ओ की कहऽ चाहैत छथि।

जीवन आ मृत्युक गीत तथा अन्य सामयिक पद्यक अतिरिक्त 'दि ब्रोकन विंग' क अन्तिम खण्ड मे जे मन्दिर (प्रेमक तीर्थयात्रा) नामक एक त्रिक अछि, चौबीस गोट कविता अछि—प्रेति भाग में आठ-आठ। तीन उपशीर्षक एहि तरहें अछि—

'आनन्दक द्वार' जे प्रेम कें पूरा होयबाक सूचना दैछ, बालिकाक जीवन अपन प्रेमीक लेल समर्पित छैक आ कामनाक प्रोज्ज्वल वेदी पर सभ किछु चढ़ा देल गेल छैक, 'नोरक बाट' जे बालिकाक विषयेच्छाक क्रमशः निराशाजन्यता थिक, आ आखिरी मे 'शरणस्थली' प्रेमक दुःखान्त नाटकक चरमोत्कर्ष आ एक प्रकारक अस्वीकृति, जकरा लेल ओ दुखी छथि।

कम सँ कम हमरा ऊपर सँ ई छाप पड़ैत अछि जे ई उद्वेजक भावना आ परिहार थिक जकर ओहि कालक सरोजिनीक निजी भावात्मक उद्वेलन सँ कोनो सम्बन्ध रहल होयतैक, जँ एहन कोनो बात छल तँ। बुझि पड़ैछ जे रोमांस मे तेहन

1. कीं टु माडर्न पोएट्री, ले० लारेंस डर्नेल।

कोनो पैघ निराशा भेल होयतनि, जाहि लेल ओ अपन सर्वस्व बलिदान कऽ देने छलीह। आब ओ प्रत्येक रुमानी विषयेच्छा कें तिलांजलि दऽ देने छथि आ कह-वाक चाही जे एक नव जीवन शुरू करैत छथि। मानवीय प्रेमीक प्रति ई कामना दिव्यत्वक प्रतीक थिक आ सरोजिनी आध्यात्मिक शीर्ष पर पहुँचवाक चेष्टा करैत छथि, किन्तु निराशाजनक रूप सँ असफल भऽ जाइत छथि, कारण एतऽ हुनक कविता ओहि किछु रहस्यवादी पद्य जकाँ अन्तःस्फूर्त नहि अछि जेहन ओ पहिने लिखने छलीह आ जाहि मे सँ तीन टा एतेक विलक्षण छल जे ओकरा 1917 मे 'दि आक्सफोर्ड बुक ऑफ इंग्लिश मिस्टिकल वर्क्स' मे समाविष्ट कऽ लेल गेल छल। 'प्रेमक तीर्थयात्रा' मन्दिरक वास्तुरचनाक प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियो थिक, द्वार, पवित्र स्थल दिस जायवला मार्ग आ स्वयं शरणस्थली।[1] एक समालोचक हमरा ईहो कहलनि जे मन्दिर प्रेमीक निवासस्थल थिक। आध्यात्मिक रूप सँ ई सर्जनात्मक जगत थिक तथा तीर्थयात्रा अवतार। अन्ततः ई कविता सभ वैष्णव मत आ राधाकृष्ण-सम्प्रदाय सिद्धान्तक अनुसरण करैत अछि। संगहिं, ई सुकन्या, सावित्री आ अनसूया—सन महती पतिव्रताक आख्यान दिस सेहो इंगित करैछ।[2] ई सभ कतेक जटिल अछि, विशेष रूप सँ जखन कि ई भाव चौबीस छोट-छोट पद्य मे मात्र उपस्थापित कयल गेल छैक, ओकरा तँ महाकाव्यक स्थिति मे होयवाक चाहैत छलैक।

'प्रेमक तीर्थयात्रा' मे, विशेष रूप सँ अन्तिम कविता मे, सरोजिनी आत्मकरुणा सँ परिपूर्ण छथि। पहिलो भाग एहि दुर्बलता सँ बाँचल नहि अछि जे सरोजिनी अपन प्रत्येक काव्य-उत्पादन मे प्रदर्शित कयलनि अछि। दोसर भाग मे 'जीवनक आतंक' मे ओ क्रोध आ निराशा प्रदर्शित करैत छथि :

'अहींक स्वच्छन्द हृदयक कोलाहल
करत आक्रांत अहीं कें
अभिलाषाक शक्तिशाली निद्राविहीन पाँखि सँ
तीव्र क्षुधा अहाँक नाड़िएकें काटत अहीं में
अग्निक दुर्दान्त तीक्ष्ण दाँत सँ।
जखन यौवन आ वसन्त-कामना छल तँ अहाँ कें
आ हँसी उड़ाओत अहाँक अहंकारी विद्रोहक हारि सँ,
जानथि ईश्वर, हे प्रिय, हम अहाँ कें बचायब कि मारब

---

1. दि टू फोल्ड वाइस, ले० डि० वाइ० के० राघवाचार्यूलू, एसे ऑफ सरोजिनी नायडू, ले० रा०।
2. दि टू फोल्ड वाइस, ले० डि० वाइ० के० राघवाचार्युलू, एसे ऑफ सरोजिनी नायडू, ले० रा०।

जखन खसि पड़ब अहाँ हमर पयरपर,
चुकल-चुकल, टुटल-टुटल ।'

निश्चयतः 'काटत' सन शब्दक प्रयोग आ कुकूरक तीक्ष्ण दाँत सँ उपमा शालीन नहि अछि। को सरोजिनी आधुनिक कविक स्वच्छन्द शब्दावलीक प्रयोग करबाक प्रयास कयने छलीह, किन्तु अपन विक्टोरियन कविताक चौकठि मे ओकरा ठीक सँ ठोकबा मे असफल रहलीह ?

'प्रेमक तीर्थयात्रा' मे हँसी उड़ाओल गेलाक बाद 'प्रेमक पुरस्कार' मे ओ कहैत छथि :—

घुराउ जुनि हमर विगत उल्लास
निषिद्ध आशा आ अप्राप्त स्वप्न···
नष्ट उद्देश्य आ टूटल अभिमान···
स्वीकार करू घंटा भरिक अल्प दया मे
दान अश्रुक, बचाबऽ हमर दुखी आत्मा केँ ।
अपन कुकूरकेँ खुआबऽ चाही तँ लऽ लियऽ हमर मासु
चाही तँ लऽ लियऽ हमर रक्त अपन उद्यान केँ पटाबऽ ले'
कऽ दियऽ हमर हृदय केँ छाउर आ सपना केँ धूरा—
की हम अहाँक छी नहि, प्रिय, चाहऽ वा मारऽलेल ?
मोकि दियऽ हमर आत्माक कंठ आ झोंकि दियौ आगि मे ओकरा ।
वास्तविक प्रेम हमर लड़खड़ायत किए, किए डेरायत वा करत विद्रोहे
प्रिय, हम अहाँक छी अहाँक हृदय मे अवस्थित रहऽ ले' फूल-सन
किंवा अहाँक हेतु जरबा ले' अहींक ज्वाला मे खढ़ जकाँ ।

एक समालोचक सँ हमर एहि बात पर सहमति नहि अछि जे 'मन्दिर' क "ई कविता सभ महानतम नियंत्रित सफलता थिक···। पोतुगीज मे लिखल गेल श्रीमती ब्राउनिंगक सॉनेटक अतिरिक्त, एक स्त्री द्वारा पुरुषक प्रति उच्छिष्ट एहि प्रकारक भावना क आन दोसर काव्य-शृंखला नहि अछि।"[1] जेम्स एच० काजिन्सक मत वेसी समीचीन बुझि पड़ैछ 'प्रेम मे हुनक एकाग्रता एक अन्हरायल गली मे जाइत प्रतीत होइत अछि आ अपन कलाक एहि विशिष्ट अंगक अनुसरण करैत ओ कखनो काल जे उपलब्ध करैत छथि, ओ अप्रामाणिके सदृश कहि सकैत छी, संगहि एक भावात्मक अस्वच्छता सेहो जे हुनक कला केँ कखनोकाल कलुषित कऽ दैत छनि ।" हमर कवयित्री स्वयं केँ भावातिरेक मे डुबा देने छथि जे आत्माक स्पष्ट दृष्टि केँ मटमैल कऽ दैत अछि, आ सुनिश्चित कुरूपताक रूप मे ओकरा दण्ड देवऽ पड़ैत छैक ।"[2]

1. इंडियन राइटिंग्ज इन इंगलिश, ले० के० आर० श्रीनिवास अयंगार, पृ० 184 ।
2. दि रिनासाँ ऑफ इंडिया, ले० जेम्स एच० काजिन्स ।

किन्तु, जकरा 'मन्दिर' (प्रेमक तीर्थयात्रा) मे शामिल नहि कयल गेल छैक, ओ 'दि ब्रोकन विंग'क आरम्भिक कविता सभ ओतवे सुन्दर अछि जतवे हुनक पूर्वक कविता।

'सेल्यूटेशन टु माइ फादर्स स्पिरिट' नामक अपन पिता पर लिखल गेल हुनक उत्कृष्ट कविता मे हुनक निजी जीवनक एक झलक भेटैत अछि। प्रस्तुत सानेट हुनक पिताक मृत्युक समय 28 जनवरी 1915 कें रचल गेल छल।

केवल किछुए दिनक अन्तराल मे अपन पूज्य पिता आ गोखलेक विछोह सँ सरोजिनी कें बहुत हानि भेलनि। गोपाल कृष्ण गोखले 19 फरवरी 1915 कें दिवंगत भेलाह आ सरोजिनी अपन कविताक नीचाँ मे निम्नलिखित श्रद्धाँजलि लिखलनि—"गोपाल कृष्ण गोखले, महान संत आ हमर राष्ट्रीय न्यायक सैनिक। हुनक जीवन एक धर्मकार्य छलनि आ हुनक मृत्युक भारतीय एकताक लेल एक बलिदान छल।"

गोखले सँ एक मास पूर्वे अघोरनाथ दिवंगत भेल छलाह तथा ओहि समय अपन आगत मृत्यु सँ अनजान गोखले सरोजिनी कें हुनक पिताक विषय मे लिखने छलथिन "हम चाहैत छी जे हम अहाँक समीप मे रहितहुँ जाहि सँ व्यक्तिगत रूप सँ भेंट कऽ सकितहुँ। आशा अछि जे अहाँक दुख गीत बनिकऽ फुटत आ अमर भऽ जायत।" सरोजिनी बाद मे लखलनि, "ई शब्द। 2 फरवरी कें लिखल गेल छल, स्पष्टत: तीव्रता सँ अबैत अपन अन्तक पूर्वाभासक बिना।"

गंभीर विचार आ सघन अनुभूतिक स्त्री होयबाक कारण सरोजिनीक हेतु 1915 एक दुखद वर्ष छल आ ई आश्चर्य नहि जे ने केवल एहि वर्षक पीड़ा, अपितु निराशा सेहो हुनक पोथी 'दि ब्रोकन विंग' मे प्रतिबिम्बित अछि। एहि पोथी मे ओ स्वयं कें ब्रह्माण्डीय रहस्यवाद मे विलीन कऽ दैत छथि। अनन्त एकताक हेतु हुनक उत्कंठा आ उत्साह मातृवेदी पर रचित कविता मे एकाएक भऽ जाइत अछि—

काली माँ

समवेत स्वर—हे भयंकर आ कोमल आ दिव्य
हे समग्र बलिक रहस्यमयी माँ
हम सजा रहल छी तोहर मन्दिरक गहन वेदी,
कुँकुम-अक्षत आ पवित्र पत्र सँ,
अनैत छी हम तोरा लेल समस्त उपहार जीवन मरणक
हे उमा! हैमवती!
कुमारि—हम अनैत छी तोरा लेल वन सँ बैर आ कली:
वधू—हम अनैत छी उल्लास वधूक प्रार्थनाक।
माय—हम अनैत छी मातृत्वक सुमधुर पीड़ा।

विधवा—आ हम निराशाक कटु जागरण ।
समवेत स्वर—अनैत छी हम तोरा लेल समस्त आनन्द आ दुःख समस्त,
हे अम्बिका ! पार्वती !
शिल्पी—अनैत छी हम धरतीक निम्न श्रद्धांजलि !
किसान—अनैत छी हम पडुकी आ गहूमक सीस !
विजेता—आ हम अपन खडग आ प्रतीक परिश्रम ।
विजित—आ हम पराजयक लज्जा ओ व्यथा ।
समवेत स्वर—अनैत छी हम तोरा लेल सम्पूर्ण विजय आ समस्त अश्रु,
हे गिरिजा ! शाम्भवी !
विद्वान—अनैत छी हम प्राच्य कलाक रहस्य ।
पुरोहित—अनैत छी हम पुतातन विश्वासक खजाना ।
कवि—आ हम हृदयक सूक्ष्म संगीत ।
देशभक्त—आ हम अपन कार्यक निद्राहीन पूजा ।
समवेत स्वर—अनैत छी हम तोरा लेल समस्त यश आ सकल महिमा
हे काली ! महेश्वरी !

1 मइ 1935 कें सरोजिनी नायडू अमरनाथ झाकें कहने कहने छलथिन जे 'दि ब्रोकन विंग' में मन्दिर (प्रेमक तीर्थयात्रा) क तेसर भाग 'शरणस्थली'क कविता 'प्रेमक आभास' कें ओ अपन सभ सँ नीक कविता मानैत अछि—

प्रिय, अहाँ होयब ओहने जेहन कहैत अछि लोक
केवल एक छिटकल चमक
माटिक दीपक मिझाइत टेमक—
परवाहि नहि हमरा···किएक तँ अहाँ आलोकित कऽ दैत छी हमर
समस्त अन्हार कें ।
दिनक अमर आभा-सम !
जेनो सभ लोक कहैत अछि, प्रियतम, अहाँ होयब,
खाली एक मामूली शंख
हवाक झोंक मे समुद्र सँ कहियो उछालल गेल—
परवाहि नहि हमरा, किएक सँ अहाँ सुनबैत छी
अनन्तक सूक्ष्म मर्मर-ध्वनि ।
आ, यद्यपि छी अहाँ, मर्त्यजातिक मानव सदृश
खाली एक अभागल वस्तु
मृत्यु जकरा मारि देअय अथवा मेटा देअय भाग्य
परवाहि नहि हमरा···किएक तँ हमरा हृदय कें
अहाँ दैत छी हू-ब-हू दर्शन ईश्वरक निवासक ।

11
स्वाधीनता-संग्रामक जन्म

आओर आव सरोजिनी अपन प्रिय मनोरंजन काव्य-लेखन केँ करीब-करीब त्यागि, स्वयं केँ स्त्रीक मुक्ति आ स्वाधीनता संग्राम मे झोंकि देलनि। तथापि, ओ अपना केँ गीतकार बुझब कहियो छोड़लनि नहि आ ई बुझि पड़ैछ जे ओ मनेमन आर अधिक कविता लिखऽ चाहैत छलीह। 1928 मे ओ अपन परम मित्र अमरनाथ झा केँ कहने रहथिन जे ओ 'प्रभातक पाँखि' नामक एक पोथी लिखऽ चाहैत छथि। श्री झा कहैत छथि, "एहि संग्रहक सम्बन्ध मे हम आर अधिक नहि सुनलहुँ आ हमरा आशंका अछि जे ओकर कविता कतहु लुप्त तँ ने भऽ गेल।"[1] मुदा, ई जानब रुचिकर अछि जे 'फेवर आफ डॉन' (प्रभातक पाँखि) शीर्षक सँ एक पोथी 1961 मे प्रकाशित भेल जाहि मे हुनक अप्रकाशित रचना अछि। 'हैदराबाद पोएट्री सोसाइटी' एक पातर संग्रह प्रकाशित कयलक अछि जकर विषय मे श्री झा कहैत छथि, "ई एक आकर्षक उत्पादन अछि। आवरण पर अजन्ताक एक भित्ति-चित्रक छायाचित्र अंकित अछि, आ पोथी हैदरावादक हाथक वनल कागत पर छपल अछि।"[2] एहि मे सरोजिनीक दू गोट अप्रकाशित कविता अछि जे हुनक कविताक बाद मे प्रकाशित संग्रह 'सेप्टर्ड फ्लू' (राजदंडीकृत वंशी) मे नहि अछि। हैदरावादक पोथी मे भगवान कृष्णक सम्बन्ध मे दू गोट कविता अछि 'वंशीवादक' तथा 'वटुक कन्हैया'। अतः सरोजिनी किछु सीमा धरि अपन काव्य-प्रदीप केँ प्रज्वलित रखलनि, यद्यपि ओ बूझि गेल छलीह जे अपन देशक स्वतंत्रता-प्राप्ति मे आ राजनीति मे ओ निमग्न भऽ गेलि छथि। जहल आ पदयात्रा, जुलूस आ जन मंच आ हड़ताल काव्यदेवीक प्रोत्साहनक लेल बड़ कठिने सहायक छलीह। ओ भऽ सकैत छल। मुदा, कविता लिखबाक अपन प्राकृतिक देन केँ छोड़ि देने ओ दुखी 'दि ब्रोकन विंग' में लिखने छथि—

"की अहाँ नापि सकै छी हमर अश्रुक वेदनाक गंभीरता केँ

---

1. सरोजिनी नायडू, ले० अमरनाथ झा, पृष्ठ-11
2. सरोजिनी नायडू, ले० अमरनाथ झा, पृष्ठ-21

अथवा नापि सकै छी की हमर पहराक व्यथा कें ?
किंवा ओहि गर्वे कें जे हमर हृदयक निराशा कें पुलकित करैछ
आ ओहि आशा कें जे प्रार्थनाक वेदना कें पोल्हबै छै ?
आ ओ सुदूर, उदास, महिमामय दृश्य जे हम देखै छी
विजयक फाटल रक्त-पताकाक ?"

स्वदेशी आन्दोलन आब जोर पकड़ि लेने छल, विशेषतः 1905 मे जखन काँग्रेस बंगाल-विभाजनक विरोध कयने छल। 1915 मे ई राष्ट्रीय संस्था अपना कें पुनः ओहि रंग मे रंगि लेलक आ 1916 मे हिन्दू-मुसलमान एक संग मिलि काज करैत किछु नवीन सुधार आगाँ रखलक।

लोकमान्य तिलक 1911 मे 'होमरुल लीग' आरम्भ कयलनि। एनी बीसेंट देश मे सम्पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रताक भावना जगौलनि। महात्मा गाँधी सेहो आब हाथ मे लाठी लऽ लेलनि आ सरोजिनीयो युद्ध मे खुशी-खुशी कूदि गेलीह।

अमरनाथ झा 1917 क एक मनोरंजक घटनाक स्मरण करैत छथि "एक सम्मेलन मे सरोजिनी कें भाषण देबाक छलनि आ ओ अपन एक मित्र सँ कहल-थिन "गाँधीजी अंग्रेजी भाषण नहि चाहैत छथि। हम हिन्दुस्तानी मे बाजब नहि जनैत छी। हम की कहू अहाँ कें ! जखन हम ठाढ़ होइ, विद्यार्थी द्वारा 'अंग्रेजी-अंग्रेजी' हल्ला करवा देबैक।" 'मुदा वास्तव मे' श्री झा कहैत छथि 'ओ माजल फारसी-प्रधान उर्दू मे बजलीह।"[1] वास्तव मे उर्दू पर हुनक पूरा अधिकार छलनि, मुदा ओ अधिक ठाम अंगरेजी मे बाजब पसिन्न करैत छलीह, सम्भवतः भारतक सभ भाग मे श्रोतागण चुस्त उर्दू खूब नीक जकाँ नहि बूझि सकैत छल, जेना अंग्रेजी बूझैत छल। सरोजिनी जखन बिहार विद्यार्थी सम्मेलनक अध्यक्षता कयलनि तँ ओ उर्दू मे भाषण देलनि, मुदा हुनक कमेंटेटरक अनुसार "ओ अपन अध्यक्षीय भाषण उर्दू मे देलनि जे उपस्थित लोक सहजता सँ नहि बूझि सकल।"[2]

सरोजिनी नायडू जवाहरलाल नेहरु सँ सर्वप्रथम 1916 मे लखनउ-कांग्रेस सम्मेलन मे भेँट कयलनि। गाँधीयोजी सँ ओही समय भेट भेल छलनि। ओ सरोजिनीक विषय मे लिखने छथि, "मन पड़ैत अछि जे हम ओहि समय सरोजिनी नायडक अनेक धाराप्रवाह भाषण सँ प्रभावित भेल छलहुँ। ओ पूर्ण राष्ट्रीयता आ देशभक्तिक युग छल आ हम पूर्ण रूप सँ राष्ट्रीय छलहुँ, कालेज दिनक हमर अस्पष्ट समाजवादी विचार पृष्ठभूमि मे चल गेल छल।"[3]

राष्ट्रीय चेतनाक ई सचेतक वर्ष ओहि महान प्रयत्नोक कारण महत्त्वपूर्ण

---

1. सरोजिनी नायडू, ले० अमरनाथ झा, पृष्ठ-7
2. सरोजिनी नायडू, ले० अमरनाथ झा, पृष्ठ-8
3. एन आटोबायोग्राफी, ले० जवाहरलाल नेहरु, पृष्ठ-38।

छल जे मार्गरेट ई० कजिस, एनी बीसेंट, सरोजिनी नायडू तथा अन्य प्रवर्तक स्त्री स्त्री-मुक्तिक लेल कयने छलीह। एकरा आकस्मिके घटना कहव जे 1917 मे इन्दिरा गाँधीक (भारतक तेसर प्रधानमंत्री) जन्म भेल छलनि जे ई साहित करैछ जे कोना पचास वर्ष मे महिला प्रायः शून्यक स्थिति सँ लगभग उच्चतम शिखर पर पहुँचि चुकल अछि। 19 नवम्बर 1917 कें हुनक जन्म भेला पर सरोजिनी भविष्यवाणी करैत जवाहरलाल नेहरु कें लिखने रहथिन के हुनक पुत्री 'भारतक नवीन आत्मा' होयतीह।

1919 मे सरोजिनी तेसर बेर विलेत गेलीह। तखन ओ पूर्णरूपेण भारतक स्वाधीनता संग्राम मे भाग लेबऽ वाली, किन्तु शान्तिप्रिय योद्धा बनि गेलि छलीह। 1920 मे ओ भारत घुरलीह, आ तखन संघर्ष, हड़ताल आ मोकदमाक एक सिलसिला शुरू भऽ गेल। 1922 मे महात्मा गाँधी पर मोकदमा चलाओल गेलनि। सरोजिनी कचहरी मे उपस्थित रहैत छलीह आ ओ मार्च 1922 कऽ बाम्बे कॉनिकल मे लिखलनि : "कानूनक दृष्टि मे एक बन्दी आ एक दोषी, तैयो एक स्वयंस्फूर्त श्रद्धाक रूप म समस्त कचहरी उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेल जखन मोटका ओ ठेहुन धरि धोती पहिरने एक दुब्बर-पातर गंभीर दुर्दमनीय आकृतिक महात्मा गाँधी प्रवेश कयलनि, सँग मे छलथिन हुनक पट्ट शिष्य आ सहबन्दी शंकरलाल बैंकर "तँ अहाँ हमरा लग एहि लेल बैसल छी जे जँ हम टूटि जाइ तँ अहाँ टेकि सकी" ओ हँसी कयलनि, अपन गंभीरता मे विश्वजनीन शैशवक अमलिन दीप्ति कें नुकबैत हास्यक संग, आ चारू दिस सँ आयल सभ लोक कें देखैत बजलाह, "ई एक पारिवारिक सम्मेलन थिक, न्यायालय नहि।" न्यायाधीश, अपन निर्भय आ दृढ़ कर्तव्यनिष्ठाक लेल हमर प्रशंसाक पात्र, हुनक निष्कलंक विनम्रता, एक अद्वितीय अवसरक प्रति हुनक सुश्रद्धा। विचित्र मोकदमा आरम्भ भेल आ जहिना हम अपन प्रिय गुरु अक्षर सँ संतोचित उत्साह सँ दीप्त अमर शब्द कें बहराइत सुनलहुँ, तहिना हमर विचार शताब्दीपूर्व एक भिन्न देश आ भिन्न युग मे पहुँचि गेल जखन एक एही प्रकारक नाटक रचल गेल छल आ एक मिलैत-जुलैत साहस सँ एक मिलैत-जुलैत संदेश प्रसारित करबाक हेतु एक दिव्य आ सौम्य शिक्षक कें शूली पर चढ़ा देल गेल छल। हम आब बुझलहुँ जे निम्नवंशीय, नाद मे झुलाओल गेल नजारथक ईसा मात्र सँ भारतीय स्वतंत्रताक एहि अविजित नेताक इतिहास मे तुलना कयल जा सकैत अछि जे अतुलनीय करुणा सँ मानवता पर प्रेम करैत अछि आ हुनके सुन्दर वाक्यांश मे गरीब कें गरीबेक मन सँ बुझैत अछि।" महात्मा गाँधी कें छओ वर्षक जहलक दण्ड देल गेलनि। गाँधीजीक पकड़ल गेलाक बाद सरोजिनी हुनक काज कें आगाँ बढ़ौलनि तथा खद्धर पहिरिकऽ देश मे घूमब आरम्भ कयलनि।

दिसम्बर 1925 मे सरोजिनी नायडू कानपुर काँग्रेसक अध्यक्षा चुनल गेलीह।

अक्टूबर मे जखन हुनका भावी अध्यक्ष घोषित कयल गेल छलनि, ओहि समय बेलगाँव मे अध्यक्षता करैत महात्मा गाँधी बाजल छलाह जे "सरोजिनी केँ हुनक अपन स्थान भेटबाक चाहियनि।"

एक स्त्री केँ अध्यक्ष पद पर बैसब एक नवीन बात छल। गाँधी जी हुनका अपन कार्यभार न्यस्त कयलनि। सरोजिनी अपन अनुकरणीय ढंग सँ किछु चुनल शब्दावलीक संग कार्यभार ग्रहण कयलनि। हुनक अध्यक्षीय भाषण प्रायः पूर्वक समस्त अध्यक्षीय भाषण सँ छोट छल। ओ स्वयं भारतीय आ राजनीतिक दलक एकता पर जोर देलनि। ओ अपन देशवासी सँ भय त्यागि देबाक याचना कयलनि। "स्वतंत्रताक युद्ध मे भय एक अक्षम्य विश्वासघात थिक आ निराशा एक अक्षम्य पाप।"[1]

1. दि हिस्ट्री ऑफ दि इंडियन नेशनल काँग्रेस, पृष्ठ-294।

12
पत्र आ मित्र

सरोजिनी नायडू मे ने केवल लोकक संग स्थायी आ स्नेहमयी मैत्री वढ़यवाक कौशल छगनि, एहिमे सँ किछु एखनहुँ हुनक प्रशंसापूर्ण स्मरण करैत छथि, अपितु संगहिँ हुनक महान कार्य सम्प्रदाय, धर्म आ जातिक बीच विश्वास आ श्रद्धा जोड़व सेहो छलनि। मिस मेयोक 'मदर इण्डिया' संसार पर जे असरि छोड़ने छल ओकरा प्रभावहीन करवाक लेल भारतक असरकारी राजदूतक रूप मे हुनका अमेरिका पठयवाक महात्मा गाँधीक चुनाव वहुत बुद्धिमत्तापूर्ण छलनि जे ओ अपन सभ विश्वासपात्र अनुयायी मे सँ कऽ सकैत छलाह। अमेरिका सँ हुनका द्वारा लिखल गेल पत्र साहित्यिक दृष्टि सँ श्रेष्ठ रचना थिक, सावधानी पूर्वक रखवाक तथा पुनः प्रकाशन योग्य, रंगीन, सजीव, तथापि महत्त्वपूर्ण राजनीतिक अभिलेख तैयार करवाक सरोजिनीक प्रतिभा कें नपवाक लेल ओहिपर एक दृष्टि देव आवश्यक अछि।

हुनक यात्रा उत्तेजना पसारि देलक आ सरोजिनी प्रशंसा आ श्रद्धाक पात्र वनि गेलीह। 'दि न्यूयार्क टाइम्स' मे शीर्षक छल···

'भारतीय कवयित्रीक अमेरिका-यात्रा'। सरोजिनी नायडू ओहि परिवर्तन कें वुझौतीह जे अत्यधिक प्राचीन परम्पराक विरुद्ध भारतीय स्त्रीक जीवन मे भऽ रहल छैक।

वुझि पड़ैछ जे कविताक एक नव पोथी प्रकाशित करवाक वात छलैक, मुदा एहि प्रकारक संग्रह ओहि समय तैयार नहि भऽ सकल जखन सरोजिनी कें विभिन्न वर्ग मे भाषण-माला देवाक छलनि।

अमेरिकाक सभ भाग मे हुनक काव्यपाठोक पूर्ण प्रशंसा भेलनि। सर्वत्र हुनक विशिष्ट अतिथि-सत्कार कयल गेलनि, कवयित्री राजदूतक सम्मान मे देल गेल भोज मे ओ उपस्थित होइत छलीह, एक सम्मानीय अतिथि आ मित्रक रूप मे अमेरिकाक घर-घर गेलीह, आ खचाखच भरल श्रोताक वीच विस्तारपूर्वक भाषण देलनि। सरोजिनी न्यूयार्क सँ चमत्कृत भऽ गेलीह आ महात्माजी कें लिखल हुनक पत्र, जाहि मे कतोक 'यंग इण्डिया' मे प्रकाशित भेल छल, हुनक सम्पन्न भाषा

अंग्रेजीक ऊपर हुनक विशिष्ट अधिकारक सूचक थिक। सिनसिनाटी सँ, जतऽ कोनो समय नीग्रोक एक परम मित्र ओहि ठाम रहैत लेखन-कार्य करैत छलीह, ओ कहलनि 'हम लगले एक विशाल श्रोता समुदाय कें मिस्टिक स्मिनर'क सन्देश बुझाकऽ घुमल छी। (जनिक माता-पिता आ पितामह-पितामही ओहि समय मे हैरियट बीचर स्टो कें जनैत छलथिन जखन जो 'अंकल टाम्स केबिन'क मथि देवऽ वला कथा लिखि रहलि छलीह')। सरोजिनी अपन भाषण प्रेरक जकाँ दैत छलीह आ हुनका कहल गेलनि जे हुनका लग एहन संदेश छनि जे हुनका सुनऽ वला कें निरन्तर प्रेरणा दैत रहतैक। सरोजिनीक संदेश सेहो, हेरियट बीचर स्टो जकाँ, बन्धन सँ मुक्तिक संदेश छल, दोसर देशक हेतु दोसर संस्करणक रूप मे। एतऽ छल एक भ्रमणशील गीतकार द्वारा बुझाओल गेल 'मिस्टिक स्पिनरक सन्देश'।

हुनका केलिफोर्नियॉक पुष्पित मार्ग आ फेनिल क्षेत्र पसिन्न पड़लनि। प्रवासी मूल रूप सँ यैह सोचैत छल जे ओ आपस घर चल जायत। 'अतः ओ टारैत गेल, सामाजिक परम्परा आ शैक्षणिक उपलब्धि स्थापित करबाक कखनो चिन्ता नहि कयलक, अन्य आव्रजकक क्रिया-कलापक समान जे वास्तविक अर्थ मे अमेरिकी बनि गेल आ तें नवीन विश्वक नवीन राष्ट्रक एक आन्तरिक तथा स्वीकार्य एकाइ सेहो।' ओ निष्कर्ष बहार करैत छथि, 'अफ्रीका आ अमेरिकाक अपन सम्पूर्ण यात्राक बाद हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ अछि जे प्रवासी भारतीयक स्थिति कतहु तावत धरि कखनहुँ संतोषजनक नहि भऽ सकैछ जा धरि संसारक स्वतंत्र राष्ट्र मे भारतक स्थिति निश्चित रूप सँ आश्वस्त नहि भऽ जाइत अछि।

महात्मा गाँधी अमेरिका आ कनाडा मे अपन राजदूत द्वारा उत्पादित प्रभाव सँ बहुत प्रसन्न छलाह आ जुलाइ 1929 मे सरोजिनी जखन आपस अयलीह तखन ओ लिखलनि 'पश्चिम मे अनेक विजय कऽ घूमएवाली गीतकार आपस आबि गेलीह अछि। ई समये कहत जे हुनका द्वारा छोड़ल गेल छाप कतेक स्थायी होयत। अमेरिका सँ प्राप्त निजी श्रोतक सूचना कें जँ मापदण्ड मानी तँ सरोजिनी देवीक काज अमेरिकी मस्तिष्क पर गम्भीर छाप छोड़ि देलक अछि। देश मे हमर समक्ष उपस्थित अनेक जटिल समस्याक समाधान मे हाथ बटयबाक लेल ओ अपन विजय-यात्रा सँ बहुत शीघ्र आपस नहि भेलीह अछि। ओ हमरो पर वेंह जादू करथु जे अमेरिकी पर एतेक सफलतापूर्वक कयलनि।'

महात्माजी कें सम्बोधित हुनक पत्र अधिक काल पैघ होइत छलनि जाहि लेल ओ क्षमा मङैत छलीह, मुदा गाँधी जी उत्तर दैत छलाह जे हुनका 'दीर्घ प्रेम-पत्र' आ हुनक 'अपठनीय अक्षर' पसिन्न छलनि।

सरोजिनी 'सोनहुला देहरि' मे किछु समय धरि रहला पर अपन घरैया जीवनक वर्णन करैत पण्डित नेहरू कें लिखलयिन, 'प्रिय जवाहर, हम सोनहुला देहरि सँ लिखि रहलि छी, अपन नक्काशी कयल कारी लकड़ीक कोच पर बैसलि रस

टफरी, पावो नूरमी, निकोलो पिसानों आ डिकडिक महाजोंग— घरक चौपाया शासक हमर चारू दिश शान्तिपूर्वक पसरल अछि, प्रस्फुटित गुलमोहर आ वैगनी गुलाबक बीच उद्यान मे सूर्य-पक्षी आ मधुमाछी गावि रहल अछि। वम्बइ सँ सद्यः आयल नभ फीयेट कें देखि पद्मजा भावविभोर अछि। विलम्ब सं प्राप्त 'भाइगरा वैगन' आ फालसा शर्वतक रसास्वादन करैत गोविन्द प्रार्थना कऽ रहल अछि जे भगवान हमर उद्दिष्ट यात्रा-स्थलक चट्टान आ पानि मे ओकर छुट्टी नष्ट नहि करथुन।'[1] इएह अेहि स्वतन्त्र घरैया जीवनक वातावरण छल जाहि मे सरोजिनी एतेक प्रसन्न रहैत छलीह आ जे हुनका लेल पौष्टिक औपधक समान छल। समय-समय पर घर मे व्यतीत एहि अवकाशक विना ओ की कऽ सकैत छलीह? ओ लिखैत छथि, 'एक शब्द मे 1921 क बाद हम घर मे ई पहिल छुट्टी मना रहिलि छी, एक वास्तविक छुट्टी, जखन कि वाहरी चिन्ता, उत्तरदायित्व आ कर्तव्य रूपी प्रत्येक साँप स्वर्ग सँ वाहर अछि। नीचतापूर्वक, किन्तु वहादुरीक संग हम किछु सप्ताहक हेतु अपन मोर्चा छोड़ि देने छी, कारण जे हमर आत्मा तीव्रता सँ चाहि रहल छल पुरातन मित्र, वच्चा आ कुकुर, गीतकार कवि, खोता वनवैत पक्षी, फुलाइत वृक्ष आ सौन्दर्यक वातावरण कें तथा रचनात्मक कार्यक्रम आ अपन तथाकथित राजनीतिक स्त्रविनाशी कार्यक्रम सँ थोड़ेक आराम।'[2]

जेना-जेना विभाजनक समय लग अवैत गेल, सरोजिनी कें त्रासदीक अनुभूति भेलनि, हुनक हृदय सदा महात्माजीक संग छलनि जे पूर्वी वंगाल मे गाम-गाम भटकि रहल छलाह। 1942 मे महात्मा गाँधी कें शान्ति निकेतन सँ ओ लिखने छलथिन --

'ई पत्र नहि, स्नेह आ श्रद्धाक निश्चय थिक। जँ सम्भव होइत तँ एक्को क्षण लेल हम अपने लग पहुँचवाक चेष्टा करितहुँ। हम जनैत छी जे विना कोनो चेष्टाक हमर वंगाल छोड़ि देवा पर अपने स्वीकृति दऽ देव। हमरा अपने सँ ने भेँट करवाक आ ने किछु कहवाक प्रयोजन अछि, कारण जे अपने सदा हमर दृष्टि मे विद्यमान छी तथा अपनेक संदेश हमर हृदयक माध्यमे सदा संसार मे गूँजैत अछि।

प्रिय तीर्थयात्री, प्रेम आ आशाक तीर्थयात्रा पर प्रस्थान करैत 'भगवानक संग जाउ' (सुन्दर स्पेनी कथा मे)। हमरा अहाँक लेल कोनो डर नहि अछि— केवल अहाँक 'मिशन' मे विश्वास अछि।'[3]

सरोजिनी

---

1. ए वेंच ऑफ ओल्ड लेटर्स, पृष्ठ-42
2. वएह, पृ० 42
3. माइ डेज विद गाँधी, ले० निर्मल कुमार बोस, एसिया पब्लिशिंग हाउस, 1953, पृ० 139।

अमरनाथ झा कहैत छथि जे जखन ओ विलेँतक लेल प्रस्थान करबा पर छलाह तखन सरोजिनी हुनका वर्नार्ड शा, वाल्टर डी ला मेअर, हमवर्ट वुल्फ, मिसेज मुनरो आ लॉरेंस विनयनक नाम सँ परिचय-पत्र देने छलथिन। श्री झा कहैत छथि 'प्रत्येक पत्र आनन्ददायक शब्द मे लिखल गेल छल' आ लन्दन पहुँचला पर ओ टिप्पणी करैत छथि जे वर्नार्ड शॉ श्रीमती नायडू क विषय मे नम्रतापूर्वक जिज्ञासा कयलनि आ एहि वात पर खेद प्रकट कयलनि जे अपन भारत-यात्राक अवधि मे ओ हुनका सँ भेँट नहि कऽ सकलाह; कारण ओ ताहि काल जहल मे छलीह। अमरनाथ झाक भारत घुरला पर सरोजिनी हुनका सँ वाल्टर डी ला मेअर आ एच० जी० वेल्सक विषय मे जिज्ञासा कयलथिन, जनिका लोकनि सँ विलेँत मे ओ भेट कयने छलथिन।

माउंटवेटन सं सेहो सरोजिनीक मित्रतापूर्ण सम्वन्ध छलनि। एक वेर 1948 मे वनारस मे जखन ओ विद्यार्थीक समक्ष भाषण देवा लेल पहुँचलाह तँ सरोजिनी हुनका सुझाव देलथिन जे ओ विद्यार्थी दिस वेर-वेर आङुर हिलवथि आ जोर सँ कहथि—'शैतान छात्र'। एहि पर माउंटवेटनक टिप्पणी अछि—'हमरा हुनका जकाँ ने स्त्री होयवाक लाभ छल, ने ओना कऽ कऽ चल अयवाक लेल हुनका जकाँ ख्यातिए।'

सरोजिनी द्वारा लेडी माउंटवेटन केँ लिखल एलन कैम्पवेल केँ 1947 मे एक मोहक पत्र भेटलनि। स्वतंत्रताक बाद उत्तर प्रदेशक राज्यपाल पद स्वीकार कयला पर ओ लिखलनि गवर्नर जेनरलक 'लेडी' केँ केवल एक गवर्नर दिस सँ जाहि मे भारतक लेल लेडी माउंटवेटन द्वारा कयल गेल सेवाक प्रति प्रशंसाक अभिव्यक्ति छल। पत्र एहि प्रकारेँ समाप्त भेल छल -'नहि जनैत छी जे कते दिन धरि हमरा एहि प्रदेश मे रहऽ पड़त, मुदा हमर एक वास्तविक देन केँ पूरा कार्यक्षेत्र भेटि रहल छैक आ वस्तुतः फल प्राप्त भऽ रहल अछि। मित्रताक हमर उपहार। ओ स्त्री आ पुरुष जे अनेक वर्ष सँ एक दोसर सँ नहि वाजि रहल छल, ओसभ हमर छतक नीचाँ प्रतिदिन अनिश्चयक किछु प्रारम्भिक क्षणक उपरान्त सौहार्दपूर्ण ढंग सँ मिलैत अछि···जी, हमर हरित गोचर मे सिंह आ भेड़ीक वच्चा निभय एक्के ठाम बैसल रहैछ। हमरा लोकनि मे प्रत्येक अपन योग्यतानुसार नीक सँ नीक कऽ सकैत अछि, जेना ब्राउनिंग कहने छथि—"एकोटा लुप्त 'नीक' रहत नहि।" कतेक समाधानकारी विश्वास अछि।[1]

निस्सन्देह सरोजिनीक मित्रताक रहस्य एहि बात मे समाविष्ट छल जे ओ ओहि सभ पर, जे दुखित वा वेगर्तित छल, स्नेह करैत छलीह, ओकर परवाहि करैत छलीह आ ओकरा लग जाइत छलीह।

1. मिशन विद माउण्टवैटन, पृ० 195

ओ सभ सम्प्रदाय आ जातिक संग मित्रतापूर्ण व्यवहार रखैत छलीह। अली-बन्धु, मुहम्मद अली जिन्ना, सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर, श्रीनिवास शास्त्री हुनक प्रारम्भिक मित्र मे सँ छलथिन। सरोजिनीक स्मरण करैत सर सी० पी० रामस्वामी हमरा लिखलनि अछि —"सरोजिनी एक भारतीय राजनेताक रूप मे जिन्ना आ हुनक काज सँ घनिष्ठ रूप सँ सम्बद्ध छलीह, आ प्रायः, गाँधीजीक बाद सरोजिनीक जीवन पर जिन्नेक अत्यधिक प्रभाव छलनि, यद्यपि ओ बौद्धिक रूप सँ आ आत्मिक रूप सँ जिन्ना सँ अधिक श्रेष्ठ छलीह, ई प्रतिभा आ बुद्धिक बीचक अन्तर छल। सरोजिनी प्रायः स्वयं ई सोतैत छलीह जे जिन्ना प्रभावशाली व्यक्ति छलाह आ एक बेर ओ हमरा कहलनि जे प्रमुख भारतीयक पोथी मे जिन्नो कें राखल जयबाक चाही कारण जे ओ महान नेता मे छलाह।"

दीनबन्धु सी० एफ० एन्ड्रूज सेहो ओही समय अमेरिका गेल छलाह जाहि समय मिस मेयोक पोथीक सम्बन्ध मे सरोजिनी गेलि छलीह आ ओ सरोजनीक सम्बन्ध मे महात्माजी कें लिखने रहथिन —

"सरोजिनी नायडूक यात्रा आश्चर्यकारी भेल छनि। ओ सभक हृदय जीति लेलनि अछि आ हम सभ ठाम हुनक यात्राक प्रसंग मे खाली प्रशंसे सुनि रहल छी।"

सरोजिनी तत्कालीन महान् लेखकक स्नेह प्राप्त कऽ लेने छलीह आ एल्डस हक्सले अपन पोथी 'जैस्टिंग पाइलेट' मे हुनक प्रमुख रूप सँ उल्लेख कयने छथि। 1925 मे बम्बइ मे हुनका सँ भेंट कऽ हक्सले कहलथिन—"ई हमर सौभाग्य थिक जे बम्बइ मे हम सरोजिनी नायडू सँ भेँट कयलहुँ अछि जे अखिल भारतीय काँग्रेसक नव-निर्वाचित अध्यक्षा छथि आ एहन महिला छथि जनिका मे अत्यन्त प्रशंसात्मक रूप सँ मोहकता, मधुरता ओ साहसी शक्तिक संग अत्यधिक बौद्धिक क्षमता, मौलिकताक संग विशाल संस्कृति आ हास्यक संगहि ईमानदारीक संयोग छनि। जँ सभ भारतीय राजनीतिज्ञ श्रीमती नायडूक समान छथि तँ देश वास्तव मे भाग्यशाली अछि।"[1]

जखन सरोजिनी नायडू दोसर गोलमेज सम्मेलन मे महात्मा गाँधीक सँग गेलीह तँ ओ जतेक अधिक राजनीतिज्ञ कें ततबे लेखको कें आकर्षित कयलनि 'माइ गाँधी'क लेखक जॉन हेन्स होम्सक विचारें ओ महत्तमा भारतीय महिला छलीह। एक लेखक टिप्पणी कयलनि, "श्रीमती सरोजिनी नायडू कवयित्री, राजनीतिज्ञ, प्रत्येक मामिला मे चलैत-फिरैत शब्दकोष मे जँ किशोरीक सजीवताक सँग हुनक वयसक चातुरी मिला देल जाय तँ कोनो दोसर भारतीय राजनीतिज्ञ सँ कतहु अधिक ओ गुण हुनका मे छनि जे अँग्रेजकें प्रभावित करैत अछि। जतऽ ओ

---

1. जेस्टिंग पाइलेट, दि डायरी ऑफ ए जरनी, ले० एल्डस हक्सले, पृ०-12

दोसरपर हँसि सकैत छथि (उपेक्षाक चुटकी लैत) ततऽ अपनहुँपर हँसि कऽ सुनऽ वलाकेँ हिला दैत छथि। सरोजिनी नायडू मे हीनभावना होयवाक क्यो संदेह नहि कऽ सकैछ आ जखन ओ अपन देशवासी मे एहि भावना केँ देखैत छथि तखन ओ अधीर आ मुखर भऽ उठैत छथि। आ, के हुनक विचारहीनता केँ विसरि सकैछ जखन सम्मेलनक एक सत्रक अन्त मे ओ श्री गाँधी केँ ताकि कऽ पुछलथिन 'हमर छोटका' मिकी माउस 'कतऽ अछि ?' बहुतो गोटे ओहि दोसर अवसर केँ स्मरण रखताह जखन एक विशेष प्रतिनिधि दोसर भवनक पक्ष मे अपन विचार केँ वेर-वेर दोहरवैत अपन सँगीलोकनि केँ सहनशीलताक पार उवा देने छलाह। "किएक दोसर भवन ?" पुछलनि श्रीमती नायडू। "ओ तँ एक तेसर भवनक पक्ष मे छथि, अथवा किछु राजनीतिज्ञक हेतु एक भयंकरतम भवनक पक्ष मे" चुटकी लेलनि सरोजिनी।

लन्दन मे फ्रैंड्स मीटिंग हाउस मे विशाल समुदाय भारतीयक आगमनक वाट ताकि रहल छल, कवि ए० इ० हाउसमैनक भाइ लारेंस हाउसमैन सेहो एहिमे छलाह। हुनक टिप्पणी छनि "श्रीमती नायडू स्त्रीत्वक भव्य नमूना छलीह, किमती देशी रेशमी वस्त्र सँ सुसज्ज, सोझ साझ, प्रभावोत्पादक दृष्टि सँ सम्पन्न, सशक्त आ सुन्दर व्यक्तित्व। स्वल्प लोकप्रिय 'वर्डिक्ट आँन इण्डिया'क लेखक बीवरली निकोल्स सेहो सरोजिनीक प्रशंसा कयने छथि आ ओहो हुनका चाहैत छलथिन, किएक तँ, जेना ओ हमरा कहने रहथि, ओ हुनक करिया विलाड़िक प्रशंसक छलीह।

एहि प्रकारेँ वर्ष-प्रति-वर्ष निर्भय व्यक्तित्वक शूरतापूर्ण आ महत्वपूर्ण जीवन-यात्रा चलैत रहल, समाजक सभ भाग मे समाज द्वारा सम्मानित आ स्नेह सिंचित, मुदा दुख आ करुणा सँ सेहो भरल, कारण ओ अपन मित्र सँ स्नेह करैत छलीह आ ओहि मे सँ प्रत्येकक वियोग एहन क्लेश छल जकरा ओ विसरि नहि सकैत छलीह। जखन महात्मा गाँधीक हत्या कयल गेलनि तँ एच० एस० एल० पोलक, एच० एन० ब्रेसफील्ड आ लार्ड पेथिक लारेंस द्वारा संपादित पोथीक प्रस्तावना सरोजिनी लिखलनि। ओ कहलनि, "ज्योतिपर्व लगीच अछि मुदा एहि वेर दीपावलीक सम्मान मे ने तँ अपना लोकनिक गाम मे माटिक दीप आ ने शहर मे चानीक दीप जरत, कारण जे राष्ट्रक हृदय एखनहुँ महात्मा गाँधीक हत्याक दुख मना रहल अछि, जकरा ओ शताब्दीक शताब्दी पुरान वन्धनसँ मुक्त कयलनि आ भारत केँ ओकर स्वतन्त्रता आ ओकर झंडा देलनि।" वास्तव में सरोजिनीक भीतरक किछु मरि गेलनि जखन 'हे राम' शब्दक संगहिँ 30 जनवरी 1948 केँ हुनक गुरु दिवंगत भऽ गेलथिन, हुनक अपन देहान्तक तेरह मास पूर्व। संसार अन्हार भऽ गेल आ साढ़े तीन दशक धरि सरोजिनीक मार्गदर्शन करयवला प्रकाश-स्तम्भ आव चमकि नहि रहल छल। जेना ओ स्वयं अपन प्रस्तावना मे व्यक्त कयलनि "ओ अपन गुरुक संग अनेक वर्ष धरि घनिष्ठ रूप सँ सम्बद्ध छलीह, भारतक मुक्तिक

हुनक वृहत अभियान मे, "हुनक झंडाक नीचाँ हुनक जहल-यात्रा मे, "जे हुनका चाहैत छलनि आ जे हुनका सँ घृणा करैत छलनि तकर पापक लेल हुनक महान उपवासक जागरणमे। आ, एतेक अधिक सम्वद्ध होयवाक कारणे, ओ अनुभव करैत छलीह जे "एहि दुर्लभ आ एहि अनुपम जीवक व्यक्तित्व मस्तिष्क आ आत्मा केँ वुझवाक वा विश्लेषित करवाक प्रयत्न हुनका खण्ड-खण्ड कटवाक काज होयत, जे ने केवल हमर नेता, हमर मित्र, हमर पिता रहथि, अपितु अक्षरशः आ आन्तरिक रूप सँ जीवनक एक हिस्सा छलाह।"[1] अगिला वर्ष ओ स्वयं सेहो नहि रहलीह आ भारत-कोकिला अपन गुरु महात्माजीक संगहि चिरनिद्रालीन भऽ गेलीह आ हुनक गुँजैत आवाज सभ दिन ले' वन्द भऽ गेल।

1. माइ गाँधी, ले० जॉन हेन्स होम्स, पृ० 14

13
संघर्षक वर्ष

1929 क मध्य मे अमेरिका सँ घुरलाक बाद सरोजिनी तीव्र राजनीतिक स्वनिर्णयक कष्टमय संसार मे डूबि गेली। हड़ताल, गिरफ्तारी आ जहल ओहि काल मामूली गप छल।

12 मार्च 1930 कें महात्मा गाँधी पचहत्तरि चुनल अनुयायी कें लऽ कऽ जखन नोन-अभियानक अपन पदयात्रा पर चललाह तँ ओ निर्देश देलनि जे एहि मे महिला नहि रहतीह। ओ पदयात्री लोकनि प्रतिदिन बारह माइल चलैत छलाह आ जेना-जेना ओ समुद्र दिस बढ़ैत गेलाह ओना-ओना हुनक संख्या बढ़ैत गेलनि। चौबीस दिनक यात्राक बाद 5 अप्रैल कें दू सय माइल दूर दंडी पहुँचैत गेलाह। महात्माजी सँ भेंट करबा लेल सरोजिनी दंडी मे उपस्थित छलीह। प्रार्थनाक बाद समुद्र-तट सँ किछु शुष्क नोन उठाऽ गाँधीजी नोन-कानूनक अवज्ञा कयलनि। तखन, अहिंसक स्वयंसेवकक भीड मे हजारो महिलागण शामिल भऽ गेल छलीह। ओ सभ अपन घर सँ समुद्रक पानि आ नोन लऽ जयबाक लेल बर्तन अनने छलीह। महात्मा गाँधी ओहि स्त्रीगणक साहसक बहुत प्रशंसा कयलनि जे पहिने कहियो अपन घर सँ बहरायलि नहि छलीह। ओ कहलनि जे हुनकालोकनिक हिस्सा 'स्वर्णाक्षर मे लिखल जायत।' महिला आब एहि आन्दोलन मे पूर्णरूपेण शामिल भऽ गेलीह।

महात्माजी जहिना नोन उठौलनि तहिना सरोजिनी उद्घोष कयलनि 'मुक्ति-दाताक जय' आ हजारो लोक अपन बर्तन भरबाक लेल पानि मे पैसि गेल। पुलिस लगले गिरफ्तारी शुरू कयलक तँ पूरा देश कोलाहल सँ गूँजऽ लागल। कखनो महात्माजीक अहिंसाक सिद्धान्त भंग नहि भेलनि। गाँधीजी पकड़ल गेलाह, मुदा ओ जहल मे पूर्ण संतुष्ट छलाह। सरोजिनी हुनका सँ भेंट करऽ गेलथिन ओ हुनका अब्बास तैयबजीक गिरफ्तारीक बाद नेता बनबाक लेल कहल गेलनि। ओ लगले घरसाना गेलीह आ विशाल सेनाक नेता बनि गेलीह। घरसाना मे हुनका आ हुनक अनुयायी कें रोकल गेलनि आ ओ अत्यन्त प्यासलि जरैत रौद मे सड़कपर बैसलि रहलीह, कारणजे पुलिस पानिक गाड़ी देखबैत तँ छलनि, मुदा पीबा लै नहि दैत

छलनि। एक अमेरिकन लिखने छथि, "धुरिआयल सड़कक चारू दिस भूमिपर राष्ट्रवादी वैसल रहथि, एक महिला आराम कुर्सी पर वैसलि छलीह आ चिट्ठी लिखैत अथवा सूत कटैत समय विता रहलि छलीह। हुनक अनुयायीक समक्ष ओतबे संख्या मे वन्दूक-लाठी सँ लैस पुलिस तैनात छल। पुलिस शान्त तँ छल, मुदा एहि वातपर दृढ़ छल जे घरसाना-नोन-कारखाना पर अपन प्रस्तावित आक्रमणक हेतु राष्ट्रवादी आगाँ नहि वढ़ि सकय।[1]

वेव मिलर अपन पोथी 'आइ फाउण्ड नो पीस' मे एहि महत्त्वपूर्ण संघर्षक विशद विवरण देने छथि। हुनक प्रशंसा असीम छलनि, "सरोजिनी नायडू प्रसिद्ध भारतीय कवयित्री, घरसानाक समीप विशाल नोनक कड़ाहक विरुद्ध एक अहिंसक प्रदर्शनक नेतृत्व कऽ रहलीह अछि। सभ सँ समीपक रेलवे स्टेशन डुंगरी अछि। ई कटल स्थान अछि आ अहाँ कें भोजन आ जल संगहि लऽ जाय पड़त। नीक होयत जे अहाँ डुंगरी सँ सवारी उपलब्ध करयवाक हेतु श्रीमती नायडू कें तार दऽ दियनि, नहि तँ अहाँ कें कतेको माइल पयरे चलऽ पड़त। वोतल मे पर्याप्त मात्रा मे पानि राखव विसरव नहि, किएक तँ देशी स्रोत सँ प्राप्त जल श्वेतांगक हेतु अस्वास्थ्यकर अछि।"

"पदयात्रा आरम्भ होयवा सँ पूर्व श्रीमती नायडू प्रार्थना करवौलनि आ समस्त एकत्र व्यक्ति माथ झुका लेलक। ओ सभ कें प्रेरित कयलनि 'गाँधीजीक शरीर तँ जहल मे छनि, मुदा हुनक आत्मा अहाँलोकनिक संग छनि। भारतक ज्योति अहींलोकनिक हाथ मे अछि। कोनो परिस्थिति में अहाँ लोकनि कें हिंसाक प्रयोग नहि करवाक अछि। अहाँ कें पीटल जायत, मुदा अहाँ कें प्रतिकार नहि करवाक अछि। मारि वचयवा लेल अहाँ कें अपन हाथ धरि नहि उठयवाक अछि। हुनक एहि शब्दक थपड़ी वजाकऽ स्वागत कयल गेल।"

मिलर कहैत छथि, "हम श्रीमती नायडू कें देखऽ गेलियनि जे भीड़ कें पुलिस पर आक्रमण करवा सँ रोकवा लेल उपनेतागण कें निर्देश दऽ रहलि छलीह। हम जखन गप्प कऽ रहल छलहुँ, तखने एक अंग्रेज अधिकारी हुनका लग आयल, हुनक हाथ कें छुलक आ कहलक, सरोजिनी नायडू, अहाँ गिरफ्तार छी। ओ हँसैत ओकर हाथ हँटा देलनि आ कहलनि, 'हम चलव, मुदा हमरा छूवू नहि।' भीड़ उन्मुक्त रूप सँ हुनक जयजयकार कयलक जखन ओ अंग्रेज अधिकारीक संग मुक्त मैदान सँ चलिकऽ कंटकित तारक घेरा मे गेलीह आ जतऽ हुनका गिरफ्तार कऽ लेल गेलनि। वाद मे हुनका जहलक दण्ड देल गेलनि। मणिलाल गाँधी सेहो गिरफ्तार कयल गेलाह। श्रीमती नायडू हँसी कयलथिन 'जल्दी-जल्दी अपन टुथब्रश लिय' आ गाड़ी मे आउ।"

---

1. वीमेन विहाइंड महात्मा मे उद्धृत, पृष्ठ 158

सम्पूर्ण भारत मे गिरफ्तारीक वाढ़ि आवि गेलैक आ 6 फरवरी 1931 कें पंडित मोतीलाल नेहरू दिवंगत भेलाह। ई सरोजिनीक हेतु वड़ पैघ आघात छल। तथापि, लार्ड इरविन, 'क्रिश्चियन वाइसराय' आ महात्मा गाँधी में मित्रताक प्रगाढ़ताक कारण 1931क प्रारम्भ मे किछु परिवर्तनक लक्षण बुझि पड़ल। अगस्त में महात्मा गाँधी आ हुनक अनुयायीक संग सरोजिनी जहाज सँ प्रस्थान कयलनि। ओ ने केवल महात्माजीक दहिना हाथ प्रमाणित भेलीह, अपितु स्त्रीक अधिकार हेतु कठिन परिश्रम कयलनि। सम्मेलन-समाप्तिक वाद ओ यूरोप महा-द्वीपक यात्रा कयलनि आ श्रीनिवास शास्त्रीक संग कैपटाउन गेलीह। दोसर गोलमेज सम्मेलनक असफ़लताक वाद नेतागणक भारत घुरलापर गिरफ्तारीक फेर वाढ़ि आवि गेल। सरोजिनी सेहो पकड़ल गेलीह। हुनको ओही जहल में राखल गेलनि जाहि मे मीरा वेन छलीह, जनिक अनुसार कवयित्रीक पहुँचितहिँ अनेक सुविधा सेहो आवि गेल। ओ लिखैत छथि, "एक पलंग—ब्रश आ ककवाक संग श्रृंगार-मेज, एक वाश-स्टैंड, एक स्नान-टव आदि आ पर्दा सेहो। मैट्रन पूर्ण उत्तेजित छलीह। दोसर दिन अयलीह। वाहरक दौड़-धूप आ उत्तेजना सँ ओ वास्तव मे थाकलि रहथि, मुदा ने हुनक वयस आ नें कष्टे हुनका डेरा कमल छल। आव, समाचार सुनवाक हमर पार छल, आ समाचारो पर्याप्त छल। जहल मे तँ केवल 'टाइम्स आफ इण्डिया वीकली' देल जाइत छलैक आ कखनो काल तँ ओहू मे सँ खवरि काटिकऽ राखि लेल जाइत छलैक। अत: जे तीन-चारि दिन हम दुनू गोटे संग रही, से सभ टा खवरि, खिस्सा आ किंवदन्ती सुनवा लेल पर्याप्त नहि छल।"[1]

स्वाधीनता-संग्राम आव अनेक वर्ष धरि झुलैत रहल। 1942 में काँग्रेस द्वारा 'भारत छोड़' प्रस्तावक कारण असंख्य गिरफ्तारी भेलैक। महात्मा गाँधी आ अन्य कतिपय नेताक संग सरोजिनी नायडू कें आगा खाँ महल मे पकड़ि कऽ राखल गेलनि।

आगा खाँ जहल मे महलक भव्यता छलैक, मुदा एहि आरामदायक जहल मे देवालक भय अधिके होइत छलैक। एकर दीर्घाकार देवाल मे वन्द रहथि अपन पत्नीक संग गाँधीजी, सुशीला नय्यर, महादेव देसाइ, प्यारेलाल, मीरावेन आ सरोजिनी नायडू। महात्माजी आ हुनक पत्नीक वयस तिहत्तरिम रहनि।

एकर पूर्व, 1942 में 'भारत छोड़' प्रस्ताव पारित होयवाक वाद मीरा वेन कें वाइसराय सँ भेंटक हेतु पठाओल गेलनि। हुनका भेंट नहि भऽ सकलनि। 8 अगस्त कें गाँधीजी बम्वइक विशाल सभा मे भाषण देलनि आ विड़ला भवन घुरि अयलाह। हुनक मित्र सेहो, जनिका लोकनि कें वाद मे हुन कें संग गिरफ्तार कयल गेलनि, उद्योगपतिएक ओहिठाम अँटकल छलाह? बिचला राति कें महादेव देसाइ कें फोनपर बजाओल गेलनि आ कहल गेलनि जे गाँधीजी गिरफ्तार कयल

1. दि स्प्रिरिट्स पिलग्रिमेज, ले० मीरा वेन, पृष्ठ 161

जयताह । 9 अगस्त कें भोरे पुलिस-दल आयल आ दलक संग महात्माजी कें, लघ प्रार्थनाक वाद, पकड़ि कऽ लऽ गेलनि । खाली गाँधीजी, सरोजिनी, प्यारेलाल, महादेव देसाइ आ मीरावेन कें पकड़ल गेलनि । जखन कस्तूरवा अपन पतिक काज मे निरत रहवापर जोर देलनि तँ हुनका आ सुशीला नैयर कें सेहो पकड़ि लेल गेल आ पछाति ओही जहल मे राखल गेल ।

वन्दीलोकनि ओही रेलगाड़ी सँ यात्रा कयलनि आहि मे काँग्रेस कार्यसमितिक सदस्यो छलाह आ प्रत्येक कें कोनो-ने-कोनो जहल मे जयवाक छलनि ।

पकड़ल गेलाक लगले वाद महादेव देसाइ कें हृदय-रोग भऽ गेलनि आ ओ दिवंगत भऽ गेलाह । सभ दुखी भेलाह आ जँ दुखक समक्ष कथमपि नहि झुकऽवाली आ निर्भय सरोजिनी ओतऽ नहि रहितथि तँ ओ लोकनि उदासी सँ क्षीण भऽ गेल रहितथि । ओहो कखनो काल देवालक भयक असह्य पीड़ा सँ मरि जाइत छलीह, तथापि ओहि दलक जीवन वैह रहथि । मीरा वेन कहैत छथि, 'आगा खाँ महल मे संगेसंग पकड़ल गेलाक पूर्व केओ ने, एतऽ धरि जे वापू पर्यन्त ने, सरोजिनीक स्वभावक सम्पन्नता कें जानि सकल छलाह । ओ वुद्धि चातुर्य सँ पूर्ण छलीह आ अपन मातृवत् स्वभाव सँ सभपर स्नेहक वर्षा करैत रहैत छलीह ।"

गाँधीजी छओ मासक वाद उपवास करवाक निर्णय लेलनि । आरम्भ मे जनता कें एकर सूचना नहि देल गेलैक तथा स्वतंत्रता सेनानीक छोट टुकड़ी हुनक एहि अग्नि-परीक्षा मे हुनका चुकि जयवाक भय सँ भीत रहैत छल । चारिम दिन दुखक आगमन भेल आ वंगाल सँ डाक्टर वी० सी० राय कें बजाओल गेलनि । तखन छओ डाक्टरक हस्ताक्षर सँ युक्त वुलेटिन नियमित रूप सँ प्रकाशित कयल जाय लागल । 21 फरवरी कें खतरा उत्पन्न भेल, मुदा दूर कऽ देल गेल, मुदा उपवास सँ सरोजिनी कें सेहो निराशा भेलनि । तथापि, ओ समतोला-रसक पहिल घोंट पिअयवाक हेतु समारोह मे एक चमकैत वैगनी साड़ी पहिरिकऽ अयलीह आ डाक्टरक संग हँसी करैत रहलीह । मुदा, कस्तूरवाक आसन्न निधनक पीड़ा एहि समूह कें आक्रांत कऽ देलक ।

सरोजिनी स्वयं मलेरिया सँ गम्भीर रूप सँ आक्राँत भऽ गेलीह आ 21 मार्च 1943 कें स्ट्रेचर पर महलक जहल सँ वाहर आनल गेलीह । मीरा वेन लिखलनि 'हमरा लोकनि कें, विशेष रूप सँ हमरा, हुनक अभाव कतेक खटकैत छल !' जहल मे करीव वर्ष दिनक वाद फरवरी 1944 कें कस्तूरवाक निधन भऽ गेलनि । स्वास्थ्यक आधार पर 6 मइ कें महात्माजी कें छोड़ि देल गेलनि । स्वतन्त्रताक युद्ध क्रमशः समाप्त भऽ रहल छल आ आसन्न छल खून-खरावी आ साम्प्रदायिकताक त्रासदीक निराशाजनक दिन ।

स्वतन्त्रता सँ पूर्वक आखिरी किछु मास अधिक निराशाजनक छल । अन्तिम वर्षों अन्तक भविष्यवाणी करैत प्रतीत होइत छल ।

14

हास्य, रंग आ स्वातंत्र्य

1917 क बाद यद्यपि सरोजिनी नायडू कठिनते सँ कविता लिखैत छलीह, मुदा हुनक कविता कें लोक बिसरल नहि छल। ओ भारतक सभ भाग मे अनेको काव्य-पाठ कयलनि, ओ जे लऽ कऽ विलियम हीनमान द्वारा प्रकाशित हुनक तीनू कविता-संग्रह अप्राप्य भऽ गेलनि, तें ई अनुभव कयल जाय लागल छल जे हुनक कविताक एक संयुक्त संग्रहक भारत आ पश्चिम मे, दुनू ठाम, स्वागत कयल जायत। सरोजिनीक कविताक ओ अत्यावश्यक संकलन 1937 मे डाँड मीड एंड कम्पनी द्वारा जोसेफ आसलंडरक प्रस्तावना सहित 'दि सेप्टर्ड फ्लूट' (राजदंडी-कृत वंशी)क नाम सँ प्रकाशित कयल गेल। अपन मित्र अमरनाथ झा कें एहि पोथीक एक प्रति समर्पित करैत, सरोजिनी अपन पत्र सभ मे कहलनि, 'जीवन अथवा हमर स्वभाव हमरा जे वस्तु देलक अछि, ओहि मे हास्यक देन कें हम अमूल्य बुझलहुँ अछि, आगाँ ओ कहैत छथि, 'की हम अपनहुँ पर नहि हँसैत छी ?'[1] ई संग्रह लगले बिका गेल, तें एही शीर्षक (दि सेप्टर्ड फ्लूट : साँग्ज आफ इंडिया) क अन्तर्गत एक दोसर संकलन किताबिस्तान द्वारा 1943 मे प्रकाशित भेल तथा ओकर दोसर संस्करण 1946 मे। अमेरिकी संस्करणक समाने हीनमान द्वारा प्रकाशित पहिलुक तीनू संग्रह कें एहि मे समाविष्ट कऽ लेल गेल छल। प्रकाशकक अनुसार 'अपन महत्तम जीवित कविक संकलित कृति कें पहिल बेर भारत मे प्रस्तुत करैत अपार हर्ष अछि।'

सरोजिनीक जीवनक विशेषता छलनि हुनक चारू दिस सुनाइ पड़ऽवला हँसीक कल-कल ध्वनि, विशेषतः ओहि चाह पार्टी मे, जे ओ जतऽ जाथि, ततऽ आयोजित करथि। जनिका संग ओ ठहरैत छलीह, ओ मित्र सेहो हुनक चारू दिस झुमैत प्रशंसकक स्वागत करैत छलथिन, आ तखन ओ बैसिकऽ हँसितथि, बजितथि तथा परिचित महान पुरुष आ स्त्री सँ सम्बन्धित आ अपनो सँ सम्बन्धित चुटुक्का सुनबितथि।

---

1. सरोजिनी नायडू, ले० अमरनाथ झा, पृ०-15

मिसेज मार्गरेट ई० काजिन्स लिखैत छथि, "हमरा स्मरण अछि, ओ हमरा कहने रहथि जे ओहि दिन अपन साड़ी ओ वड़ सतर्कता सँ चुनलनि अछि, जाहि सँ हुनक प्रभाव आकाशक नील गुंवज मे उज्वल रजत चंद्रिकाक समान हो स्त्री कवयित्री आ सूत्रधार, समानता आ न्यायक माङक सहायता कयनिहारि।"[1]

अमेरिका मे अपन तूफानी रेलयात्राक वर्णन करैत सरोजिनी 'मध्य-पश्चिमी प्रदेशक हीरक श्वेत हिम प्रान्तर सँ लऽ कऽ दक्षिणक पीत, नील, रौदयुक्त प्रदेश धरि'क विषय मे महात्मा गाँधी केँ लिखने छलथिन : "कखनो, अहाँ केँ विश्वस्त करी, हमर वैदिक पूर्वजक आत्मा सूर्यदेवक हेतु गायत्री एतेक प्रसन्नतापूर्वक नहि गओने छल होयत जतेक हम अपन शरीरक शीतल दुखाइत उष्ण अस्थिक मुक्तिक प्रीतिकर गृह में गवैत छी।"[2]

एक वेर ओ हुनक थोड़ेक समय लेवाक चेष्टाशील एक उत्साही जीवनी-लेखकक विषय मे कहलनि। ओ एक रेलगाड़ीक पौदान पर यात्रा कयलक आ स्टेशनक वीच मे हुनक डिव्बा मे प्रवेश कयलक। पुछलथिन ओ, "युवक, अहाँ की चाहैत छी ?"

'हम अपनेक जीवनी वायोग्राफी लिखऽ चाहैत छी' ओ वाजल रहय।

'हमर जीवशास्त्र (वायोलाजी), कथमपि नहि, हम एहि विहय मे ककरो नहि कहैत छिऐक !'

हँसी मे ओ डा० वी० सी० राय केँ लाउडस्पीकर कहैत छलथिन, कारण हुनक आवाज तेज छलनि।

एक वेर किछु छात्र ताज मे हुनक कोठली देखऽ गेल आ हुनका कहलकनि जे ओ वम्वइक दृश्य केँ देखि रहल अछि।

'की अहाँ केँ वुझि पड़ैत अछि जे हमहुँ एक दृश्ये छी ?'

सभ गोटे प्रेम आ अपनत्व भरल-हुनक संस्मरण कहैत अछि। एहन वड़ थोड़ लोक छथि जे हुनक दयालुता आ उदारताक कारण हुनक स्मरण नहि करैत होथि।

एहि प्रकारें वर्ष-पर-वर्ष वीतैत गेल आ सरोजिनी नायडू एक दृश्य सँ दोसर दृश्य मे अवैत रहलीह। अन्ततः भारतक स्वतंत्रताक वर्ष आवि गेल आ भारत केँ स्वतंत्र होयवा सँ छओ मास पहिनहि मार्च 1947 मे हुनका 'एशियायी सम्वन्ध सम्मेलन'क अध्यक्ष वनवाक निवेदन कयल गेलनि। अध्यक्षक रूप मे सरोजिनी केँ भारतीय प्रतिनिधिमंडलक नेतो वनवाक छलनि। दिल्लीक प्राचीन किला मे 21 मार्च केँ पूर्ण सत्र आयोजित भेल। विशाल समुदाय उपस्थित छल। मंचक

1. दि अवेकनिंग आफ एशियन वुमनहुड, ले० मार्गरेट ई० कजिन्स, पृ०-120-21
2. दि यंग इंडिया, 11 अप्रैल 1929

पृष्ठभूमि मे एशियाक विशाल नक्शा छलैक। जुलूस क्रमशः आयल जाहि मे सभ सँ आगाँ अध्यक्षा सरोजिनी नायडू आ स्वागत-समितिक प्रधान श्रीराम रहथि। पंडित नेहरू सम्मेलनक उद्घाटन कयलनि। तकर बाद सरोजिनी बजलीह। भाषणक आरम्भ मे ओ अपनासन मामूली महिला कें एहि पदक हेतु चुनल गेला पर आश्चर्य प्रकट कयलनि। हुनक ओ भाषण हुनक सम्पूर्ण जीवन मे कहल गेल ओजस्वी गद्य मे सभ सँ अधिक प्रोज्ज्वल नमूना छल :

'मित्रगण आ एशियाक सम्बन्धीजन, अहाँ कें विस्मय होयत जे आजुक एहि महान आसन पर बैसबाक हेतु एक मामूली महिला कें किएक चुनल गेल अछि। उत्तर बड़ सोझ अछि। भारत सदा सँ अपन स्त्री जातिक सम्मान करैत रहल अछि। जखन हम एशियाक राष्ट्र सभक एहि विशाल समुदाय कें देखैत छी तँ हम एतेक विचलित भऽ जाइत छी जे करीब-करीब, करीब-करीबे टा, मूक बनि जाइत छी। एक महिला कें मूक बनबाक हेतु बहुत प्रयास करऽ पड़ैत छैक।

'हमरा आश्चर्य अछि जे अहाँ लोकनि दुर्गम पहाड़ी घाटी सँ चलिकऽ, रंगीन समुद्रक विशाल वक्ष पर हेलिकऽ, प्रभात आ अन्धकारक मेघ पर सवार भऽ कऽ उपस्थित भेल छी, एहि मे सँ कतेक एहि बात कें बुझैत छी जे आइ हम एतऽ एहि क्षण, ने केवल एशियाक हृदय मे अपितु भारतक आत्माक अंतस्थल आ केन्द्र मे ठाढ़ छी। हम एतऽ उपस्थित भेल छी एशियाक एकताक अविनाशी वचनक लेल, जाहि सँ विध्वंसक बीचक संसार कें पीड़ा, दुःख, शोषण, कठिनता, गरीबी, अज्ञान, विपत्ति आ मृत्यु सँ मुक्त कयल जा सकय।

कोन बातक लेल एशिया अदौ सँ ठाढ़ अछि? एशियाक काज (क्रूर जंगली)क विषय मे हम बहुत किछु पढ़ैत छी—ई सभ एहि बात पर निर्भर करैछ जे इतिहास लिखैत अछि के? मुदा, एकटा बात अछि, ई एहि विशाल महाद्वीपक वास्तविक स्वरूप थिक जे एशियाक प्रत्येक राष्ट्र कें अयबाक आ एक सर्वमान्य शान्तिक आदर्श मे भाग लेबाक संकेत दैत अछि—नकारात्मक शान्ति नहि, समर्पणक शान्ति नहि, डरपोकक शान्ति नहि, मरणेच्छुकक शान्ति नहि, मुइनिहारक शान्ति नहि, अपितु मानव-आत्माक योद्धा, गतिमान, सर्जकक शान्ति, जे ऊपर उठबैत अछि···

'आ एशिया अपन पुनरुत्थान सँ की करत? की ओ जितबाक लेल, अधिकार करबाक आ शोषण करबाक लेल युद्धक लेल अपना कें हथियारक निर्माण करत आ प्राचीनक आदर्शक अनुसार अपन शस्त्रागारक पुनर्निर्माण करत, शान्तिक सैनिक आ प्रेमक दूतक रूप मे? हमर महान आ प्रिय नेता महात्मा गाँधी हमरा सिखौने छथि जे कटुता आ घृणा सँ नहि, क्रोध आ युद्ध सँ नहि, अपितु करुणा, प्रेम आ क्षमा सँ संसारक उद्धार होयत। आ, ई कोनो नव संदेश नहि थिक। ई एशियाक पुरान संदेश थिक जे भारतीय जनताक अनुभव, साहस, दुःख आ आशा सँ सबल भेल अछि।

'अतएव भारत एशियाक अपन सम्बन्धी कें इशारा कयलक अछि जे आउ, आ सम्पूर्ण संसारक आशा आ नवीन संदेश कें बुझू।'

स्वतंत्रता भेटलाक बाद सरोजिनी कें उत्तर प्रदेशक राज्यपाल बनाओल गेलनि। शपथ-ग्रहण समारोह मे सरोजिनी स्वतंत्रताक विषय मे सुन्दरतम गीतात्मक गद्य मे जोर दैत कहलनि, "हे संसारक स्वतंत्र राष्ट्रगण, अपन स्वाधीनताक एहि दिन हम भविष्य मे तोहर स्वतंत्रताक लेल प्रार्थना करैत छी। हमर संघर्ष सतत महान छल, अनेक वर्ष धरि चलएवला आ अनेक जीवनक बलि लेनिहार। ई संघर्ष छल, एक नाटकीय संघर्ष। मुख्य रूप सँ ई अज्ञात, लाखो वीरक एक संघर्ष छल। ई स्त्रीक संघर्ष छल, ओहि शक्ति मे परिवर्तित जकर ओ पूजा करैत अछि। ई युवकक संघर्ष छल, अकस्मात स्वयं शक्ति, बलिदान आ आदर्श मे परिवर्तित। ई संघर्ष छल नवयुयकक आ वूढ़ लोकक, अमीर आ गरीवक, साक्षरक आ निरक्षरक, आहत, अछूत, कोढ़ि आ सन्तक।

"आइ हम दु:खक कड़ाही सँ दोबारा जन्म लेलहुँ अछि। हे संसारक राष्ट्रगण हम तोरा अपन माय भारतक नाम सँ अभिवादन करैत छिअह···हमर माय, जकर घर पर वर्फक छाही छैक, जीवन्त समुद्र जकर देवाल छैक, जकर द्वार हरदम तोरा लेल खुजल छैक। की तोँ शरण वा सहायता चाहैत छह, की तोँ प्रेम आ सद्-भावना चाहैत छह तँ हमरा लग आशा सँ आवह, श्रद्धा सँ आवह, एहि विश्वास सँ आवह जे सभटा उपहार हमरा देवेक लेल अछि। हम सम्पूर्ण संसार कें भारतक स्वतंत्रता दैत छी जे अतीत मे कहियो मुइल नहि अछि, जे भविष्य मे अनश्वर रहत आ जे संसार कें अन्तिम शान्तिक दिस लऽ चलत।"

15
अन्तिम दिन

लखनउक राजभवन संस्कृति, कर्मशीलता, मनोरंजन आ अन्तरराष्ट्रीय मिलनक केन्द्र बनि गेल। शालीन आ स्नेहमयी गृहस्वामिनी सरोजिनी नायडू भव्य आ कलात्मक गृह मे उदार अतिथि-सत्कार प्रदान करबाक हेतु दोसर राज्यपालक समक्ष अनुकरणीय दृष्टान्त रखलनि।

लगैत अछि जे भाषण देबाकाल अंग्रेजी मे बाजिकए सरोजिनी अत्यधिक प्रसन्न होइत छलीह। एक पुलिस परेड मे ओ घोषणा कयलनि, "अहाँ सभ हमरा व्याकरण-च्युत हिन्दी मे बाजब सुनलहुँ, आब हमरा व्याकरण-सम्मत अंग्रेजी मे बाजऽ दिअऽ। 'महात्मा गांधीक 78 म जन्म-दिवस पर अलंकृत भाषा मे ओ बजलीह, 'सम्पूर्ण विश्व एहि व्यक्तिक सम्मान करओ।'

जनवरी 1948 मे जखन महात्मा गांधीक हत्या कयल गेलनि, तखन सरोजिनी चकराइत, आहत आ विक्षत हृदय सँ दिल्ली अयलीह। राजधानी अश्रुप्लावित आ दुःख सँ टूटल छल। सरोजिनी कनली तक नहि, यद्यपि हुनक आकृति सँ दुःख टपकि रहल छल, आ ओ अपन साहसी ढंग सँ पुछलनि, "ई सिसकारी किएक? की ओ जीर्ण वृद्धावस्था अथवा अजीर्ण सँ मरितथि? हुनका लेल तँ इएह एक महान मृत्यु छल।"[1] अपन रेडियो-प्रसारण मे बजलीह, "निजी शोकक समय बीति चुकल अछि। छाती पीटब आ केस नोचबाक समय आब बीति चुकल अछि। आब समय आबि गेल अछि ठाढ़ होयबाक आ ई कहबाक, जे महात्मा गाँधीक विरोध कयलक तकर चुनौती हम स्वीकार करैत छी।"

लम्बा दाह-संस्कारक तनाव कें ओ सहलनि। महात्मा गाँधीक भस्मी सँ युक्त एक कलश इलाहाबाद मे विसर्जित कयल गेलनि, आ त्रिवेणी संगम ओ स्थान छल जतऽ भारतक प्रमुख नेता राष्ट्रपिता कें अपन अन्तिम श्रद्धांजलि देलनि। एहि समारोहक तैयारी करबाक लेल सरोजिनी नायडू दिल्ली छोड़लनि आ इलाहाबाद मे 12 फरवरी कें पंडित नेहरूक आ पंडित पन्तक संग विशेष अस्थि-रेलक स्वागत

1. प्रिजन एण्ड चाकलेट केक, ले०—नयनतारा सहगल, पृ०-220

कयलनि। तखन संगमक हेतु लम्वा जुलूस रवाना भेल। सड़कक दूनू दिस लगभग दू लाख लोक ठाढ़ छल। गिरिजाघरक समक्ष एक विशाल गायक-समूह 'लीड-काइंडली लाइट', महात्माजीक प्रिय सूक्त, गावि रहल छल। सरोजिनी आ अन्य नेता कलशक संग एक परवानुमा नाव सँ संगम पहुँचलाह। वैदिक विधि सँ कलश कें विर्सजित कयल गेल। 13 फरवरी कें 'दि लीडर' सरोजिनी नायडू सँ एक साक्षात्कार प्रकाशित कयलक, "संसारक इतिहास मे ई एक दर्शनीय आ भव्य समारोह छल, हुनक अन्तिम संस्कारक योग्य, जनिक नाम मानवताक इतिहास कें हुनक प्रेम, सत्य आ अहिंसाक संदेश धवल कीर्ति सँ सर्वदा उज्ज्वल राखत।

युग-युग सँ गंगा आ यमुना लोकप्रसिद्ध नदी रहल अछि, जे संगमक जल मे अन्तिम मुक्ति चाहयवला लाखो स्त्री-पुरुषक भस्मी कें अपन आत्मा मे समा लेने अछि, मुदा भारतक इतिहास मे कहियो गंगा आ यमुना एहन यशस्वी मानवक भस्मी नहि पौने छल जनिक जीवन आ मृत्यु हमर श्रद्धा आ अनुकरणक हेतु एक अनश्वर उदाहरण अछि।"[1]

सरोजिनी नायडू स्वयं वहुत स्वस्थ नहि छलीह, आ महात्माजीक दिवंगत होयवाक तनाव ओ हुनक अपन परिश्रम-साध्य कर्तव्य हुनका सदिखन विगड़ल स्वास्थ्य पर खराप असरि दऽ देलकनि। ओ अमरनाथ झा सँ ई रहस्य प्रकट कयने छलीह जे हुनक हृदय कमजोर छलनि, उच्च रक्तचाप छलनि आ एक पयर मे चोट लागल छलनि। 13 फरवरी 1949 कें ओ सत्तरि वर्षक भऽ गेलीह ओ दोसरे दिन दुखित पड़ि गेलीह तथापि ओ दिल्ली जयवापर जोर देलनि। वाद मे हुनक माथ मे चोट लागि गेलनि, तैयो अपन सभ निर्धारित कार्यक्रम कें पूरा करवाक निश्चय कयलनि।

चारि दिनक वाद ओ लखनउ आपस आवि गेलीह, तीव्र मथदुक्खी ओ उच्च रक्तचाप सँ पीड़ित। डाक्टर पूर्ण विश्रामक परामर्श देलकनि। साँस लेवा मे कठिनता होवऽ लगलनि तँ 18 फरवरी कें आक्सीजन देवए पड़लनि। किन्तु तैयो हुनका निद्रा नहि भेलनि। 1 मार्च 1949क राति कें ओ अपन नर्स कें गयवाक हेतु कहलथिन आ अपन अन्तिम शब्द "हम नहि चाहैत छी जे क्यो हमरा टोकय" कहि कऽ ओ गीत सुनैत-सुनैत सूति रहलीह। ओ 2 मार्चक अहल भोरे साढ़े तीन वजे दिवंगत भऽ गेलीह। दुःख मे डूवल आहत राष्ट्र ई दुःसमाचार सुनलक। राज-भवन मे लोकक धरोहि लागि गेल आ सवा चारि वजे शवयात्रा प्रारम्भ भेल। तिरंगा झंडा मे लपटायल शरीर धार्मिक गीत आ प्रार्थनाक बीच लऽ जायल गेल। पंडित नेहरू आ अन्य नेता शव कें तोपगाड़ी मे रखलनि आ हुनक सन्तान हुनक चारू दिस ठाढ़ छलनि। शोक-संतप्त जन मे सभ सँ प्रमुख लेडी माउन्टवेटन आ सभ भारतीय

1. दि लीडर, 14 फरवरी 1948

नेता आ अनेक मंत्री रहथि। गोमतीक कात मे अन्तिम वैदिक संस्कार सम्पन्न कयल गेलनि आ अन्तिम विगुल बजाओल गेल तथा सरोजिनीक जेठ पुत्र जससूर्य चिता मे मुखाग्नि देलनि। सी० राजगोपालाचार्य अन्तिम श्रद्धांजलि समर्पित कयलनि। एहि प्रकार भारतक यशस्वी कन्याक पूर्ण जीवनक अन्त भेल। श्रद्धांजलि समर्पित कयल जाइत रहल आ आइयो राष्ट्र एहि निर्भय स्त्री, कवयित्री, शान्ति-दूत, स्त्रीक मुक्तिक प्रवक्ता, मित्र, दार्शनिक, मार्गदर्शक आ स्वतंत्रताक एक महान अहिंसक योद्धाक मृत्यु जन्य शोक मनबैत अछि। हुनक जीवन-काल मे अनेको द्वारा हुनक सम्मान भेल छलनि, किएक तँ प्रारम्भिक जीवन मे कयल गेल अपन सेवाक लेल हुनका 'केसरे हिन्द' स्वर्णपदक प्राप्त भेल छलनि जे ओ अंग्रेज सरकार केँ आपस कऽ देलथिन। हुनका रॉयल सोसाइटी ऑफ इंडियाक सदस्य बनाओल गेल छलनि, मद्रास, कलकत्ता आ कराची मे 'नगर स्वातंत्रय' भेटल छल। इलाहाबाद विश्वविद्यालय सँ 'डाक्टर'क उपाधि आ कतोक अन्य सम्मान प्राप्त भेल छलनि।

16
इंडो-एंग्लियन कविता

इंडो एंग्लियन कविता हेनरी लुइ विवियन डेरोजियो (1809-1831) सँ शुरू भऽ आब करीब डेढ़ सय वर्ष पुरान अछि। वास्तव मे, राजा राममोहन राय (1772-1833)क समय सँ भारत मे अंग्रेजी बढ़ैत गेल अपन उदार दृष्टिकोण, सम्पन्न साहित्य आ सांस्कृतिक सहिष्णुता सँ एहि देशक बुद्धिजीवी केँ अपना दिस आकर्षित करबाक कारण। हेनरी डेरोजियोक माय भारतीय छलथिन आ पिता पुर्तगाली। हुनक कविता संग्रह 'फकीर ऑफ जंघीरा एंड अदर पोएम्स' ध्यान आकर्षित कयलक आ शीघ्रे भारतीय मे एहि विदेशी भाषा मे लिखबाक प्रथा चलि गेल। जल्दिए दोसरो कवि समक्ष अयलाह। काशी प्रसाद घोष पहिल बंगाली अंग्रेजी कवि छलाह आ शीघ्रे पद्यकारक बाढ़ि आबि गेल, किछु तँ एकदम नगण्य, मुदा किछु, तरुदत्तक समान, आइयो प्रशंसित आ पठित। प्रमुख इंडो-एंग्लियन कवि मे मोहनलाल, हसन अली, पी० राजगोपाल, राजनारायण दत्त आ दत्त-परिवार (तरुदत्तक पिता आ काका समेत) रहथि। ओ लोकनि लागमैन्स, ग्रीन एण्ड कंपनी द्वारा लंदन मे प्रकाशित 'दत्त फैमिली एल्बम'क रचना केयने रहथि। माइकल मधुसूदन दत्त, जनिका कवि दत्त-परिवार सँ कोनो सम्बन्ध नहि रहनि, सेहो 'दि केप्टिव लेडी' सँ अपन अंग्रेजी रचनाक आरंभ कयलनि, मुदा जल्दिए अपन मातृ-भाषा बँगला मे लिखऽ लगलाह, आ आब हुनक बंगालक लोक-प्रसिद्ध लेखक मे गणना होइत छनि। ओ 1843 मे इसाइ बनि गेलाह।

एहि बीच अंग्रेजी भारत मे विशेष परिचित होबऽ लागल। अधिकृत रूप सँ अंग्रेजी एतऽ सभ सँ महत्त्वपूर्ण भाषा तखन बनल जखन 1835 मे लार्ड बेन्टिक 'मैकाले मिलिट'क नियम बनौलनि जाहि द्वारा समस्त शैक्षिक कोष केँ अंग्रेजी शिक्षाक हेतु लगाओल जयबाक छल आ अंग्रेजी सीखब अनिवार्य कऽ देल गेल, मुदा वास्तव मे भारत मे अंग्रेजी गोआक एक जेसूट मिशनरी टॉमस स्टीवेन्स (1549-1619)क संग सोड़हम शताब्दी मे आयल। 1817 मे बंगाली आ अंग्रेजी द्वारा कलकत्ता मे हिन्द कालेज स्थापित कयल गेल। ई एहि देश मे पहिल आंग्ल-बंगाली संस्था छल। आगाँ वर्ष विलियम कैरी, बार्ड आ मार्शमैन सीरामपुर कालेजक स्थापना कयलनि। एहि कालक उल्लेखनीय प्रिंसिपल छलाह डॉ० एफ० आ बाद

मे डेविड ल.स्ट८, जे 'कै ग्कटा लिटररी गजट'क संपादन कयलनि आ जनिक 'लिटररी लीव्ज अनेक तरु भारतीय लेखक कें अंग्रेजी मे लिखबाक प्रोत्साहन देलक। 'बेंगाल मैगजीन' आ 'केलकटा रिव्यू' सदृश पत्रिका सेहो नवीन लेखनक श्रीगणेश करवौलक आ तरुदत्त एहि दूनू पत्रिका मे अपन कविता प्रकाशित करयवाक अतिरिक्त एहि महक दोसर पत्रिका मे 1874 मे डेरोजियोक प्रशंसोक्तियो लिखलनि। तखन तरुदत्तक निकटक भाय आ प्रतिभाशाली लेखक तथा भारतीय विद्याविद् रमेशचन्द्र दत्त संस्कृत महाकाव्यक अंग्रेजी अनुवाद कयलनि आ एहि प्रकारें क्रमशः प्रतिबर्ष इंडो एंग्लियन कविता बढ़ैत गेल तथा एकर प्रारम्भ विशेष रूपें ध्यान आकृष्ट करय लागल। कवि मनमोहन घोषक पुत्री लतिका घोष 1933 मे भारतीय लेखक पर अंग्रेजी मे एक पोथी लिखलनि तथा एहि सँ पूर्व थियोडोर डगलस डन 'दि बेंगाली बुक ऑफ इंगलिश भर्स'क संकलन कयलनि जकरा लोंगमेन्स ग्रीन 1918 मे मद्रास सँ प्रकाशित कयलनि।

पद्य-रचनाक पारंपरिक प्रकार लोकप्रिय छल, यथा लिरिक, सानेट, इलेजी आ ओड तथा जखन रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपन कविताक स्वच्छन्द अंग्रेजी पद्य मे अनुवाद कऽ 1913 मे 'गीतांजलि' पर नोवल पुरस्कार प्राप्त कयलनि तँ एक नवीन ढंग समक्ष आयल, किन्तु हुनक अनुयायी एकर बहुत कम अनुसरण कयलनि। श्री अरविन्द, टैगोर आ पर्याप्त दूर धरि, तरुदत्त आ सरोजिनी नायडू अपन-अपन तकनीक आ इंडो-एंग्लियन कविताक बिम्बक निर्माण मे लागि सहायता कयलनि। "रूमानी भावात्मकता कें अभिव्यक्त करवाक एक विशिष्ट शब्दावलीक प्रकार, सम्भव थिक, जे सरोजिनी नायडू आ हुनक पीढ़ींक संग समाप्त भऽ गेल हो। मुदा एकर माने ई नहि जे रूमानी भावात्मकते समाप्त भऽ गेल।"[1]

19म शताब्दी मे पश्चिम आ पूर्वक विचार आ साहित्यिक अध्ययनक सम्मिश्रण भेल। अनेक यूरोपियन विद्वान कें संस्कृत आकर्षित करऽ लागल छलनि। सर विलियम जोन्सक प्रेरणा सँ कलकत्ता मे 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी'क जन्म भेल। मेक्समूलर सहित अनेक जर्मन विद्वान कें मिलाकऽ दोसर महांन यूरोपियन विद्वान लगभग एक शताब्दी पूर्व भारतक समृद्ध आध्यात्मिक साहित्य कें सोझाँ मे आनि रहल छल। जॉन विलियन, एडविन अरनाल्ड, विलियम हंटर तथा ओहि समयक विद्वान मिशनरी डेविड हेयर, विलियम कैरी, रिचार्डसन आ अन्यो व्यक्ति कला कविता आ धार्मिक लेखनक भारतीय उत्तराधिकारक तृष्णापूर्वक पान कऽ रहल छलाह।

तथापि, भारतीयां लोकनि खाली अंग्रेजी आ ओकर सम्पन्न साहित्य कें लऽ कऽ रुकलाह नहि। विकसित पश्चिम 'सुषुप्त बौद्धिक आ आलोचक प्रेरणा कें

---

1. दि गोल्डेन ट्रेजरी आफ इंडो-एंग्लियन पोएट्री, सं० बी० के० गोकाक, पृ० 35

पुनर्जीवित कऽ देलनि, जीवन कें पुनः स्थापित कयलनि आ नवीन सृष्टिक हेतु अभिलाषा जाग्रत कयलनि। ओ पुनरुदीयमान भारतीय आत्मा कें नूतन परिस्थिति ओ विचार तथा एकरा बुझबाक पचयबाक आ जोतबाक द्रुत आवश्यकताक समक्ष आनि कऽ ठाढ़ कऽ देलक।'[1] एहि प्रभाव कें सभ सँ पहिने बंगाली लोकनि अपनौलनि। भारतीय नवीन अंग्रेजी संस्कृतिक आलोचनों करऽ लागल छल। 'अंग्रेजीभाषी शिक्षा-प्रणाली सँ वहराइत सरोजिनी नायडू सेहो एहि बातक पश्चात्ताप कयने छलीह जे ई अ-राष्ट्रीय भारतीय युवकक अनेक पीढ़ी कें पश्चिमक अंध बौद्धिक बन्धनक हाथ मे बेचि देलक अछि।' मुदा, एकर विपुल लाभोक उपेक्षा नहि कयल गेल। टैगोर उनैसम शताब्दीक उदार-हृदय नुक्तिक विषय मे लिखने छथि।[2]

धार्मिक, धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक आ मानवीय विषय पर आधारित साहित्यक एक नवीन धारा आब भारत मे प्रवाहित होबए लागल। भारतीय बुद्धिजीवी 'ईसा मसीह आ हुनक प्रेम-सेवाक आदर्श कें अतीतक महान भारतीय दर्शन आ बौद्धिक सिद्धान्त सँ जोड़ऽ लागल। राजा राममोहनराय मूर्तिपूजाक परित्याग कऽ जे आरम्भ कयलनि ताहि हेतु हुनका संत्रस्त कयल गेलनि। ओ 1828 मे ब्रह्म समाजक स्थापना कयलनि। विरोधक अछैतो अनेक महान व्यक्ति एहि सुधरल हिन्दू-सम्प्रदाय कें आगाँ बढ़ौलनि। संगहि संग सामाजिक सुधारो होइत गेल, यथा सती-प्रथाक अन्त, स्त्रीक क्रमिक मुक्ति, जाति प्रथाक अभिशापक प्रति जागरूकता आ भारतीय लेल विदेश-यात्राक अनुमति। निश्चयतः नवीन पश्चिमी प्रभावक संग शिक्षा अंकुरित होबऽ लागल।

देवेन्द्रनाथ टैगोर आ केशवचन्द्र सेन दस वर्ष धरि एक संग काज कयलनि तथा राममोहन राय द्वारा प्रारम्भ कयल गेल ब्रह्म समाज सँ एक सबल सम्प्रदाय निर्माण कयलनि, मुदा केशवचन्द्रक उपदेश मुख्यतः ईसाइ सिद्धान्त आ ढंग पर आधारित छल, जे मूल ब्रह्म समाज सँ भिन्न एक नवीन शाखाक रूप मे उद्भूत भेल। वास्तव मे, आब विभाजन भऽ गेल छल। 1866 मे मूल ब्रह्म समाजक आदि ब्रह्म समाजक रूप मे उद्भूत भेल आ पश्चात् भेल 'साधारण ब्रह्म समाज। केशवचन्द्र सेनक शाखा 'नव विधान' कहौलक। ओहि समयक महान बुद्धिजीवी लोकनि भारतक दोसरो भाग मे सुधरल धार्मिक संप्रदायक स्थापना कयलनि, यथा पश्चिम मे प्रार्थना समाज, उत्तर मे आर्य समाज आ दक्षिण मे थियोसाफिकल सोसाइटी। बंगाल मे, ब्रह्म समाजक अतिरिक्त, रामकृष्ण मिशनरी सभ श्री रामकृष्ण परमहंसक महान व्यक्तित्व पर आधारित धार्मिक उपदेश आ जनसेवाक एक विशाल चक्र चलौलक।

---

1. रिगासा इन इंडिया मे श्री अरविन्द, पृ० 26
2. इंडो-इंगलिश पोएट्री, ले०—पी० सी० कोटोकी, पृष्ठ 5-6

ई एक नवीन चुम्बकीय धर्म छल। ई सभ सम्प्रदाय कोनो विशिष्ट धर्मक निन्दा करवा मे नहि, अपितु अपन सहिष्णु विश्वासक अन्तर्गत सभ धर्म केँ समटव आ आदर देवा मे विश्वास करैत छल।

'इंडो-एंग्लियन लेखकोक यैह विशेषता छलनि। कविगण अंग्रेजी भाषा केँ ग्रहण कयलनि आ ओकरा प्राच्य साँच मे मढ़ि देलनि। आयरिश, वेल्शपोलिश, फ्रेंच आ कोनो दोसर अंग्रेजी लेखकक समान, विम्बावली तँ हुनक अपन देशक छलनि मुदा माध्यम अंग्रेजी छलनि। मुदा इंडो-एंग्लियन कविताक सम्बन्ध मे एक आलोचना कयल जाइछ जे ई वस्तु आ जीवनक बाहरो पक्ष किंवा सतहेक अधिकतः विम्बन कयलक अछि। इंडो-इंग्लिश कविता अधिकतः ओजविहीन रहल अछि आ श्री अरविन्दक शब्द मे, एहि कविता मे 'कालतत्त्व' 'स्थायी तत्त्व' सँ ऊपर उठि जाइत अछि।'[1] इंडो-एंग्लियन कविक विषय-वस्तु पौराणिक, आख्यानात्मक, ऐतिहासिक अथवा केवल दैनिक अनुभूति पर आधारित होइत छल। कतेको तँ नव भाषाएँ एहि प्रकार क्रीड़ा करैत छलाह, मानू हुनका कोनो नवीन खेलौना भेटि गेल होइनि। ओ प्रयोग करैत छलाह, रचना प्रकारक अनुकरण करैत छलाह आ अंग्रेजी भाषाक अपन प्रयोग पर स्वयं केँ अत्युच्च अनुभव करैत छलाह, किन्तु अधिकांश कविताक मानदंड ओहि प्रकारक ऊंच नहि छल, जाहि प्रकारक यीट्स, डाइलन टॉमस आदि कविक कविताक अंग्रेजी मे लिखैत छलाह, मुदा आयरिश वा वेल्स वा दोसर देशक छलाह।

उनैसम शताब्दी मे पश्चिम आ पूवक बीच लेव-देवक भावना विचार आ संस्कृतिक नव सम्प्रदाय केँ जन्म देलक, आ एहि दलक नेता छलाह केशवचन्द्र सेन। हुनक आत्मीय मित्र मे अघोरनाथ चट्टोपाध्याय सेहो छलाह, जे लगले विदेश सँ घुरल छलाह आ देश भक्तक उत्साहक संगहिं सुधारक कामना सँ भरल छलाह। ओ नव विधान सम्प्रदायमे ब्रह्म बनि गेलाह आ स्वयं ब्रह्मानन्द सेन हुनका दीक्षा देलथिन। वरदा सुन्दरी सेहो सेन-परिवारक एक अन्तेवासिनी छलीह। एहि प्रकार सरोजिनीक माता-पिता जाग्रत भारतक एक अत्यन्त गतिमान दल सँ बहुत पहिने सम्बद्ध भऽ गेल छलाह। जाहि परम्परा मे सरोजिनी उत्पन्न भेलीह, से सभ वर्ण धर्म आ जातिक प्रति उदार आ सहिष्णु छल। बाल्यावस्थे सँ हुनका पूर्व-पश्चिम साह्मचर्य ने विश्वास करब सिखाओल गेल छलनि। जखन 1879 मे हुनक जन्म भेलनि तँ भारतवासी अंगरेजी मे लिखबाक स्वप्न देखि रहल छल आ अघोरनाथ अपन उत्तराधिकार अपन कन्या केँ सोंपि देलनि। मुदा, अघोरनाथक हैदराबाद गेलाक बादक पृष्ठभूमि हिन्दू इस्लाम आ अंग्रेजी संस्कृति सँ सम्मिश्र छल। मुल्कराज आनन्द लिखैत छथि, "यद्यपि सरोजिनी अपना केँ अभिव्यक्त करबाक लेल

1. इंडियन राइटिंग इन इंग्लिश, पृ० 40

पश्चिमी भाषा आ पश्चिमी तकनीक अपनौने छलीह, मुदा हमरा ओ मुख्य रूप सँ हिन्दुस्तानी लगैत छथि गालिब, जौक, मीर, हाली आ इकबालक परम्परा मे अयनिहार।"[1] ब्रह्मदर्शन, सहिष्णुता ओ मानवताक प्रति प्रेम कें सशक्त पृष्ठभूमि क संग ओ हैदराबाद हिन्दू-मुस्लिम संरचनाक शिशु छलीह। फारसी कविता सेहो हुनका पर्याप्त प्रभावित कयने छल। ओ अपन दृष्टिकोण मे अंग्रेजियतो रखैत छलीह।" हुनक किछु कविता एहन वाह्य भावनात्मक उद्गार सँ किछु ऊपर उठल अछि जे किंवदन्ती द्वारा पूब कें जननिहार अंग्रेजो लेखकक भऽ सकैत छल— एक समालोचकक कहव छनि। मुदा, हमरा बुझि पड़ैछ जे सरोजिनी भारत मे छलीह आ एतहि रहिकऽ आनन्दित छलीह। निश्चये जँ ओ नगाड़ा आ झपतालक ताल आ लोकगीतक धुनि नहि सुनने रहितथि, जँ ओ फेरीवलाक टाहि आ चाकर नदी मे कुदैत नाविकक सोझ-साझ दर्शन नहि कयने रहितथि, जँ ओ सपेराक वीन बजबैत आ ओकर ताल पर नाग नचैत वा चूड़ीवाला किंवा कहार कें नहि देखने रहितथि, जँ ओ सभ सँ फराक पर्दानशीन संसारक मोहक देशी-विदेशी सुन्दरीक संग नहि रहल रहितथि आ अन्ततः जकरा विषय मे ओ लिखलनि ओहि समकालीन महापुरुष लोकनिक प्रति ओ प्रेम आ प्रशंसापूर्ण नहि रहितथि तँ ओ एतेक भव्य गीत कथमपि नहि लिखि सकितथि। यैह भारतक ओ मोहक संसार छल जे ओ अंग्रेज पाठकक समक्ष रखलनि आ जकर निर्माण मे ओ बहुत आनन्द प्राप्त कयलनि। एतऽ भारत छल जाहि पर हुनका अभिमान छलनि, एक एहन भूमि जाहि मे ओ उल्लासपूर्वक रहैत छलीह आ जकरा सेवा आ प्रेम पुरस्सर श्रद्धा करैत छलीह। अपन एहि प्रिय देश कें ओ विदेश कें बुझाबऽ चाहैत छलीह। अपन देशक दोष आ अनेक कमी कें प्रकाश मे आनऽवला प्रचार मे हुनक विश्वास नहि छलनि। किएक होइतनि विश्वास? कविता हुनका लेल सौन्दर्य छलनि—ने कि खाली जीवनक वास्तविक, कुरूप, निराशाजनक आ निम्न प्रवृत्ति। ई अस्तित्वक वास्तविकता भऽ सकैछ, मुदा ओ नहि छल जे सरोजिनी कें प्रेरित करैत।

ओ जखन सर्जनशील छलीह तखन भारत पराधीन देश छल, आ सरोजिनी अन्य देशक समक्ष अपन मातृभूमिक स्थिति कें ऊंच उठबऽ चाहैत छलीह। एकबेर ओ हमर माय कें कहने रहथिन जे विलेत महान एहि लेल बनल, किएक तँ ओ सभ कखनो अपन गलती नहि मानैक। किएक मानी हमहीं जखन कि हमरा अपन देश कें स्वतन्त्र आ शक्तिशाली राष्ट्र बनयबाक अछि? अतएव, ओ भारतक सम्बन्ध मे अनेक रंगीन कविता अंग्रेजी मे लिखलनि, जे हुनक समय मे भारतक राजकीय भाषा छल आ एखनो आछिए भारतीय संघक सरकारी भाषा, राज्य-भाषा आ एक राष्ट्रभाषा हिन्दीक संग। अतः अंग्रेजी मे लिखल गेल भारतीय

1. दि गोल्डेन वेथ, पृ० 102, इंडो-इंग्लिश पोएट्री पृ० 48 में उद्धृत।

साहित्य स्वयं भारतक एक निश्चित अंग थिक। भारतक विकास मे विलेतोक भागीदारी छैक, ओतवे जवता पहिलुक विदेशी आक्रमणकारी सभक। आर्य भाषा संस्कृतो भारत मे सभ सँ पहिने आर्य आक्रमणकारी द्वारा आनल गेल छल आ आब स्वयं भारतीय बनि गेल अछि। ग्रीक, मुगल आ अन्य प्रभाव हमरा भीतर पचल अछि। एहि मे भारतक महानता छैक, आ हम कहियो अपना संग तादात्म्य कें नहि गमौलहुँ अछि, भारत द्वारा गृहीत कोनो भाषा मे लिखिकऽ वा बाजिकऽ हम कहियो विदेशी नहि भेलहुँ अछि। भारतवासीक द्वारा स्वाभाविक आ प्रवाह-पूर्ण अंग्रेजी लिखवाक एहि पक्षक सरोजिनी नायडू एक विश्वस्त कन्या छलीह। 'इंडो-इंगलिश साहित्य विविध अनेकता मे एकताक भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण कें प्रदर्शित करैत अछि।[1]

अपन मातृभाषाक अतिरिक्त दोसर भाषा मे लिखनिहार कवि, एतऽ धरि जे उपन्यासकारक आलोचना करबाक संकीर्ण मनोवृत्ति कें हानिकर मनबाक चाही, किएक तँ एहन अनेक निम्न कोटिक कवि छथि जे अपन राष्ट्रीय भाषा मे लिखने छथि, आ एहन विशिष्ट कवि सेहो छथि, जे दोसर भाषो कें अपन माध्यम चुन-लनि अनेको तथाकथित अंग्रेजी कवि निम्न कोटिक पद्य लिखने छथि। प्रायः ई अनुभव कयल गेल अछि जे अंग्रेजी स्वयं अंग्रेजक लेल साहस आ चिन्ताक एक निरन्तर स्रोत थिक।[2] दोसर दिस अनेक लोक इशारा कयने छथि जे किछु भारतीय कतेको अंग्रेजक अपेक्षा रहरहाँ अधिक शुद्ध अंग्रेजी बजैत जथि। अनेक व्यक्ति अग्रेजी मे कयल गेल भारतीय लेखन कें राजनीतिको मंच सँ जँचैत छथि, कखनोकाल तँ भारतीये नहि, अपितु केवल प्रादेशिक वा केवल देशभक्तिक मापदण्ड सँ। उदाहरण लेल हमरा कहल जाइछ जे पुरान कवि, यथा सरोजिनी नायडू, तरु दत्त, श्री अरविन्द आ अन्यो अंग्रेजी-उन्माद सँ पीड़ित रहथि। मातृ-भाषाक एहि अग्राह्य हानि कें कोन परिस्थिति उत्पन्न कयलक।[3] मुदा की आधुनिक इंडो-एंग्लियन कवियो एहि उन्माद सँ, जँ अधिक नहि तँ, पीड़ित नहि छथि? संगहि बंगाली उन्माद, उड़िया उन्माद, तमिल उन्माद, हिन्दी उन्माद आदि योक मनोवृत्ति अछि। एहि प्रकार कविता बेसी-सँ-बेसी प्रादेशिक भऽ जायत, जे नीक होयत जँ योग्य अनुवादक द्वारा ओ दोसर स्तर धरि पहुंचि सकय, किन्तु केओ उदाहरणार्थ श्री अरविन्द अथवा सरोजिनी नायडू (जँ इंडो-एंग्लियन कविएमे सँ कहल जाय तँ) आदि सँ अधिक राष्ट्रीय वा देशभक्त नहि भऽ सकैत छल। मुदा ईहो बात मानऽ पड़त जे ओहि गौण कविगण कें, जे अंग्रेजी मे पद्य लिखबा मे लागल रहैत छथि आ अपना कें कवि बुझैत छथि, लिखबा सँ रोकबाक चाही।

1. इंडो इग्लिश लिटरेचर इन दि नाइन्टीन्थ सेंचुरी, ले० जान अलफोन्सो करवल, पृ० 1
2. दि स्वान एंड ईगल, पृ० 2
3. माडर्न इंडियन पोएट्री इन इंग्लिश, पृ० 5

ओहि मे अनेक केँ ई सूत्रो नहि जानल छनि जे अंग्रेजी कविता कोना लिखल जयवाक चाही ?

अन्त मे, एहि वात पर आश्चर्य होइछ जे एक राष्ट्र आ एक भाषाकेँ मिलाकऽ आ ओहिपर जोर दैत इंडो-एंग्लियन कविताक लेवुल की जरूरी छल; जखन कि सम्पूर्ण कला स्वतंत्र आ निर्वाध होयवाक चाही। निश्चयतः, अपन स्वतंत्रताक अवरोधकेँ नापसिन्न करऽ(वाली गावऽ)वाली पक्षी सरोजिनी नायडू इंडोएंग्लियन कविक श्रेणीमे जमैत नहि छथि। आखिर क्यो यीट्सकेँ आयरिश एंग्लोकवि अथवा डायलन टामसकेँ वेल्श-एंग्लियन कवि नहि कहैत अछि। सरोजिनी नायडू स्वयं एक प्रतिभाशाली गतिमान व्यक्तित्व छलीह जे जीवनक प्रति ओहि स्वस्थ दृष्टिकोणक द्वारा दुःख-दर्दकेँ जीति लेने छलीह जाहिमे कदाचित कहियो अस्वस्थ अवरोधकक चिह्न देखाइ पड़ल छलैक। की ओ हुनका लोकनिक एक हिस्सा मात्र वनऽ चाहैत छलीह जे आइ इंडो-एंग्लियन कविता लिखैत छथि, किन्तु पर्याप्त भिन्न छथि ? ओलोकनि अपनाकेँ सरोजिनीक पद्यसँ श्रेष्ठ मानैत छथि, जेनाकि किछु गोटे हुनका कविता कहैत छथि। वेस तँ सरोजिनी आ तरु आ श्री अरविन्द, आ ओहि सभकेँ जे भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय आ समयमे लिखलनि, केँ छोड़ि दियनु, हुनका जीवनमे अपन वनवऽ दियनु, मुदा हुनकालोकनिकेँ सूची-वद्ध कऽ हुनकासभपर लेवुल नहि लगाउ जाहिसँ हुनक स्वतंत्रता अवरुद्ध होइन।

17
काव्य आ दर्शन

(1)

सरोजिनी नायडू अपन कवि-जीवनमे बहुत जल्दी अंग्रेजी काव्यक इतिहासमे अपन स्थान बना लेलनि, अंग्रेजीमे लिखनिहारि भारतीयक रूपमे नहि, अपितु एहन व्यक्तिक रूपमे जनिक अंग्रेजी स्वाभाविक माध्यम बनि गेल छलनि आ जकर ज्ञानमे ओ बढ़ि-चढ़िकऽ छलीह। तथापि, भारतक हेतु ओ विदेशी नहि छलीह आ अपन देशक विषयमे ओहि कलमसँ लिखैत छलीह जे एक शुद्ध भारतीयक छल, एक राष्ट्रभक्त पुत्रीक छल, जे अपन देशसँ प्रेम करैत छल आ अपन विशाल राष्ट्रक एक अंतरंग हिस्सा छल। एहि विषयपर कखनो बहुत बेसी जोर नहि देल जा सकैछ, अंग्रेजीक पाठक हुनक अत्यधिक प्रशंसा करैत छल आ अंग्रेजी साहित्यमे एखनहुँ हुनक स्थान सुरक्षित छनि। हुनका द्वारा कयल गेल सत्यक मूल्यांकनक, विशेषत: हुनक किछु रहस्यवादी आ प्रतीकात्मक पद्यक बहुत जल्दी प्रशंसा भेलनि आ 'आक्सफोर्ड बुक ऑफ इंग्लिश मिस्टिक भर्स' मे प्रतिष्ठित ओ सर्वदा जीवित रहतीह। ओहि संकलनमे सरोजिनीक समावेश ई सिद्ध करैछ जे हुनका वास्तवमे अंग्रेजी साहित्यमे स्थान भेटल छलनि।

ओहि पोथीमे समाविष्ट हुनक तींन कवितामे सँ पहिल थिक—

आत्माक प्रार्थना

शैशवक गर्वमे कहलहुँ हम तोरासँ
अरे तोँ, हमरा जे बनबै छैं निज साँससँ
बाज, मालिक, कह तों हमरा
नियम अपन अंतरंग, जीवन आ मृत्युक।
पीबऽ दे हमरा सभ आनन्द आ कलेशकेँ
जकरा नापि सकै अछि तोहर अमर हाथ
कारण जे चूसि लेत हमर अतृप्त आत्मा
धरतीक सर्वाधिक कटु, सर्वाधिक मीठकेँ।

हटावह नहि हमरासँ कोनो खुशी, कोनो संघर्षक दर्द,
रोकह नहि इनाम कोनो, कोनो कलेश अभीष्ट हमर
जटिल तथ्य प्रेम आ जीवनकेर
आ कव्रक रहस्यमय ज्ञान।

मालिक हे, देहल तोँ उत्तर गँभीर आ मन्द
वौआ, हम सुनव तोर प्रार्थना
आ बुझतह तोर अविजित आत्मा
समग्र भावनामय उल्लास आ निराशा।

पीवह तों हर्ष आ ख्यातिक घोंट
आ प्रेम जरौतह तोरा आगि जकाँ
आ पीड़ा करतह स्वच्छ तोरा ज्वाला-सन
तोहर कामनासँ हटावऽ ले' मैलकेँ।

अतः चाहतह तोहर परिमार्जित आत्माा
पावय मुक्ति अपन आन्हर प्रार्थनासँ
आ वीतल ओ माफ, गोहरौतह सिखबाक लेल
हमर शान्तिक रहस्य सरल।

हम, झुकिकऽ अपन सप्तलोकक उँचाइसँ
कहव तोरा अपन जीवनदायिनी महिमा
जीवन थिक हमर प्रकाशक एक त्रिपार्श्व
आ मृत्यु हमर आकृतिक परिछाँही

हुनक किछु गीतक अपेक्षा छन्द अधिक सोझ छनि। हुनक चतुष्पदीय अपन सरताक कारण आर अधिक सबल छनि, हुनक तुक अधिक स्वाभाविक होइत छनि किछु अन्य कविताक अपेक्षा जतऽ ओ वेसी काल एक दोसरक ऊपर बहुत वेसी उपरौँझ करैत छथि। आत्माक प्रार्थनाक रहस्यवाद स्पष्ट अछि ओ वास्तवमे ईश्वरक आवाज सुनने अछि। ओ अपन शान्तिक रहस्यकेँ हुनका बुझयबाक वचन दैत अछि। दर्शन स्पष्ट अछि। मुद्रा, ओ जीवन आ मृत्युक खाली चारू दिस घुमैछ।

'आक्सफोर्ड बुक आफ इंग्लिश मिस्टिक भर्स' क अपन दोसर कवितामे सरोजिनी पुनः शान्तिक इच्छा करैत छथि, जे हुनका संसारक कोलाहल आ संघर्षसँ मुक्त कऽ देतनि :—

कहैत लोक: दुनियाँ भरल अछि भय आ घृणासँ
आ जीवनक सकल पाकल जजातिक खेत
वाटे धरि रहैछ कठोर भाग्यक आराम-रहित हाँसूक।

मुद हम, हे मधुर आत्मा प्रसन्न छी जे जन्म लेल
जखन अन्न ऊपर उठैत छतसँ
देखैं छी सोनहुला पंछी तोहर प्रभातक।

हमरा की परवहि जगतक इच्छा आगर्वक,
के जनैछ, संतरंगी पाँखि उड़ऽ आ चमकऽवला
घर घुरैत परवा तोहर संध्याक ?

हमरा की परवाहि जगतक मुखर थाकनि केर
देखैत के सपना उषाक खरिहानमे
जकरा तों दैत छह आशीष पक्व मनक मृदु मोटासँ ?

कह', ध्यान दी हम विनाशक उदास असगुनपर
अथवा की डेरा जाइ सुनल-सुनायल एकान्त'आ अन्हार
मूक आ गूढ़ आतंकक साराक ?

कारण, हमर हर्षित हृदय निचीत आ सान्द्र अछि तोरासँ
जीवित उन्मादक हे अनन्त आसन !
अनन्ताक हे अति घनिष्ठ सत्व !

विम्ब अत्यन्त स्पष्ट अछि आ क्यो अपन खिड़की सँ बाहर निहारैत आ 'अनन्तताक अतिघनिष्ठ सत्व' सँ निपीत आ सान्द्र संसारमे सोनहुला पक्षीक सँग उड़ैत सरोजिनीकेँ देखि सकैत अछि। एतऽ एहन संभीर आ प्रमाणिक कविता अछि जे सरोजिनीकेँ महान अँग्रेजीक रहस्यवादी कविक हृदयक गंभीरतामे लऽ जाइछ। दुख एही वातक अछि जे ओ एहि प्रकारक बड़ कम लिखलनि।

तेसर आ अन्तिम कविता दोसराक अनुभवसँ संवद्ध अछि स्वयं बुद्धक अनुभवसँ—

'पद्मपर आसीन बुद्धक प्रति'

भगवान बुद्ध, निज पद्मासन पर
प्रार्थना करैत आँखि आ उठल हाथ सँ,

कोन उल्लास भेटैत अछि अहाँकेँ
अपरिवर्तनीय आ अन्तिम ?
केहन शान्ति, हमर ज्ञानसँ अप्राप्त
मनव-जगत सँ विनष्ट ?

वहैछ परिवर्तन वसात सदिखन
हमर वाटक कोलाहल होइत,
काल्हुक अजन्मा दुख लऽ लैछ स्थान
विगत दिवसक पीड़ाक ।

स्वप्न सँ वहराइत स्वप्न, संघर्षक पाछाँ अवैत संघर्ष
आ मृत्यु करैत तहस-नहस जीवनक जालकेँ ।
हमरा सव लेल अछि संताप आ ताप
हमरा लोकनिक अभिमानक टूटल रहस्य
पराजयक क्लान्तिमय पाठ
फूल अपसारित ओ फड़ निखिद्ध
किन्तु, श्रेष्ठ जयसँ प्राप्त शान्ति कहाँ पाबी ?
भगवान वुद्ध, अहाँक पद्मासनक ?

बेकार करसँ हम सव पावऽ चाहै छी
अपन अगम्य अभिलाषा
पावऽ चाहै छी दिव्य शिखर
धँसैत श्रद्धा आ थकैत पयरसँ,
मुदा शून्ये विजयी हैत वा करत वशमे
हमर आत्माक स्वर्गोन्मुखी भूखकेँ ।

अन्त, चोरानुक्की खेलाइत आ सुदूर
एखनो हमरा सवकेँ लोभवैछ, इशारा करैछ उड़ानसँ
आ हमरा सभक समस्त मर्त्य क्षण अछि
अनन्तक सत्र-मात्र
कोना प्राप्त करब हम सब महान, अज्ञात
पद्मासनक निर्वाण ?

'दि आक्सफोर्ड वुक आफ इंग्लिश मिस्टिक भर्स' मे प्रकाशित आ सरोजिनीक पूर्वक प्रकाशनसँ संकलित ई तीन कविता मात्र हुनक रचित प्रतीकात्मक अथवा

रहस्यवादी कविता नहि अछि। वास्तवमे तीन गोट हुनक पूर्वक संग्रह प्रायः गंभीर जीवन-दर्शन आ परलोकक दर्शनसँ यत्र-तत्र सिंचित अछि। जखन ओ विलेंतमे छलीह तखन ने केवल साइमन, गाँस आ तत्कालीन अन्य कवि आ समालोचक सँग स्वतंत्रतापूर्वक विचरण करैत छलीह, अपितु राइभर्स क्लब कतिपय सदस्य संग सेहो, जतऽ प्रायः शब्द रचनामे ओ पूर्णता प्राप्त कयलनि, कारण ओ निश्चियतः 'शब्दिक आ तकनीकी उपलब्धि, पद्य रचना आ लयपर अधिकार अर्जित कयने छलीह, जाहि विनु अपन दर्शन आ अनुभूतिकेँ सुमधुर काव्यमे परिवर्तित नहि कऽ सकैत छलीह।'[1] वस्तुतः प्रेम, श्रद्धा, देशभक्ति आ स्वतंत्रताक क्षेत्रमे हुनक कतोक सपना, तीर्थयात्रा आ दर्शन छलनि। ई ओहि रहस्यात्मक क्षणमे अंकित स्वयंस्फूर्त आ तीव्र भावनात्मक अनुभूति छलनि जखन सरोजिनी स्वयं प्रवाहित शब्दसँ अभिभूत भऽ गेल छलीह। ओ काव्य-विचारक निरंतर शृंखला रचनाक प्रयास नहि कयलनि। ओ 'गीतक नान्हिटा पक्षी सन उड़ान' लिखलनि आ एहीसँ हुनका सर्वाधिक सफलता प्राप्त भेलनि। जखन ओ अनेक दार्शनिक योजना बनयबाक चेष्टा कयलनि, उदाहरणार्थ 'दि ब्रोकन विंग' मे, 'मन्दिर' आ 'प्रेमक तीर्थयात्रा' मे जतऽ पूर्ण आत्मनिषेधसँ स्वयँकेँ समर्पित करऽ 'वाली स्त्रीक मानवीय आ दिव्य प्रेमकेँ सम्मिश्र करबाक चेष्टा अछि, तखने ओ पाठकक विश्वास पयबासँ वंचित रहि जाइत छथि। हुनक मानवीय भावना अत्यधिक तीव्र भऽ उठैत छनि जेना पहिने कहल जा चुकल अछि।

ओ निरंतर मृत्यु-कामना अभिव्यक्त करैत छथि, मुदा ओहिमे ओ गंभीरता नहि अछि जतबा, जेना इलियटक जेरोण्टियनमे।

इलियटक शब्द संवादात्मक अछि। ओ पाठककेँ अपन विश्वासमे लऽ लैत छथि। एहन चित्र सरोजिनी मृत्युक संग अपन संवादकेँ चित्रित करबामे असफल सन लगैत छथि, संगहि ओ अपन अतीत 'शून्य' मे बिनु 'उद्देश्य' क व्यतीत कयलनि अछि, मुदा ओ हाजिर नहि छथि आ अपन 'विहित काज' केँ पूरा करबाक लेल कटिबद्ध छथि। एक बेर गोखले हुनकासँ पुछने रहथिन जे किएक 'हुनक कखनो नहि छुटैवला चमकक पाछाँ सतत उदासी नुकायल रहैछ की ओकर कारण थिक जे ओ मृत्युक एतेक समीप आबि गेल छलीह जे ओकर परिछाँही एखनहु हुनकासँ सटल अछि?' सरोजिनी उत्तर देने रहथिन 'नहि, हम जीवनक एतेक समीप आबि गेलि छी जे ओकर ज्वाला हमरा डाहि देलक अछि। 'मुदा, मानवीय यथार्थक ओ विशद चित्रण एतऽ नहि अछि जे टी० एस० इलिएट अत्यन्त सरलता सँ खिचने छथि। सरोजिनीक गीतक उड़ान चाहे जाहि कोनो कारण हो, सतत जीवनमे एकदम यथार्थ नहि अछि, यद्यपि जीवनक अनेक काठिन्यकेँ जितयबाक हुनक अपन इच्छा बहुते यथार्थ छनि।

1. इंडियन राइटिंग्ज इन इंगलिश, पृ० 175

(2)

सरोजिनीक कविताक पर्याप्त प्रशंसा भेलनि। 'दि गोल्डन थ्रैशोल्ड' 1905 मे पहिल बेर छपल आ फेर लगले-लगले 1906, 1909, 1914 आ दू बेर 1916 मे विलियन हीनिमान द्वारा ओकर पुनर्मुद्रण भेल। ई उल्लेखनीय बात छल ई एतेक युवा भारतीय कन्या एक अर्जित भाषामे कविताक अत्यधिक विक्रययोग्य संग्रह तैयार कऽ सकलीह। सरोजिनी ओहि समय 17 आ 26 क बीचक छलीह जखन ओ 1905 मे प्रकाशित कविताक रचना कयलनि। 'पद्म पर आसीन बुद्धक प्रति' एही पोथी सँ 'दि आक्सफोर्ड बुक ऑफ इंग्लिश मिस्टिक भर्स' मे संकलित कयल गेल छल, सरोजिनीकेँ महत्तम अँग्रेजी कविक श्रेणी मे समाविष्ट करैत। युवा भारतीय कवियत्रीकेँ दोसर सम्मान तखन भेटलनि जखन 'दि माडर्न न्यूज' मे उक्त कविताक पुनमुद्रण कयल गेल। 'दि गोल्डन थ्रैशोल्ड'क कविताकेँ एके सँग' 'नींममे नचैत रुमानी भगजोगनी' कहिकऽ विसर्जित नहि कऽ देल गेल। जेना कहल जा चुकल अछि, अँग्रेजी मे हुनक उत्तम समीक्षा भेलनि। तत्कालीन महान कवि सेहो एहि विचित्र स्वप्नदर्शी भारतीय कन्याक पद्यक प्रशंसा करबामे धखाइत नहि छलाह। एक समालोचक कहलनि 'चित्र थिक पूबक, ई सत्य, मुदा ओहिमे किछु मूल रूपसँ मानवीय अछि एहिसँ ई सिद्ध होइत लगैछ जे उत्तम कविता ने पूबक होइत अछि आ ने पश्चिमक।' सरोजिनी नायडू लिखबाक आ सफल होयबाक लेल अपन संसार आ अपन समयक पूरा उपयोग कयलनि, जेनाकि कविगणकेँ मुद्रित पृष्ठपर ई संसार प्रक्षेपित करबाक चाहिऐक। मुदा, ओ संसार जीवनक अनावृत यथार्थक अपेक्षा रोमांसक छल, यद्यपि ओ अनेक दुःखान्त प्रथा आ घटनाकेँ अपन काव्यक वर्ण्यविषय बनौलनि, तथापि हुनक गीतमे सतत किछु अयथार्थ रहैत छलनि। जी० बी० यीट्स हुनका पूर्ण रुमानी कहैत छथिन। एडवर्ड टामसक अनुसार हुनकामे हुनक गुण परिपूर्ण मात्रा मे छनि,' आ जखन 1912 मे 'दि वर्ड आफ टाइम' क प्रकाशन भेल तँ ओ कहलनि जे सरोजिनी 'असाधारण वाह्य छटा आ आन्तरिक धवलता प्राप्त कयने छथि।' एक दोसर समीक्षकक अनुसार, 'ओ ताराक समान स्मरणीय शब्द पुष्ठ पर छिड़िया दैत छथि, तैयो ई जनैत छथि जे कोन प्रकारेँ कविताकेँ अन्त करबाक लेल सौन्दर्यकेँ बचाकऽ रखल जाय। ओ भारतक एलिजाबेथ बैरिट ब्राउनिंग छथि।'[1] ई केवल घसल-पीटल बाते नहि अछि, अपितु यथार्थ प्रशंसा थिक। सरोजिनीक कविताक आनन्द डेनिस स्टॉल, ई० एम० फॉस्टर, हरमन ओउल्ड आ गॉसवर्थ सेहो लेने छलथिन।

सरोजिनीक भाषा स्फटिक सदृश स्वच्छ छनि। बेसी अधिक बुझयबाक

1. इंडियन राइटिंग्ज इन इगलिश, पृष्ठ 176

प्रयोजन नहि पड़ैछ। एकटा नेनो पढ़िकऽ बुझि जा सकैछ। किन्तु, नेनाकेँ भारतीय सूर्य आ चन्द्रमाक नीचाँ रहक चाही। एहन लोंकक लेल सभटा स्पष्ट अछि। सरोजिनी कोनो अवस्थामे गूढ़ होयबाक प्रयत्न नहि करैत छथि, आ यैह कारण थिक जे ओ ओहि जार्जियन सम्प्रदायमे कहियो जमि नहि सकलीह, जे अपन लेखन-स्वातंत्र्यमे सभ प्रकारक तुक आ लयकेँ, एतऽ धरि जे स्पष्ट अर्थचित्रकेँ सेहो, हौंआ बूझि लेने छल। जार्जियावासी, जे 1911-12 मे अपन नव्य काव्य-सम्प्रदायक जन्म देलक, पुनर्जागरण अथवा रुमानी युगक समान दोसर प्रसिद्ध युग स्थापित करऽ चाहैत छल। विक्टोरियन आ एडवर्डियन कविताक सुषुप्त आ अति पारस्परिक कालक उपरान्त ओ सभ एहि प्रकारक पुनरुत्थान पर पूर्ण भरोस रखैत छल। मुदा, जार्जिया वासी सेहो कोनो कम स्वप्नदर्शी नहि छल आ एहि पक्षमे सरोजिनीयो ओहि सम्प्रदायक सदस्या बनबाक योग्यता अवश्ये रखैत छलीह। कारण, बीसम शताब्दीक दोसर दशकमे एहि नव कविगण लेल, जनिकालोकनि पर एहि सम्प्रदायक उद्घाटन कालमे प्रथम महायुद्धक असरि नहि पड़ल छल, ओ वसन्त काल छल, टटका वसात आ सात बजे भोरक समय। एहि तरुण उत्साही गीतकारलोकनिकेँ तखन धरि अराजक भविष्य आक्रान्त नहि कयने छलनि। अवनतिक युग बीति चुकल छल, अपन स्वर्ण पारलोकीय दर्शनक प्रतीकवादी अदृश्य भऽ चुकल छलाह। ओतऽ छल एक नवीन जीवन आ एक उत्पाद्यमान नव युग। ओ सभ लार्क आ बुलबुलक गीत गावि रहल छल।

भारतोमे स्वतंत्रताक नव रश्मि प्रस्फुटित भऽ रहल छल। सरोजिनी एहि वासंती संसारकेँ बहुत पहिनहि ताकि लेलनि। निश्चित रूपसँ ओ पद्यक नवीन प्राच्य-सह-आंग्ल रूप निर्मित कऽ लेलनि। प्रत्येक वास्तविक कविक हेतु आवश्यक नवीन शैली द्वारा ओ एक नव सम्प्रदाय बनौलनि। हुनक कविता काव्य आ भाषाक विकास लेल धरोहर छलनि। ओ एहन सँसारकेँ जे कृत्रिम, कुरूप, रोमांसविहीन आ घोर यथार्थवादी अछि, स्फूर्ति प्रदान करैत अछि। एक अंग्रेज समालोचक हुनका 'साड़ीमे सुसज्ज आधुनिक अर्नाल्ड' कहिकऽ छोड़ि दैत छथिन, जाहि पर एक भारतीय समालोचकक प्रश्न अछि, 'की फ्राक वा स्कर्ट पहिरने मैथ्यू अर्नाल्ड कोनो कम असंगत छथि ?'

प्रायः विलेंतमे अपन लोकप्रियताक अछैतो सरोजिनी नायडूकेँ अँग्रेजी साहित्यमे स्थान पयबाक प्रयास कयनिहार एक सामान्य भारतीय जकाँ बुझल जाइत छल, आ जेम्स जायस, यीट्स, सीनिओ केसी, फाकनर आ अन्य आयरिश अथवा अमेरिकन लेखकक तुलनामे ओ कखनो हुनका लोकनिक नाप धरि नहि पहुँचि सकलीह आने समयानुरूप विचार-पद्धतिक सर्जना कऽ सकलीह। उदाहरणार्थ यीट्स बहुत-किछु प्रतीकवादी छलाह आ अँग्रेजी लेखकपर अपन प्रबल प्रभाव राखऽवला फ्रांसीसी प्रतीकवादीगणक कृतिक अनुकरण करैत छलाह, मुदा प्रतीक-

वादक संगहि विक्टोरियन कालक अवनतियो आयल आ सरोजिनी कखनो जानि-बूझिकऽ एहि विचार-पद्धतिक अनुसरण नहि कयलनि आ ने लेखन स्वातंत्र्ययुक्त जार्जियावासीक अथवा अन्ततः एक आशा विहीन, यथार्थवादी निरपेक्ष, आत्म-समर्पणक अवस्थामे एहि कालक अराजक त्रासदी पर लिखैऽवला आधुनिक सम्प्रदाय नग्न वास्तविकतेक देखाउस कयलनि। मुदा तैयो, भारतक अपन खास विचार-प्रवाह आ खास अराजक उत्कांति छलैक। 'ओ अपन खास पटरी पर चलैत बुझि पड़ैत छल जेना मोड़पर घुमैत इंजिन चलैत अछि,[1] अँग्रेजीक एक नियमक अनुसार।

(3)

सरोजिनी नाययूक समक्ष अपन काजक लेल प्राच्य आख्यान आ पौराणिक गाथाक एक समृद्ध क्षेत्र छल। मुदा, ओ कखनो वर्णनात्मक पद्य लिखबाक चेष्टा नहि कयलनि। ओ अपन पाठककेँ प्रसन्न आ मुग्ध करबाक हेतु गीतमे अपन खास अनुपम पद्धतिसँ भारतकेँ प्रस्तुत कयलनि। हुनक बारम्बार कविता-पाठ बराबरि श्रोताकेँ हर्षोन्मत्त कऽ दैत छल, विशेषतः लोकगीतपर आधारित हुनक लोकप्रिय गीत, यथा सवारी उठौनिहार कहार।

कखनो काल हम सुनैत छी आम्र किंवा नारिकेर कुँजक मध्य स्थित वस्तीमे बजाओल जाइत ढोलक ढिम-ढिम, अथवा मृदंग आ तबलाक पूर्ण कलायुत थाप। मलाहकेँ अपन-अपन गाममे जगाओल जा रहल छैक आ समुद्रमे जयबाक लेल कहल जा रहल छैक। ओ प्रायः कोनो भोजमे वा विवाहमे लागल छल, आ ढोलक ढिम-ढिम ओकर जागरणक संग स्पंदित अछि···

कारोमण्डलक महल

उठह, भैया लोकनि, उठह, जाग्रत आकाश करय प्रार्थना
प्रभातक प्रकाशसँ,
हवा सूतल अछि उषाक बाहुपाशमे
राति भरि भोकरऽवला नेत्रा जकाँ।
आवह, समटी अपन जाल कछेड़सँ
आ छोड़ि दी खुजल
पकड़वा ले' ज्वारक उछलैत समृद्धिकेँ,
कारण, हम संतान छी सागरक।

ओ तखन अपन गामक खोपड़ीमे निहारैत छथि आ लोरी गवैत छथि—

1. दि गोल्डेन ट्रेजरी ऑफ इंडो एंग्लियन पोएट्री, ले० बी० के० गोकाक, पृ० ३२

मसालाक झोकसँ
धानक खेतसँ
कमल-कुँडक पारसँ
हम अनैत छी तोरा लेल
शीतसँ दमकैत
एतनी टा मोहक सपना !

गामक प्रथा-प्रचलन एतनीटा गीतमे एतेक भव्य रूपेँ चित्रित अछि जे लगले पर्दा-नशीन एकान्त छहरदेबालीक भीतर पहुँचि जाइत छी—

कोइली कुहकल लाक्षाक डारिपर
लिरा ! लिरी ! लिरा ! लिरी !
आबह, बहिना, लगले आबह
बीछत लाक्षा वृक्षक पात ।
लाल ठोप वधूक भालपर
आ पानक लाली मधु अधरपर
मुदा कमलिनी अङुरी आ पयर मे लगैछ
लाल लाल लाधा-तरुक लाल महाउर !

हुनक अधिक काल दोहराओल जायवला उदासीक अछैतो वसंत अनुखन विद्यमान रहैछ आ फूल, रंग, वासंती गंध वा सद्यःस्नात धरती ।

ओ जखन 'अपन सौन्दर्यक प्रशंसा मे राजकुमारी जे बुन्निसाक गीत' गबैत छथि तखन हुनक बिम्बावली भारत वा फारसक अनुरूप रहैत छनि ।

उमर खैयाम आ हुनक बिम्ब सरोजिनी केँ प्रभावित कयलक, मुदा ओ फारसी आ उर्दूक विदुषी छलीह तथा बेर-बेर इस्लामी संसारक बिम्ब प्रयुक्त करैत छलीह ।

मुदा, फारसी, उर्दू अथवा हिन्दी-कविक समान गंभीर दर्शन निर्मित करबाक अपेक्षा सरोजिनी अपन विख्यात काव्य-स्रोतक खजानाक समृद्ध रूपक आ उपमेसँ अपना केँ संतुष्ट रखलनि । लैलीक प्रति रचल हुनक पाँती मे चन्द्रमाक तुलना वर्ण-चिह्न सँ कयल गेल अछि—

आकाशक नील भहुँ पर वर्ण-चिह्न
सोनहुला चान दीप्त अछि पवित्र, गंभीर, उज्ज्वल

ई पंक्ति अपना मे, ततेक महत्त्वपूर्ण अछि जे आश्चर्य होइछ जे सरोजिनी काव्यक एतेक गहींर धरि नहि पहुँचि पवितथि जँ अपन सम्पूर्ण जीवन लिखबेमे व्यतीत कऽ दितथि आ अपन कलाक गहनतर अध्ययने मे लागलि रहितथि ।

(4)

तुक आ लयक सरोजिनीक क्षमता प्रचुर छनि, मुदा ओ निश्चय दूनू पर पूर्ण अधिकार रखैत छथि। हुनक छन्द अनेक छनि, जाहि मे दोष बहुत कम अछि। ओ 'आइआम्बिक' चरणक बीच 'अनापाइस्टिक' चरण राखब अधिक पसिन्न करैत छथि, ओ मधुर लय मे तँ कदाचे कखनो चुकैत छथि। जँ केवल एके गोट दृष्टान्त कें ली तँ देखल जाय—

गीत हमर ओहि नगरक छटा जकर झड़ि गेलैक
भऽ गेलै अति पूर्वे लुप्त रमणीक हास्य आ सौन्दर्य
प्राचीन युद्धक तरुआरि, पुरातन राजाक मुकुट
आ वस्तु सोझ-साझ, सुख-भरल, दुख-भरल।

सरोजिनी कें अपन विशेषणोपर चामत्कारिक अधिकार छनि, पदावलीक रत्नजटित सौन्दर्य, आ हुनक कल्पनाशील स्वभावक सूक्ष्म जादू जे नवीन विचार आ अनुभूतिक जगत कें ओकर विशेषणक चमक मात्र सँ दीप्त करबा दैत अछि।[1]

मुदा, लगैत अछि जे ओ अपन लेखनक सुप्रयुक्त पुरने रूप सँ अतिशय संतुष्ट छलीह, आ यद्यपि ओ अपन खास शैली आ तकनीकक निर्माण कयने छलीह, मुदा ओ अपन चुकिगेल रूपे सँ संतुष्ट छलीह। हुनक विषय मे सेहो किछु अवधिक उपरांत कटल, शुष्क भऽ गेल हुनक अलंकृत विशेषण, जे एक प्रकारें आरम्भिक संस्कृत कवि द्वारा प्रयुक्त अलंकार सँ मिलैत अछि, अनियंत्रित उद्वेलन सँ कोनो दृश्य नायक वा नायिका, आचार वा विचार पर जोर दैत, तथापि अधिक काल उबा देनिहार होइछ एवं आवश्यक विशेषणक आवश्यकताक अपेक्षा केवल छन्द-पूर्तिक लेल रहैछ। ओ बहुत कम भारतक उपाख्यान पर ध्यान देलनि, मुदा जखन कखनो ध्यान देलनि तँ ओकर वीरतापूर्ण गुण कें अतिरंजित कऽ देलक।

जखन 'राइटर्स वर्कशॉप' 'माडर्न इंडियन पोएट्री इन इंगलिश' तैयार कयलक जे एक संकलन[2] थिक, तँ 1947क पूर्वक छौ अपवादात्मक कवि कें समाविष्ट कयलक। ओ लोकनि छथि तरुदत्त, मनमोहन घोष, सरोजिनी नायडू, आर० सी० दत्त, श्री अरविन्द आ हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय। ई कवि लोकनि अंग्रेजी मे लिखलनि, जकरा ओ सभ भारतक संग रहथि ने कि विदेशी, बहुत आत्मीय भारतीय।

उक्त पोथी मे आधुनिक कविगण सँ एहि छौ अपवादात्मक इंडो-एंग्लियन कविक कविता पर टिप्पणी करबाक हेतु कहल गेल छल। मोहाविरा, रचना-

1. स्पीचेज एंड राइटिंग्ज ऑफ सरोजिनी नायडू, तृ० 18
2. पी० लाल द्वारा सम्पादित

प्रकार आ पदावलीक तुलना कयल गेल छल आ पुरातनक पृष्ठभूमि मे नवीन कविक निमित्त एक उद्देश्य-पत्र तैयार कयल गेल छल। मुदा ई तुलना, जँ चर्चित-चवर्ण शब्दक उपयोग करी तँ कहब, 'अरुचिपूर्ण' प्रतीत होइछ। ई रचना-संग्रह विना तुलनोक तैयार भऽ सकैत छल आ हम सरोजिनी कें ई कहैत सुनि सकैत छी, "मुदा हम आधुनिक मापदण्डक अनुसार किएक लिखू? हम तहिना लिखैत छी जेना लिखऽ चाहैत छी।"

पुरान सम्प्रदायक 'आत्मा', 'आत्मिक', 'सूक्ष्मगहनता' वा 'मृत्युविहीन' सन अनावश्यक परिचित शब्दक निन्दा कयल गेल आ हमरा कहल गेल जे ई कवि 'निजी पार्टीक मौज उड़बैत छथि' आ आधुनिक पद्य कें एहि 'दलदली वस्तु' सँ उन्मुक्त रहवाक चाही, आदि। मुदा, जखन पुरान कवि लिखैत छलाह तँ हुनक भाषा ओही 'आत्मप्रेरक' शब्द पर झूलैत छलनि। हुनका एकसरे किएक ने छोड़ि देल जाय आ आधुनिक कविताक संग चलल जाय? जे किछु हो, आँडेन वा एजरा पाउन्डक मूल्यांकन करवा लेल हुनका सभक तुलना क्यो वर्ड्सवर्थ वा टेनिसन सँ तँ नहि करैछ। निश्चये प्रत्येक कवि अपन युग मे अपने युगक हेतु लिखैत अछि। सरोजिनीक युग ओ छलनि जखन ओ अनुभव कयलनि जे पूवक छवि पर प्रकाश केन्द्रित करवाक चाही। हमरा पुनः कहल गेल जे 'कविता अंतरायमान भावावेगक अंतरायमान स्फुरण नहि थिक, मुदा परिमार्जित अर्थपूर्णता मे उत्पन्न संतुलित तनावक अवस्थाक अन्तर्गत एक मृदुल लयात्मक रचना थिक, कविताक हेतु रमणीय विशेषणक फड़फड़ाहटि ओहिना अछि जेना मोजेइकक हेतु भक्षक तेजाब, उन्मत्त त्याग सँ भाषाक जीवनी शक्ति आ लयक शोषण नहि कयल जा सकैक्ष, अपितु ओकर प्रयोग यथार्थ ढंग सँ, उदात्ततापूर्वक आ कोनो उद्देश्यक भावना सँ कयल जयवाक चाही।"

मुदा, जीवैत लोक मृतक कें आदेश नहि दऽ सकैछ, आ वास्तविकता तँ ई अछि जे प्राचीन काव्य एहि तथाकथित दोष सँ उल्लसित छल। प्राच्य कविता आ ग्रीक कविता सेहो उपमा, रूपक आ विशेषण सँ भरल अछि।

कविक हेतु तानशाहीपूर्ण 'प्रयोजन'क वाद, छौ पुरान कविगणक सोझ-सोझ आलोचना सरणीवद्ध कयल गेल। श्री अरविन्द 'ऐश्वर्ययुक्त रहस्य' छथि, सरोजिनी नायडूक 'भगभोगनी' अति प्रसिद्ध अछि, आर० सी० दत्तक 'हेक्सामीटर' स्वीकृत आ प्रतिष्ठित भेल, किएक तँ ओ 'एवरीमेंस साइबेरी एडीशन' मे प्रकाशित भेल छल। मुदा, हुनक शैली अर्थपूर्णता सँ विहीन छनि आ 'ओझरायल उटपटांग' छनि। एहि सभ कविक साधारणीकरण करैत हम ई सिखैत छी जे हुनका लोकनिक उद्देश्य 'भारत मे सफलतापूर्वक यूरोप कें पुनरुत्पादित' करव छल, आदि। मुदा, 'आधुनिकीक ऊपर अनेक दोष आरोपित कयल जा सकैत अछि जँ मृतक जीवित भऽ सकितथि आ हुनका 'तुलना आ विरोधाभास'क अनुमति देल

जइतनि। ओ पुछताह, 'नवकविता अछि ककरा लेल ?' ई एतेक गूढ़ आ अश्लील प्रश्न किएक अछि। हुनका कहल जयतनि जे गूढ़ता मे शक्ति छैक आ प्रत्येक शब्द मे सत्य ओ अंतरंगता छैक। संगहि, आधुनिक कवि अपन कविता मे अपन व्यक्तित्व आ अपन युगक समस्या रखैत अछि। ओ 'काव्य आ भाषाक अग्रिम विकास केँ प्रभावित करैत अछि।' आधुनिक कवि हमरा सँ गप्प करैछ आ कविताक नियम सँ आबद्ध नहि रहैछ। ओ तरुणतर कविक विधिक अपेक्षा करैत अछि, मुदा अपन पद्य केँ उड़ैत विचार आ दृश्य पर झुलबैत नहि लिखैछ। ओ अराजक भय, अनिश्चितता आ असुरक्षाक छोर यथार्थवादी युग मे रहैत अछि। 'माडर्न इंडियन पोएट्री इन इंगलिश' मे विश्लेषित छौ इंडो-एंग्लियन कवि पूर्ण रूप सँ भिन्न समय मे रहैत छलाह आ हमरा लोकनि हुनका सभ केँ धन्यवाद देने बिना नहि रहि सकैत छियनि, जे लोकनि भारत पर एक अमिट चिह्न छोड़ि देलनि अछि।

(5)

सरोजिनीक सभ उपमा स्वप्न-जगतक छनि जे प्रायः उदास छनि। अतीत आ वर्तमानक अपन आरम्भिक कविता मे सँ एक मे सरोजिनी अतीतक तुलना ओहि पहाड़ी गुफा सँ करैत छथि जतऽ तपस्वी-स्मृति रहैछ। हुनक अतीत पर नजरि फेरने शीशमहले बेसी देखाइ पड़ैत अछि तपस्वी-गुफाक अपेक्षा, कारण जे जखन ओ एहि पद्यक रचना कयने रहथि तखन कन्ये छलीह। वर्तमान आत्मा थिक जे अस्पष्ट सघन आशा आ संशयक वेदना मे ठाढ़ अछि, आ भविष्य अछि 'विचित्र भाग्यवती बधूक' समान। एहि तरहेँ, जखन ओ किशोरिए छलीह तखने मृत स्वप्नक विषय मे गबैत छथि—प्रेमपूर्ण स्वप्न केँ डाहि देबाक चाही, किएक तँ ओ मरि चुकल अछि। जखन ओ पद्य लिखैत छथि तखन ऊबल बुझि पड़ैत छथि। ओ एहि जगत सँ पड़ाय चाहैत छथि, मुदा 'संसारक युद्ध' अपरिहार्य अछि अपन भीड़क संघर्षक संग। वेदना आ मृत स्वप्नक ई संकेत सँ स्पष्ट होइछ जे सरोजिनी नायडूक दोहरा व्यक्तित्व छलनि। पहिल, संसारक आनन्दमय उपभोगक, कारण जे ओ प्रसन्नचित्त छलीह आ कम-सँ-कम वाह्य रूप मे जिनगीक पूर्ण आनन्द लैत छलीह, दोसर एक उदास रूमानी अन्वेषणक एहन वस्तुक हेतु जे प्रायः ओ कहियो प्राप्त नहि कऽ सकलीह आ जे अन्तर्मुखी काल्पनिक विचार अथवा आदर्शवादी स्वप्न मे समा गेलनि। एहन भान होइछ जे अस्वस्थता सतत हुनक पाछाँ पड़ल छलनि कारण ओकरा हुनक क्लेशित आ दुर्बल शरीर पर तखने ध्यान चल गेलैक जखन ओ किशोरावस्था मे विलेंत मे छलीह। मुदा ओ सदा गीतक दुख सँ जीवनक दुख केँ जितबा लेल समर्थ रहथि। 'इन दि फॉरेस्ट' एहि आरम्भिक कविता दिस इंगित करैत 1902 मे 'इंडियन सोशल रिफार्मर' कहलक जे ओ काव्य-सौन्दर्य सँ पूर्ण

छलीह आ लगैत अछि जे कम-सँ-कम तरुदत्तक एक उत्तराधिकारिणी भेटि गेलीह अछि आ ओहो एहन 'जकर कविता कुम्हलायल कलीक अपेक्षा अधिक ऊँच उड़ान भरि सकैत अछि। एहि पंक्ति मे मरड़ाइत करुणा ओकरे भऽ सकैत छैक जकरा प्रकृति दिव्य शक्ति आ दर्शन प्रदान कयलकै अछि।' जखन कि ई शब्द कविक गुण कें अतिरंजित करैत अछि, तथापि सरोजिनीक कविता मे अद्‌भुत समाधि-सन गुण भेटैत अछि, रहस्यवादी परलोकत्व आ अलौकिक गुण—किन्तु ई अनवरत नहि अछि, ई यत्र-तत्र पाँतीक बीच सँ झलकि जाइछ—उत्तमताक वैगनी धब्बा, जकरा दोसर अधिक पारम्परिक आ हल्लुक पाँती हटा देबऽ चाहैत अछि।

'कन्नक रहस्यमय ज्ञान'क हुनक अनुन्धान मे कोनाटा क्लेश वा संघर्ष नहि छोड़ल जयबाक अछि। ईश्वर हुनक प्रार्थनाक उत्तर दैत छथिन आ हुनका 'समग्र भावनामय उल्लास आ निराशा' मे दीक्षित करताह। ओ हर्ष आ यश प्रेम आ क्लेशक अनुभव करतीह। मुदा, आत्माक ई दोहरापन सर्वदा सरोजिनी कें वास्तविक रहस्यवादी बनबा सँ पाछाँ खीचि लैत छनि—ओ स्वप्न-क्षेत्र मे उड़ैत छथि, से चाहे दिव्य हो वा नहि, आ फेर जीवन मे आपस आबि जाइत छथि ओकर मर्त्य-क्लेश आ उल्लासक अनुभव करैत। यैह दोहरापन सरोजिनी कें की तँ सर्वदा हुनक भीतर मानू लहकैत अलौकिक ज्ञानक हेतु कामना अथवा प्यासक आगिक कारण कें तकबा योग्य अति गंभीर व्यक्तित्व प्रदान करैत छनि अथवा फेर हुनक अपन सर्वदा झड़ऽवला शब्दक मदति सँ सम्पृक्त गीतक एक साधारण गायिकेक रूप मे हुनका अप्रसारित करबा दैछ।

'शाश्वत शांति कें प्रणाम' मे ई दोहरापन बनल अछि, डर, घृणा आ 'कठोर भाग्य' एक दिस अछि आ दोसर दिस सरोजिनी सोन्माद कहि रहलि छथि—

मुदा हम, हे मधुर आत्मा, प्रसन्न छी जे जन्म लेल
जखन अन्नक ऊपर उठैत छत सँ
देखै छी सोनहुला पंछी तोहर प्रभातक।

एतऽ ओ रवीन्द्रनाथ टैगोरक समान छथि जे अनन्तता कें एक क्षणक चमक मे प्रत्यक्ष देखलनि, ब्लैकक समान छथि जे एक घंटा मे अनन्तता कें देखलनि—मुदा सरोजिनी सर्वदा बहुत शीघ्र एहि संसार आ ओकर काज धंधा मे आपस आबि जाइत छथि।

प्रायः एही दोहरापनक कारण सरोजिनी कें महत्तम कविगणक बीच स्थान नहि भेटि सकल छनि। हुनका मे रहस्यवादी अथवा लोकप्रसिद्ध कविक एक लक्ष्य साधना नहि छनि, मुदा तैयो ओ अनेक वर्ष सँ जीवित छथि।

(6)

अपन विचार कें परिपक्व होयबा सँ पूर्व मरि जायवाली, मुदा तैयो भव्य आ अमर पद्यक रचयित्री तरुदत्त तथा जनिका लग लिखवा हेतु पूरा जीवन छलनि, मुदा जे कतिपय सुन्दर मृत्युवती कविता लिखिकऽ अंटकि गेलीह से सरोजिनीक बीच समता एतवे मात्र अछि जे दूनू भारतीय महिला छलीह आ दूनू लिखबाक माध्यम अंग्रेजी कें चुनलनि। तरुदत्तक त्रासदी एहि बात मे अछि जे जँ ओ अधिक दिन जीवित रहितथि तँ की भऽ जाइत आ सरोजिनीक एहि बात मे अछि जे ओ 38 वर्षक वयस मे अपन लेखन रोकि देलनि आ अपना कें राजनीति तथा सार्वजनिक भाषण मे डुवा देलनि। एक दिस तरुदत्त काव्यमूल्यक सर्वदा आरोहमान मानदण्ड पर पहुँचबाक अनन्त संभावना कें नकारल जयबाक धारणा छोड़ैत छथि, कारण ओ अंग्रेजी, फ्रेंच आ संस्कृतक नीक ज्ञान रखैत छलीह आ हुनका लग वास्तविक कविक आत्मा छलनि, तँ दोसर दिस हमरा ई धारणा बनैत अछि जे सरोजिनी 1917 मे अपन संपृक्त बिन्दु पर पहुँचि गेलि छलीह, की तँ आन व्यस्तताक कारणें कि स्वयं ई बुझिकऽ जे ओ अपन पुरान शैली सँ बाहर काव्यक नव सम्प्रदाय मे डेग नहि राखि सकैत छथि अथवा फेर हुनक काव्य देवी हुनका त्यागि देलथिन आ हुनका प्रेरणाविहीन छोड़ि देलथिन। आगाँ हुनक विराम एहू कारणें भऽ सकैछ जे हुनक कविता सर्वदा किशोरीत्व लेने छल आ बाद मे लगभग चालीसक वयस मे ओ ई अनुभव कयलनि जे आब हुनका एहि गीतात्मक उद्‌गार कें छोड़ि देबाक चाहियनि आ किछु अधिक ठोस वस्तु पर डेग बढ़यबाक चाहियनि जेना ओ वास्तव मे करबो कयलनि।

एहि दूनू कवयित्रीक बीच दोसर समता ई अछि जे एडमंड गॉस एहि दूनूक प्रस्तोता छलाह। दूनूक गॉस प्रस्तावना लिखने छलाह। सरोजिनी ई स्वीकार करैत छथि जे गॉस सभ सँ पहिने हुनका काव्यक सोनहुला वेहरिक वाट देखौलथिन तथा तरुदत्तक विषय मे गॉसक कहब छनि, "जखन हमर देशक साहित्यक इतिहास लिखल जायत तखन ओहिमे अवश्ये गीतक एहि भजनशील विदेशी कुसुम-कलीक हेतु एक पृष्ठ समर्पित रहत।"

तरु आ सरोजिनी दूनू सरल छथि, मुदा तरु अधिक स्वाभाविक आ संगहि अधिक सुपक्व, सरोजिनी पारम्परिक आ अत्यधिक गानमयी। एहि जगत कें तरु अपन निजी दुख आ आनन्द कहबाक चेष्टा नहि कयलनि जखन कि सरोजिनी अधिक विषयात्मक कवि होयबाक अछैतो कयलनि। 'दि केसुआरीना ट्री' आ अपन पिताक प्रति रचित कविता मे तरु अपन अन्तर्भाव कें अवश्य व्यक्त कयने छथि, मुदा तैयो ओ कदाचिते कहियो अपन लघु उदास जीवनक पीड़ा आ त्रासदीक उल्लेख कयने छथि।

दूनू लेखिकाक प्रकृति-चित्रण फराक-फराक अछि। उदाहरणार्थ तरुक वृक्ष-वर्णन सरोजिनी सँ एकदम विपरीत छनि जे सर्वदा ई सोचैत-सन लगैत छथि, प्रायः गाँसक परामर्शक कारण जे हुनका द्वारा वर्णित सभ किछु भारतीये होयबाक चाही। तरुक लेल वृक्ष स्वयं भारतीय थिक—ओ वृक्ष जकरा ओ चाहैत छथि। सरोजिनीक हेतु वृक्षक वर्णन प्राच्ये पृष्ठभूमि मे होयबाक चाही।

तरु कहलनि :

आर किछु नहि भऽ सकैछ सुन्दरतर, झाँझ सँ
पूर्वाभिमुख बाँसक, जखन चान
ओकर दोग सँ हुलकी दैत अछि, आ श्वेत कमल
बनैत अछि चानीक कटोरी। बेहोश क्यो भऽ जायत
तखन पीविकऽ सौन्दर्य केँ, अथक देखिते-देखिते रहि जायत
आदिम स्वर्ग केँ, विस्मय सँ।

अपन 'चम्पक प्रसून' मे सरोजिनीक उक्ति छनि—

हे कली, पुष्पराग-वत हस्तिदन्त-वन हे कली
हे कली, जटित मरकत-समान,
लोभा देनिहार अपन माधुर्य सँ
जंगल, खेत, आ मैदान केँ,
तोहर भाग्य यैह, चंचल छविक क्षणमें
सिकुड़ब, समटब, मौलायब।

एक समालोचक, जनिकासँ हमर मतैक्य नहि अछि, कहैत छथि जे सरोजिनीक लेल प्रकृति ओहिना अछि जेना टेनिसन लेल छलनि—मानवीय भावक चित्रणक पृष्ठभूमि। 'मानव-स्वभावकें बुझवा वा व्यक्त करवामें सरोजिनी कहियो उत्तमता नहि प्राप्त कयलनि। ओ सदा फूलक कली आ पक्षीक गान आ धार्मिक प्रतीकक स्वप्न-सन अस्पष्टतासँ आवृत अछि। विश्वक सुख आ संघर्षक बीच उत्पन्न व्यक्तिक वहुविध पक्षसँ युक्त जीवित मनुष्यक रूपमें मानवीय जीव प्रतिष्ठित नहि अछि। ओ अलंकृत विशेषण आ उपमासँ आच्छादित बुदबुदायमान कल्पना-चित्र अछि। आ तैयो ई क्षण स्थायी पद्य संतोषजनक, उन्मादक, रहस्यवादी, आदर्शवादी अछि।

(7)

सरोजिनी नायडूक दर्शन हुनक भाषामे अधिक स्पष्ट अछि जे सदा स्मरणीय भाषण-कलाक श्रेष्ठ कृति थिक आ जिनका हमरालोकनिमेसँ ओ सदा स्मरण रखताह जनिका हुनका सुनबाक सौभाग्य प्राप्त भेल छनि। यद्यपि हुनकापर प्रायः ई दोष मढ़ल जाइत छल जे हुनक भाषा सुमधुर, अलंकृत, प्रवाहमयी छल आ श्रोताकें

उन्मादक स्वप्नजगतमें घीचिकऽ लऽ जाइत छल, हमरा तँ सदा यैह प्रतीत भेल अछि जे वास्तवमें हुनक शब्दमें पर्याप्त तत्त्व छलनि आ संगहि ओ सर्वदा हमरा-लोकनिक अनुकरण लेल एक आदर्श सोझाँमें रखलनि। हमरा पहुँचबाक लेल चन्द्रमा छल, आकाश हमर सीमा छल, आ हमरा नीक आ संयुक्त राष्ट्रक लेल, आ आर आगाँ बढ़िकऽ, संयुक्त जगतक लेल काज करबाक छल। भारतक हेतु सांकेतिक शब्द होयबाक चाही 'एकता'। संगहि अनेको सुधार कयल जयबाक छल, स्वाधीनता प्राप्त करबाक छल, शान्ति पुनःस्थापित करबाक छल आ अन्ततः सभ जाति, धर्म आ सम्प्रदायपर प्रेम आ दयाक वृष्टि करबाक छल। हमरा मन अछि, सरोजिनी नायडूक कोनो भाषण सुनिकऽ हम बिना ई बुझने नहि धुरलहुँ जे हमर इहलौकिक जीवनमे मानू पाँखि भऽ गेल हो जे हमर उत्साह आ कठिन श्रमक संग-संग बढ़ल जायत। हुनक यैह अन्तिम जीवनोद्देश्य छलनि—बिना आराम आ अन्तरालक, मानव-कल्याणक निमित्त कठिन श्रम करब। आशा आ आभाक एक नव संसारक निर्माण करबे प्रत्येक स्त्री-पुरुषक कर्तव्यक छलैक।

एहि प्रकार, ई निर्भय स्त्री शालीन एकाकीपनमे जीवैत रहलीह, काज करैत रहलीह आ स्वर्गक यात्रापर चल गेलीह—अन्त धरि अपन सनातन स्वप्नकें साकार करबाक प्रयास करैत। हमरा रहबाक चाही' "हिंसामें नहि, क्रोध में नहि, प्रतिशोधमें नहि, अपितु पूर्वक यथार्थ सन्तान जकाँ, साहसमे धीर, अन्त धरि सहिष्णु, हम आत्माक महान सेनाक निर्माण करी, आ जेना हरिश्चन्द्रक आत्मा दुर्दशा-पर-दुर्दशाक बाद अपन कर्तव्य-परीक्षाक बाद विजय प्राप्त कयलक, तहिना अपन पीढ़ीमे संसारक समक्ष हम ई सिद्ध कऽ दी जे आत्मा स्थायी थिक, आत्मा अमर थिक, आ हम भावी पीढ़ीक योग्य पूर्वज थिकहुँ, कारण जे हम सत्यक वास्तविक परिचारक आ संरक्षक छी।"

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1. सांग्ज : अघोरनाथ चट्टोपाध्याय द्वारा निजी रुपसँ प्रकाशित, 1986।
2. दि गोल्डन थ्रैशोल्ड : डब्ल्यू०, हीनमान, लन्दन, 1905।
3. दि वर्ड आफ टाइम : विलियम हीनमान, लन्दन, 1912।
4. दि ब्रोकन विंग : विलियम हीनमान, लन्दन, 1917।
5. दि सेप्टर्ड फ्लूट : जोसेफ आसलैन्डरक प्रत्तावना सहित, डाँड मीड एण्ड कम्पनी, 1937।
6. दि सेप्टर्ड फ्लूट : किताविस्तान, भारत मे प्रथमतः प्रकाशित 1943।
7. दि गिफ्ट आफ इण्डिया : हैदराबाद, लेडीज वार रिलीफ एसोसियेशनक प्रतिवेदन सँ पुनर्मुद्रित 1914-15।
8. गोपालकृष्ण गोखले : बाम्बे क्रांनिकल मे प्रथमतः प्रकाशित पुस्तिका।
9. दि सोल आफ इण्डिया : प्रथम संस्करण, हैदराबाद (दक्षिण) 1917, द्वितीय संस्करण, दि क्रैम्ब्रिज प्रेस, मद्रास, 1919।

   उपर्युक्त शीर्षक सरोजिनी नायडू द्वारा लिखित अछि।
10. स्पीचेज एण्ड राइटिंग्ज आफ सरोजिनी नायडू : जी० ए० नटेशन एण्ड कंपनी मद्रास, 2 र, व 3 र संस्करण।
11. ग्रेट वीमैन आफ इण्डिया : कमला सत्थियनाधन लांगमैन्स, इण्डियन रीडिंग बुक्स 1930।
12. लाफ एण्ड माइसेल्फ डान अप्रोचिंग नून : ले० हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, भाग 1, नालन्दा पब्लिकेशन्स, बम्बइ।
13. दि लेडीज मैगजीन : 1901-1917, सं० के० सत्थियनाधन।
14. मैन एंड वीमैन आफ इण्डिया : मइ 1906।
15. सरोजिनी नायडू : ए० झा, एक निजी प्रकाशन।

16. इण्डियन राईटिंग इन इंग्लिश: के० आर० श्रीनिवास आयंगर, एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1962।

17. दि निरासां आफ इण्डिया : जेम्स एच० कजिन्स, गणेश एण्ड कम्पनी, मद्रास।

18. वीमैन आफ इण्डिया : मु० सं० तारा अलीबेग, पब्लिकेशन्स डिवीजन 1958

19. वीमैन बिहाइण्ड महात्मा गांधी : एलीनर मार्टन, मैक्स रीनहार्ड, लन्दन, 1954।

20. ए बंच आफ ओल्ड लैटर्स : एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1958।

21. माइ डेज विद गांधी : निर्मल के० बोस, निशान, 1953।

22. मिशन विद माउण्टबैटन : एलन कैंपबैल जान्सन।

23. जैस्टिंग पाइलेट : एल्डस हक्सले, चैटो एण्ड विंडस, 1931।

24. दि नैकेड फकीर : रांबर्ट बर्नेज, विक्टर गोलॉज, लन्दन, 1954।

25. माइ गांधी : ले० जॉन हेन्स होम्स, एलन एण्ड अनविन, लन्दन, 1954।

26. दि अवेकनिंग आफ इण्डियन वीमैनहुड : मार्गरेट ई० वा जैन्स गणेश, मद्रास 1922।

27. यंग इण्डिया : अप्रैल, 11, 1929।

28. दि लीडर : फरवरी 14, 1948।

29. दि गोल्डन ट्रेजरी आफ इण्डो-एंग्लियन पोएट्री : 1829-1865, सं० वी० के० गोकाक, साहित्य अकादेमी।

30. इण्डो-एंग्लिश पोएट्री : पी० सी० कोटोकी, प्रकाशन विभाग, गौहाटी विश्व-विद्यालय, 1969।

31. इण्डो-इंग्लिश लिट्रेचर इन दि नाइन्टीन्थ सैंचुरी : जांन बी० अत्फान्सी करकल दि लिटरेरी हाफ-इयरली, मैसूर विश्वविद्यालय।

32. क्रिटिकल ऐसेज आन इण्डियन राइटिंग्स इन इंग्लिश : सं० एम० के० नायर एस० के० देसाई, जी० एस० अमुर, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड, 1968।

33. दि स्वान एण्ड दि ईगल : बी० सी० डी० नरसिंहैया, इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ एडवांस्ड स्टडीज, शिमला, 1969।

34. दि टू-फोल्ड वाइस : ऐसेज आंन् इंडियन राइटिंग इन इंग्लिश, सं० डी० वी० के० राघवाचार्यलु, नवोदय पब्लिशर्स।

35. एशियन रिलेशन्स : रिपोर्ट आफ दि प्रोसीडिंग्ज एंड डॉक्यूमैंट आफ दि फर्स्ट एशियन रिलेशन्स कान्फ्रेंस : नई दिल्ली, 1947, एशियन रिलेशन्स आर्ग-

नाइजेशन, नई दिल्ली, 1948।

36. दि आक्सफोर्ड बुक आफ इंग्लिश मिस्टिक वर्स : क्लैरेंडन प्रेस, आक्सफोर्ड, 1917।

37. दि हिस्ट्री आफ दि इण्डियन नेशनल कांग्रेस : पद्याभि सीतारामैय्या, पद्म—पब्लिकेशन्स, वम्बइ, 1946-47।

38. माडर्न इण्डियन पोएट्री इन इंग्लिश, एंथालॉजी एंड क्रेजे : सं० पी० लाल, राइटर्स वर्कशॉप, कलकत्ता।

39. सरोजिनी नायडू : पद्मिनी सेनगुप्त, एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1966।

□□

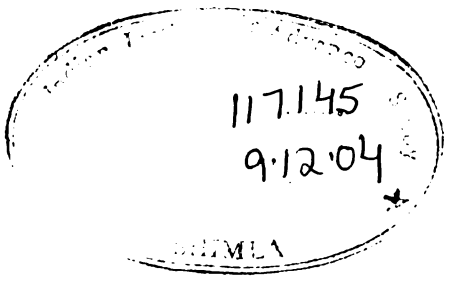

सरोजिनी नायडू (1879-1949) अंग्रेजी काव्यक इतिहास मे अपना लेल विशिष्ट स्थान बना लेने छथि, अंग्रेजी मे लिखलनिहारि भारतीय महिलाक रूप मे नहि, अपितु एहन महिलाक रूप मे जकरा लेल अंग्रेजी अभिव्यक्तिक सहज माध्यम छल। तथापि, सरोजिनी भारतक हेतु विदेशी नहि छलीह आ ओ अपन देशक विषय मे एक एहन विशुद्ध भारतीय, राष्ट्रभक्त कन्याक लेखनी सँ लिखैत छलीह जे हुनक राष्ट्रक अंतरंग अंग छल।

ब्रह्मदर्शन, सहिष्णुता आ मानवताक प्रति प्रेमक सशक्त पृष्ठभूमि सँ युक्त ओ हैदराबादक हिन्दू-मुस्लिम संरचनाक शिशु छलीह। स्वयं अंग्रेजी शिक्षा-पद्धतिक उपज होइतो ओ अराष्ट्रीय भारतीय तरुणक पश्चिमक प्रति ओकर अन्ध मानसिक दासताक हेतु, भर्त्सना करैत छलीह। तथापि, हुनका वाल्यावस्थे सँ पूब-पश्चिमक साहचर्य मे विश्वास रखबाक शिक्षा प्रदान कयल गेल छलनि।

सरोजिनी सदा हमरा स्मरण करबैत छलीह जे हमरा चन्द्रमा धरि पहुँचबाक अछि, आकाश हमर सीमा थिक आ हमरा संयुक्त संसारक हितक हेतु काज करबाक अछि।

'सरोजिनी कें उचिते 'भारतक बुलबुल' कहल जाइत छनि, जनिक मधुर स्वर आइयो हुनका लोकनिक कान मे गुंजैत छनि जनिका हुनक प्रवाहपूर्ण भाषण मे एक्कोटा सुनबाक अवसर भेटल छल।

ई पुस्तिका श्रीमती पद्मिनी सेनगुप्त लिखलनि अछि जनिका अपन स्वनामधन्य मायक सखीक रूप मे सरोजिनी सँ [illegible] सामान्य भारतीय पाठकगण कें 'भार[illegible] कयल गेल अछि जे सरोजिनी नायडू [illegible] जनैत होयताह, मुदा कविक रूप मे ओत[illegible]

Library IIAS, Shimla
MT 923.254 N 143 S
00117145

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00